एजाज़ुल मसीह

(मसीह का चमत्कार)

EJAZUL MASIH

लेखक
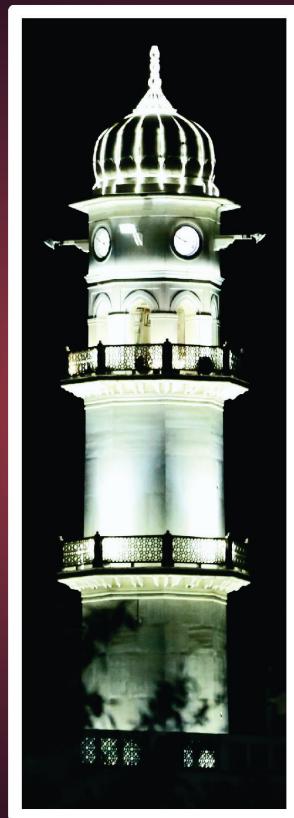
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

एजाज़ुल मसीह
(मसीह का चमत्कार)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : एजाज़ुल मसीह (मसीह का चमत्कार)
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक व टाईप : मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य,
मुरब्बी सिलसिला (एम.ए. संस्कृत)
सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2020 ई०
संख्या : 500
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : Ejazul Masih
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator, Type : Muhammad Naseer ul Haque Acharya,
Murabbi Silsila, (M.A. Sanskrit)
Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition : 1st Edition (Hindi) September 2020
Quantity : 500
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'एजाज़ुल मसीह' का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य, मुरब्बी सिलसिला ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो

---

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

एजाज़ुल मसीह

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 20 जुलाई 1900 ई. को सत्य एवं झूठ के मध्य पृथक्करण के लिए लाहौर में एक जल्सा करके एवं पर्चों के द्वारा पवित्र क़ुर्आन की कोई सूरह निकाल कर दुआ के पश्चात चालीस आयतों का यथार्थ ज्ञान एवं सुरुचिपूर्ण स्पष्ट अरबी भाषा में सात घंटों के भीतर लिखने के लिए समस्त विद्वानों को सामान्यत: और पीर महर अली शाह को विशेषत: आमंत्रित किया था। परन्तु किसी ने इस चैलेंज को स्वीकार न किया और न ही पीर महर अली शाह साहिब ने इस अद्भुत मुक़ाबले अर्थात क़ुर्आनी आयतों की सुरुचिपूर्ण एवं स्पष्ट अरबी भाषा में व्याख्या लिखने के आमन्त्रण को स्वीकार किया था। किन्तु बिना सूचना दिए लाहौर पहुँच कर एवं शास्त्रार्थ की शर्तें लगा कर उसने लोगों को यह धोका दिया था कि मानो वह मुक़ाबले पर तफ़सीर लिखने के लिए तैयार है। जब उनके अनुयायियों ने प्रत्येक स्थान पर उनकी झूठी विजय का ढोल बजाया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गंदी गालियाँ दीं और यह मशहूर किया कि पीर साहिब तो सच्चे हृदय के साथ अरबी में तफ़सीर लिखने के लिए तैयार हो गए थे और इसी नियत से लाहौर आए थे किन्तु आमन्त्रण देने वाले स्वयं लाहौर न पहुंचे और भाग गए, इसलिए आपने 15 दिसम्बर 1900 ई. निम्न अरबईन नम्बर 4 में ख़ुदाई आदेशों के अंतर्गत तफ़सीर लिखने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया आपने फ़रमाया-

> "यदि पीर जी साहिब वास्तव में सरस एवं सुबोध अरबी तफ़सीर पर सक्षम हैं और कोई छल उन्होंने नहीं किया तो अब भी वही सक्षमता उनमें अवश्य मौजूद होगी।
>
> अत: मैं उनको ख़ुदा तआला की सौगंध देता हूँ कि मेरे इस निवेदन को इस रंग में पूरा कर दें कि मेरे दावे के खंडन

के सम्बन्ध में सुरुचिपूर्ण एवं स्पष्ट अरबी भाषा में सूरह फ़ातिहा की व्याख्या लिखें जो चार भागों से कम न हो और मैं इसी सूरह की तफ़सीर अल्लाह तआला के सामर्थ्य एवं सक्षमता से अपने दावे की सत्यता के संबंध में सुरुचिपूर्ण एवं स्पष्ट अरबी में लिखुंगा। उन्हें आज्ञा है कि वह इस तफ़सीर में समस्त संसार के विद्वानों की सहायता ले लें। अरब के शिष्ट एवं वाक्ट विद्वानों को आमंत्रित कर लें। लाहौर एवं अन्य देशों के अरबी ज्ञाता प्रोफ़ेसरों को भी सहायता के लिए आमंत्रित कर लें। 15 दिसम्बर 1900 ई. से सत्तर दिनों तक इस कार्य के लिए हम दोनों को मोहलत है एक दिन भी अधिक न होगा। यदि तुलनात्मक तफ़सीर लिखने के पश्चात अरब के तीन प्रख्यात विद्वान उनकी तफ़सीर को सुरुचिपूर्ण एवं स्पष्ट घोषित कर दें और ज्ञान से परिपूर्ण विचार करें तो मैं पाँच सौ रुपया नक़द उनको दूंगा और अपनी समस्त पुस्तकों को जला दूंगा और उनके हाथ पर बैअत कर लूँगा और यदि मामला विपरीत निकला या इस अवधि तक अर्थात सत्तर दिनों तक वह कुछ भी न लिख सके तो मुझे ऐसे लोगों से बैअत लेने की भी आवश्यकता नहीं और न रुपयों की इच्छा। केवल यही दिखलाऊंगा कि किस प्रकार उन्होंने पीर कहलाकर शर्म योग्य झूठ बोला।

(अरबईन नम्बर 4 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 हाशिया पृष्ठ 449-450)

अत: फ़रमाया-

"हम उनको अनुमति देते हैं कि वह बेशक अपनी सहायता के लिए मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी और मुहम्मद हसन भईं इत्यादि को बुला लें बल्कि अधिकार रखते हैं कि कुछ लोभ देकर दो चार अरब के विद्वान भी आमंत्रित कर लें। दोनों पक्षों की तफ़सीर चार भागों

से कम नहीं होनी चाहिए.... और यदि निर्धारित समय सीमा तक अर्थात 15 दिसम्बर 1900 ई. से 25 फ़रवरी 1901 ई. तक जो सत्तर दिन हैं पक्षों में से कोई पक्ष तफ़सीर फ़ातिहा छाप कर प्रकाशित न करे और यह दिन गुज़र जाएँ तो वह झूठा समझा जाएगा और उसके झूठे होने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहेगी।

(अरबईन नम्बर 4 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17, पृष्ठ 484 उर्दू एडिशन)

इस ऐलान के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की अनुकम्पा तथा उसके विशेष समर्थन से निर्धारित अवधि के भीतर 23 फ़रवरी 1901 ई० को ''एजाज़ुल मसीह'' के नाम से सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में सूरः फ़ातिहा की तफ़सीर (व्याख्या) लिखकर प्रकाशित कर दी। और इस व्याख्या के लिखने का उद्देश्य यह वर्णन किया कि ताकि पीर मेहर अली शाह साहिब का झूठ प्रकट हो कि वह पवित्र क़ुरआन का ज्ञान रखता है और अध्यात्म ज्ञान के उद्गम से पीने वाला तथा चमत्कारों का दिखाने वाला है। परंतु पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी को अपने घर बैठकर भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले पर व्याख्या लिखने का साहस न हुआ और अपनी ख़ामोशी से अपनी पराजय को स्वीकार करते हुए अपने अज्ञानी तथा झूठा होने पर सत्यापन की मुहर लगा दी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के इशारे से अपनी इस व्याख्या के बारे में लिखा कि अगर उनके उलमा और हुकमा और फुकहा और उनके बाप और बेटे मिलकर और एक दूसरे के सहायक होकर इतने कम समय में इस व्याख्या का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहें तो वे कदापि प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे। (पृष्ठ 46 इसी पुस्तक का) और फरमाया कि:-

(अनुवाद) मैंने इस पुस्तक के लिए दुआ की कि अल्लाह तआला इसे उलमा के लिए चमत्कार बनाए और कोई साहित्यकार इसका उदाहरण प्रस्तुत करने पर समर्थ न हो और उनको लिखने

का सामर्थ्य न मिले और मेरी यह दुआ स्वीकार हो गई और अल्लाह तआला ने मुझे ख़ुशख़बरी दी और कहा- कि आसमान से हम उसे रोक देंगे और मैं समझा कि इसमें संकेत है कि शत्रु इसका उदाहरण प्रस्तुत करने पर समर्थ न होंगे।

(एजाज़ुल मसीह, पृष्ठ- 46)

अत: इस महान भविष्यवाणी के अनुसार न पीर गोलड़वी को और न अरब तथा अन्य देशों के किसी और साहित्यकार विद्वान को इसका उदाहरण लिखने का साहस हुआ। इसी प्रकार इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर आप ने चुनौती के तौर पर फरमाया कि यह एक लाजवाब पुस्तक है ...कि जो व्यक्ति भी गुस्से में आकर इस पुस्तक का उत्तर लिखने के लिए तैयार होगा वह लज्जित होगा और हसरत के साथ उसका अंत होगा।

अत: एक मौलवी मोहम्मद हसन फैज़ी, निवासी भीं, तहसील चकवाल, जनपद जह्लुम जो कि शाही मस्जिद लाहौर में स्थित मदरसा नोमानिया के शिक्षक हैं, ने लोगों में ऐलान किया कि मैं इसका उत्तर लिखता हूं। अभी उसने उत्तर के लिए एजाज़ुल मसीह पर नोट ही लिखे थे और एक स्थान पर 'लानतुल्लाहे अलल काज़िबीन' (अर्थात झूठों पर ख़ुदा की लानत हो) भी लिख दिया तो उसके बाद एक सप्ताह भी न बीता कि वह शीघ्र ही मर गया। इस पुस्तक के द्वारा ख़ुदा तआला के कई निशान प्रकट हुए जिनका विवरण 'नुज़ूलुल मसीह' पुस्तक में दर्ज है।

ٹائٹل بار اول

من سرّه ان يقرء الفاتحة مع معارفها المخفية ۔ وحقائقها
الروحانية ۔ فليقرء تفسيرنا هذا بالتدبر وصحة النية
ولا يحسر عن ساعده للمقابلة ۔ فانه كتاب ليس له
جواب ۔ ومن قام للجواب وتنمّر ۔ فسوف يرى انه
تندم وتذمّر ۔ فطوبى لمن حمّن ما اصطفيناه ۔ واخذ
ما اعطيناه ۔ وما كان كالذى لبس الصفاقة ۔ وخلع
الصداقة ۔ وهذا ردّ على الذين يجهّلوننا ويصبغون
التلبيس ۔ ويقولون ليس عندهم من علم بل عُصبة
من مفاليس ۔ وانّا اقررنا بانّ كتبنا كلّها من حول الله
ذى الجلال ۔ وما نحن الا كالجهال ۔ وانّ كتابى
هذا بليغ ۔ وفصيح ومليح ۔

وانى

سمّيته

اِعجاز المسِيح

وقد طُبع

فى مطبع ضياء الاسلام فى سبعين يوما من شهر الصيام وكان من الهجرة سنة ۱۳۱۸
ومن شهر النصارى ۲۰ فروری سنہ ۱۹۰۱ ۔ مقام الطبع قاديان ضلع گورداسپور باهتمام
الحكيم فضل دين البهيروى ۔
قيمت عمر ؎ جلد ۷۰۰

अनुवाद टाइटल प्रथम संस्करण

जो व्यक्ति सूरह फ़ातिहा को उसके रहस्यात्मक ज्ञान एवं आध्यात्मिक वास्तविकताओं के साथ पढ़ना पसंद करता हो तो उसको चाहिए कि हमारी इस तफ़सीर को आध्यात्मिक चिंतन एवं अच्छी नियत से पढ़े और वह मुक़ाबले के लिए आस्तीनें न चढ़ाए क्योंकि यह एक अतुल्नीय पुस्तक है और जो व्यक्ति इस पुस्तक के उत्तर देने पर उतारू होगा और पलंगी दिखलायेगा वह अतिशीघ्र देखेगा कि इस कार्य से नामुराद रहा और अपने नफ्स का कुसूरवार हुआ और शर्मिंदा होगा। अत: मुबारक हो उस व्यक्ति के लिए जो हमारे सुबोध शब्दों से अपना दामन भर लेता है और जो हम उसे प्रदान करें उसे प्राप्त कर लेता है और उस जैसा नहीं बनता जिसने बेशर्मी का वस्त्र ओढ़ा और सत्यता का वस्त्र उतार फेंका। यह पुस्तक उन लोगों का रद्द है जो हमें मूर्ख घोषित करते हैं और छल को रंगीन बनाकर प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि इनके पास कोई ज्ञान नहीं बल्कि दरिद्रों का समूह है। हाँ हमें स्वीकार है कि हमारी समस्त पुस्तकें उस प्रतापवान ख़ुदा ही के सहयोग से हैं वरना हम तो अज्ञानियों के समान हैं। मेरी यह पुस्तक अत्यंत सुबोध, सरस, और उत्कृष्ट है और मैंने इसका नाम

"एजाज़ुल मसीह"

(मसीह का चमत्कार)

रखा है। यह पुस्तक रमज़ान के महीने में 1318 हिज्री के अनुसार फ़रवरी 1901 ई. के आरम्भ से 70 दिनों में तैयार होकर ज़ियाउल इस्लाम प्रेस में प्रकाशित हुई।

हकीम फ़ज़ल दीन भैरवी के संरक्षण में क़ादियान से प्रकाशित

सूचना

सामान्य सूचना के लिए उर्दू में लिखा जाता है कि ख़ुदा तआला ने 70 दिनों के भीतर 20 फ़रवरी 1901 ई. को इस पुस्तक को अपनी अत्यंत कृपा से पूरा कर दिया। सत्य यही है कि सब कुछ उसकी कृपा से हुआ। इन दिनों में यह विनीत कई प्रकार के रोगों एवं रुकावटों में भी ग्रस्त हुआ जिस से अंदेशा था कि यह कार्य पूर्ण न हो सके क्योंकि प्रतिदिन की निर्बलता और रोग के आगमन के कारण स्वास्थ्य इस योग्य नहीं रहा था कि क़लम उठा सके और यदि स्वास्थ्य भी होता तो स्वयं मुझ में क्या सामर्थ्य था। मन आनम कि मन दानम। किन्तु अंतत: इन शारीरिक रोगों का भेद मुझे यह ज्ञात हुआ कि यह जमाअत भी जो इस स्थान पर मेरे मित्रों में से उपस्थित हैं, यह ख्याल न करें कि मेरी अपनी मानसिक ताक़तों का यह परिणाम है। अत: उसने उन रोगों और रुकावटों से सिद्ध कर दिया कि मेरे दिल एवं मानसिकता का यह कर्म नहीं। इस ख्याल में मेरे विरोधी अवश्य सत्य पर हैं कि यह इस व्यक्ति का कार्य नहीं कोई और अदृश्य रूप से इसको सहायता प्रदान करता है। अत: मैं गवाही देता हूँ कि वास्तव में कोई अन्य है जो मुझे सहायता देता है किन्तु वह मनुष्य नहीं बल्कि वही सामर्थ्यवान है जिसके द्वार पर हमारा सिर है। यदि कोई अन्य भी ऐसे कार्यों में सहायता दे सकता है जिनमें चमत्कारिक शक्ति है तो फिर पाठकों को इस संबंध में आशा करनी चाहिए कि इस पुस्तक के साथ और इसके समान इन्हीं सत्तर दिनों में सैंकड़ों व्याखाएं सूरत फ़ातिहा की मेरी शर्त के अनुसार प्रकाशित होने वाली हैं या प्रकाशित हो चुकी हैं क्योंकि इसी पर निर्णय का आधार रखा गया है। विशेषकर सय्यद महर अली शाह साहिब पर तो विश्वास है कि उन्होंने इस समय तफ़सीर लिखने के लिए अवश्य कुछ प्रयास किया होगा अन्यथा अब उन लोगों को कौन सा मुँह दिखा सकते हैं जिन को यह कहा गया था कि वह तफ़सीर लिखने के लिए लाहौर आए हैं। स्पष्ट है यदि वह सत्तर दिन में न लिख सके तो सात घंटों में क्या लिख सकते हैं। अत: न्यायप्रियों के लिए ख़ुदा का समर्थन देखने के लिए यह भव्य निशान है क्योंकि सत्तर दिन की

अवधि निर्धारित करके सैंकड़ों मौलवी साहिबान सम्मुख बुलाये गए। अब उनका क्या उत्तर है कि क्यों वे ऐसी तफ़सीर प्रकाशित न कर सके। यही तो चमत्कार है, चमत्कार और क्या होता है ?

हे दोस्तो ! जो पढ़ते हो उम्मुल किताब को,
अब देखो मेरी आँखों से इस आफ़ताब को।

सोचो दुआए फ़ातिहा को पढ़ के बार-बार,
करती है यह तमाम हक़ीक़त को आशकार।

देखो ख़ुदा ने तुमको बताई दुआ यही,
उसके हबीब ने भी पढ़ाई दुआ यही।

पढ़ते हो पंज वक़्त उसी को नमाज़ में
जाते हो इसकी रह से दरे बे नियाज़ में।

उसकी क़सम कि जिसने यह सूरत उतारी है
उस पाक दिल पे जिसकी वह सूरत प्यारी है।

यह मेरे रब्ब से मेरे लिए इक गवाह है,
यह मेरे सिद्क़ दावा पे मुहर इलाह है।

मेरे मसीह होने पे यह इक दलील है
मेरे लिए यह शाहिदे रब्बे जलील है।

फिर मेरे बाद औरों की है इंतेज़ार क्या?
तौबा करो कि जीने का है ऐतबार क्या?

लेखकः विनीत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

20 फ़रवरी 1901 ई०

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحَمْد لِلّٰه الذى أنطق الإنسان وعلّمه البيان۔ وجعل كلام البشر مظهر حُسنه المستتر. ولَطّف أسرار العارفين بإلهامه۔ و كمّل أرواح الروحانيين بإنعامه۔ و كفّل أمرهم بعنايته. واستودعهم ظلّ حمايته۔ وعادا من عادا أولياءهٗ وما غادرهم عند الاهوال۔ وسمع دعاءهم إذا أقبلوا عليه كل الإقبال۔ وأرى لهم غيرته وصار لهم كقسورة للاشبال۔ ولوٰى إليهم كزافرةٍ فى مواطن الجدال۔ وما زايلهم فى موقف وما نسيهم عند الابتهال۔ وألزمهم كلمة التقوىٰ. وثبّتهم على سُبُل الهدىٰ وجذبهم إلى حضرته العُليا۔ ووهب

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह को शोभनीय हैं जिसने मनुष्य को बोलने की शक्ति प्रदान की और वर्णन की सरसता सिखाई और मनुष्य के वर्णन को अपने गुप्त सौंदर्य का द्योतक बनाया और अपने इल्हाम के माध्यम से अध्यात्म ज्ञानियों के रहस्यों को उत्तमता प्रदान की। और अपने ईनाम से आध्यात्मिक लोगों की रूहों को चरम तक पहुँचाया और अपनी अनुकंपा से उनके प्रत्येक मामले का पोषक हुआ और अपनी सहायता की छाया उन्हें प्रदान की। और उसने अपने वलियों से शत्रुता करने वालों से शत्रुता की तथा उन्हें भय के अवसरों पर असहाय नहीं छोड़ा। और जब भी उन्होंने उसकी ओर पूर्ण रूप से ध्यान दिया तो उसने उनकी दुआओं को सुना और उनके लिए अपना स्वाभिमान दिखाया और उनके लिए ऐसा हो गया जैसे शेर अपने बच्चों के लिए और स्वजन एवं परिजनों के समान प्रत्येक मैदान में वह उन पर कृपा करता रहा और किसी स्थान पर भी न तो वह उनसे

لهم أعينا يُبصرون بها. وقلوبًا يفقهون بها وجوارح يعملون بها وجَعَلهم حرز المخلوقين وروح العالمين وَالسّلام والصّلٰوة على رسولٍ جاء فى زمن كان كدستٍ غاب صدره أو كليل أفل بدره وظهر فى عصر كان الناس فيه يحتاجون إلى العُصرة۔ و كانت الارض أمحَلَت وخلت راحتها من بُخل المزنة فأَروى الارض التى احترقت لإخلاف العهاد وأحيا القلوب كإحياء الوابل للسنة الجماد فتهلّل الوجوه وعاد حبرها وسبرها۔ و تراءت معادن الطبائع وظهرت فضّتها وتبرها۔ وطُهّر المؤمنون من كل نوع الجناح وأُعطُوا جناحًا

दूर हुआ और न ही दुआ में गिड़गिड़ाने के समय उन्हें भुलाया। उसने तक़्वा (संयम) को उनके साथ अनिवार्य कर दिया और उन्हें हिदायत के मार्गों पर दृढ़ता प्रदान की और अपने सर्वोच्च दरबार की ओर आकृष्ट कर लिया। और उन्हें ऐसी आंखें प्रदान कीं जिन से वे देखते हैं ऐसे दिल दिए जिनसे वे समझते हैं, ऐसे अंग दिए जिनसे वे कार्य करते हैं और उसने उन्हें समस्त लोगों की शरण और समस्त ब्रह्मांड का केन्द्र बनाया। फिर सलाम और दरूद हो उस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो उस युग में आया जो ऐसे तख़्त के समान था जिसका सभापति मौजूद न हो या उस रात के समान था जिसका चौदहवीं का चंद्रमा डूब गया हो। वह ऐसे युग में प्रकट हुआ जिसमें लोग किसी शरण के मोहताज थे, और पृथ्वी दुर्भिक्ष का शिकार और वर्षा की कमी के कारण सूख चुकी थी। फिर उस रसूल ने उस पृथ्वी को जो समय पर वर्षा न होने के कारण जल चुकी थी, जल थल कर दिया और दिलों को इस प्रकार जीवित कर दिया जिस प्रकार मूसलाधार वर्षा दुर्भिक्ष ग्रस्त को जीवित कर देती है जिसके परिणाम स्वरूप चेहरे चमक उठे और उनका सौंदर्य एवं सुंदरता फिर से लौट आई और स्वभावों के छिपे हुए जौहर प्रकट हो गए और उनकी विशेषताएं प्रकट हो गईं और मोमिन

يطير إلى السماء بعد قصّ هذا الجناح وأُسِّسَ كل أمرهم على التقوىٰ. فما بقى ذرّة من غير الله ولا الهوٰى وطُهّرت أرضُ مكّة بعد ما طيف فيها بالاوثان فما سُجد على وجهها لغير الرحمان إلىٰ هذا الاوان. فصلّوا على هذا النبيّ المحسن الذى هو مظهر صفات الرحمان المنّان. وَهَلْ جزاء الإحسان إلّا الإحسان. والقلب الذى لا يدرى إحسانه فلا إيمان له أو يضيع إيمانه. اللّٰهم صلّ على هذا الرسول النبىّ الامّى الذى سقى الآخرين كما سقى الاوّلين. وصبّغهم بصبغ نفسه وأدخلهم فى الْمُطَهّرين فنوّرهم الله بإشراق أشعة المحبّة.

हर प्रकार के पाप से पवित्र कर दिए गए और पाप के यह पर काटने के पश्चात, उन्हें आकाश तक उड़ने वाले पर दिए गए और उनके प्रत्येक कार्य की बुनियाद संयम पर खड़ी कर दी गई। अत: उनमें अल्लाह के अतिरिक्त किसी चीज़ का तथा तामसिक इच्छाओं का एक कण भी शेष न रहा और मक्का की धरती जहां मूर्तियों की परिक्रमा होती थी, पवित्र कर दी गई। फिर कभी आज तक उस पर ख़ुदा-ए-रहमान के अतिरिक्त किसी को सजदा नहीं किया गया। इसलिए उस उपकारी नबी पर दुरूद भेजो जो अत्यंत उपकार करने वाला, की विशेषताओं रहमान ख़ुदा का द्योतक है और उपकार का बदला तो उपकार ही है वह दिल जो उसके उपकार से अपरिचित है वह बेईमान है या फिर अपने ईमान को नष्ट कर रहा है। हे अल्लाह! तू इस रसूल नबी उम्मी पर दुरूद भेज कि जिसने बाद में आने वालों को वैसे ही जाम पिलाया जैसा कि उसने पहलों को पिलाया था और उन्हें अपने रंग में रंगीन कर दिया और उन्हें पवित्र लोगों में सम्मिलित कर दिया। फिर अल्लाह ने उन्हें प्रेम की किरणों की चमक से प्रकाशमान कर दिया और शुद्ध प्रेम की शराब पिलाई और उन्हें ख़ुदा में लीन होने वाले पहलों के साथ मिला दिया। और उन्हें अपना सानिध्य प्रदान किया और उनके त्याग को स्वीकार

وسقاهم من أصفى المُدامة وألحقهم بالسابقين من الفانين وقرّبهم وقبّل قربانهم ودقّق مشاعرهم وجلّٰى جنانهم ووهب لهم من عنده فهم المقَرّبين وزكّى نفوسهم وصفّى ألواحهم وحلّى ارواحهم ونجّا نفوسهم من سلاسل المحبوسين و كفّل أمورهم كما هى عادته بأصفيائه وشرح صدورهم كما هى سيرته فى أوليائه ودعاهم إلى حضرته ثم تبادر إلى فتح الباب برحمته وأدخلهم فى زمرته وألحقهم بسكّان جنّته وقيل داركم أتيتم وأهلكم وافيتم وجُعلوا من المحبوبين وهذا كلّه من بركات محمدٍ خير الرسل وخاتم النبيّين عليه صلوات الله وملائكتهٖ وأنبيائه وجميع عباده الصالحين۔

किया। उनकी ज्ञानेंद्रियों को अत्यन्त सुन्दर बनाया और उनके दिल को रौशन कर दिया तथा अपने पास से उन्हें सानिध्य प्राप्तों की समझ प्रदान की। उनके दिलों को पवित्र किया और उनके हृदय पटल को पवित्र और स्वच्छ किया। उनकी रूहों को सुशोभित किया और क़ैदियों की ज़ंजीरों से उनके दिलों को मुक्ति प्रदान की और जैसा कि उसका अपने चुने हुए बन्दों के साथ दस्तूर रहा है उसने उनके समस्त मामलों की ज़िम्मेदारी ले ली और अपने वलियों के साथ जारी सुन्नत के अनुसार उनके दिलों को खोल दिया और उन्हें अपने पास बुलाया और अपनी दया से उनके लिए तुरंत दरवाज़ा खोल दिया। और उन्हें अपने गिरोह में सम्मिलित कर लिया और अपने स्वर्गवासियों में उन्हें भी दाखिल कर दिया। और फिर उनसे कहा गया कि तुम अपने असली घर में आ गए हो और तुमने अपने प्रियजनों से मुलाक़ात कर ली और वह प्रियजनों में सम्मिलित कर लिए गए और यह सब कुछ खैरुर्रुसुल और ख़ातमुन्नबियीन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बरकतों के कारण है। अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और उसके नबियों और उसके समस्त नेक बंदों का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद हो।

أمّا بعد فاعلموا أيّها الطالبون المنصفون والعاقلون المتدبّرون انى عبد من عباد الرحمان الذين يجيئون من الحضرة وينزلون بأمر ربّ العزّة عند اشتداد الحاجة وعند شيوع الجهلات و البدعات وقلّة التقوىٰ والمعرفة ليُجدّدوا ما أَخْلَقَ ويجمعوا ما تَفَرَّق ويتفقّدوا ما افْتُقِد و يُنجزوا ويُوفوا ما وُعِد من ربّ العالمين و كذالك جئتُ وأنا أوّل المؤمنين وإنى بُعثت على رأس هذه المائة المباركة الربّانية لاجمع شمل المِلّة الإسلامية وأدفع ما صيل على كتاب الله وخير البرية وأكسر عصا من عصٰى وأقيم جدران الشريعة وقد بيّنتُ مرارًا وأظهرتُ للناس إظهارًا

तत्पश्चात हे सत्याभिलाषियो, न्यायवानो, बुद्धिमानो और सोच विचार करने वालो! अच्छी तरह से जान लो कि मैं रहमान ख़ुदा के बंदों में से एक बंदा हूं जो नितांत आवश्यकता के समय तथा ऐसे अवसर पर जब अज्ञानताएँ और विदअतें (नए-नए आडम्बर) फैल जाएँ और संयम तथा अध्यात्मज्ञान कम हो जाएँ तो वह ख़ुदा तआला की ओर से आते और रब्बुल इज़्ज़त के आदेश से इस उद्‌देश्य को लिए हुए उतरते हैं कि इस बिगड़े हुए का नवीनीकरण करें और बिखरे हुए को इकट्‌ठा करें और मिटे हुए आचार-व्यवहार को ढूंढ निकालें। और जो वादा रब्बुल आलमीन की ओर से किया गया था उसे सर्वांग रूप से पूर्ण करें। और इसी प्रकार मैं भी आया हूं और मैं मोमिनों में से प्रथम (स्तर का) हूँ और मैं इस मुबारक रब्बानी शताब्दी के सिर पर अवतरित किया गया हूँ ताकि बिखरी हुई मिल्लते इस्लामिया को इकट्‌ठा करूँ और अल्लाह की पुस्तक पवित्र क़ुरआन और खैरुलवरा हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर किए गए आक्रमणों की प्रतिरक्षा करूँ और अवज्ञाकारियों के डंडे (शक्ति) को तोड़ दूं और शरीयत की दीवारें मज़बूत करूँ। मैंने बार-बार खोलकर वर्णन कर दिया है तथा लोगों के लिए प्रकट कर

انی أنا المسیح الموعود والمھدی المعھود و کذالك أُمرتُ وما کان لی أن أعصی أمر ربّی وألحَقَ بالمجرمین فلا تعجلوا علیّ وتدبّروا أمری حق التدبّر إن کنتم متّقین وعسیٰ أن تُکذّبوا امرئًا وھو من عنداللّٰہ وعسٰی ان تُفسّقوا رجلاً وھو من الصالحین وإن اللّٰہ أرسلنی لاُصلح مفاسد ھذا الزمن وأُفرّق بین روض القدس وخضراء الدمن. وأُرِی سبیل الحق قومًا ضالین وما کان دعوای فی غیر زمانہ بل جئتُ کالربیع الذی یُمطر فی إبّانہ وعندی شھاداتٌ من ربی لقوم مستقرین وآیاتٌ بیّناتٌ للمبصرین. و وجہ کوجہ الصادقین للمتفرّسین. وقد جاء ت أیام اللّٰہ وفُتحت

दिया है कि मैं ही मसीह मौऊद और महदी मौऊद हूँ और इसी प्रकार मैं अवतरित किया गया हूं मेरा क्या साहस कि मैं अपने प्रतिपालक के आदेशों की अवज्ञा करूँ और अपराधियों में सम्मिलित हो जाऊं। अत: मेरे विरोध में शीघ्रता न करो और यदि तुम संयमी हो तो मेरे विषय में अच्छी तरह विचार करो। संभव है कि तुम एक व्यक्ति को झुठला बैठो जबकि वह अल्लाह की ओर से हो और शायद ऐसे व्यक्ति को पापी ठहराओ जो वास्तव में सदाचारियों में से हो। नि:संदेह अल्लाह ने मुझे इस युग की बुराइयों के सुधार के लिए भेजा है। ताकि पवित्र उपवनों एवं गंदगी के ढेर पर उगी हुई हरियाली के मध्य अंतर कर दिखाऊं और पथभ्रष्ट क़ौम को सत्य का मार्ग दिखाऊं। मेरा यह दावा असमय नहीं अपितु मैं उस बहार की वर्षा के समान आया हूं जो ठीक अपने मौसम और समय पर बरसती है। मेरे पास मेरे रब्ब की ओर से सत्य के अभिलाषियों के लिए गवाहियाँ और दिव्य दृष्टि वालों के लिए खुले-खुले निशान मौजूद हैं और विवेकशीलों के लिए सच्चों जैसा चेहरा है। अल्लाह के वादे वाले दिन आ गए और अभिलाषियों के लिए रहमत के द्वार खुल गए इसलिए जिन नेमतों की तुम प्रतीक्षा कर रहे थे स्वयं ही उनके प्रथम इंकारी न

أبواب الرحمة للطالبين فلا تكونوا أوّل كافرٍ بها وقد
كنتم منتظرين أين الخفاء فافتحوا العين أيها العقلاء
شهدت لی الارض و السماء وأتانی العلماء الامناء وعرفنی
قلوب العارفین وجری الیقین فی عروق قلوبهم کأقْریةٍ
تجری فی البساتین بید أن بعض علماء هذه الدیار ما
قبلونی من البخل والاستکبار فما ظلمونا ولکن ظلموا
أنفسهم حسدًا واستعلاءً ورضوا بظلمات الجهل وترکوا
عِلمًا وضیاءً ا فترا کم الظلام فی قولهم وفعلهم وأعیانهم
حتی اتخذ الخفافیش و کرًا لجنانهم وما قعد قاریة علی
أغصانهم و کانوا من قبل یتوقعون المسیح علی رأس هذه

हो जाओ। अब गोपनीयता कहां रही। इसलिए हे बुद्धिमानो! अपनी आंखें खोलो। पृथ्वी और आकाश ने मेरे पक्ष में गवाही दे दी है और ईमानदार विद्वान मेरे पास आ गए और आध्यात्म ज्ञानियों के दिलों ने मुझे पहचान लिया है और उनके दिलों की रगों में विश्वास इस प्रकार समा गया है जिस प्रकार बागों में स्वच्छ पानी की नालियां बहती हैं। परंतु फिर भी इस देश के कुछ विद्वानों ने कृपणता और अहंकार के कारण मुझे स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया अपितु ईर्ष्या और अभिमान के कारण अपने प्राणों पर अत्याचार किया है। और वे अज्ञानता के अंधकारों पर राज़ी हो गए और ज्ञान एवं प्रकाश को त्याग दिया। अत: उनकी बातचीत उनके आचरण और उनके अस्तित्व पर अंधकार की ऐसी मोटी परत जम गईं कि चमगादड़ों ने उनके दिलों में डेरे डाल लिए और मधुर स्वर वाले परिन्दों ने उनकी शाखों पर अपना बसेरा न बनाया। जबकि इससे पूर्व वे इस शताब्दी के आरम्भ पर मसीह के आने की आशा कर रहे थे और उसकी इस तरह प्रतीक्षा कर रहे थे जिस प्रकार लोग ईद के चांदों का या किसी दावत में उत्तम व्यंजनों की प्रतीक्षा करते हैं। परन्तु फिर जब उनकी अभीष्ट वस्तु उनके लिए तैयार कर दी

المائة و يترقّبونه كترقّب أهلّة الاعياد أو أطايب المأدبة فلمّا حُمّ ما توقعوه وأُعطى ما طلبوه حسبوا كلام الله افتراء الإنسان وقالوا مفترى يُضل الناس كالشيطان وطفقوا يشكّون فى شأنه بل فى إيمانه و كذّبوه وفسّقوه و كفروه مع مريديه وأعوانه وأنزل الله كثيرا من الآى فما قبلوا وأرَى التأييد فى المبادى والغاى فما توجهوا وقالوا كاذب وما تفكّروا فى مآل الكاذبين وقالوا مُختلق وما تذكّروا من دَرَجَ من المختلقين والاسف كل الاسف أنهم يقولون ولا يسمعون ويعترضون ولا يُصغون ويلمزون ولا يُحقّقون وحصحَصَ الحق فلا يُبصرون وإذا رموا البرى بأفيكة فضحكوا وما يبكون ما لهم لا يخافون أم لهم

गई और मनोवांछित वस्तु उन्हें उपलब्ध करा दी गई तो वे अल्लाह के कार्य को इंसान का झूठ समझने लगे और कहने लगे कि यह झूठा है जो शैतान के समान लोगों को पथभ्रष्ट कर रहा है। और वह उसकी शान अपितु उसके ईमान के विषय में भी संदेह करने लगे। उन्होंने उसे उसके अनुयायियों और सहायकों सहित झूठा ठहराया और उन्हें पापी और दुराचारी ठहराया। अल्लाह ने प्रचुरता से निशान अवतरित किए परंतु उन्होंने स्वीकार न किया। प्रारम्भ में भी और अंत में भी समर्थन दिखाए परंतु उन्होंने कोई ध्यान न दिया और उसे झूठा कहा। परंतु झूठों के अंजाम के विषय में कुछ विचार न किया और उन्होंने उसे झूठ गढ़ने वाला कहा परंतु जो झूठे पहले गुज़र चुके हैं उनको दृष्टिगत न रखा। अफ़सोस, बार-बार अफ़सोस कि वह कहते तो हैं परंतु सुनते नहीं और ऐतराज़ करते हैं परंतु उत्तर पर कान नहीं धरते, दोष निकालते हैं परंतु छानबीन नहीं करते। सच खुलकर सामने आ गया परंतु फिर भी वे नहीं देखते। जब वे किसी मासूम पर आरोप लगाते हैं तो हंसते हैं, रोते नहीं। उन्हें क्या हो गया है कि वे डरते नहीं। क्या धर्म ग्रन्थों में उनके लिए निर्दोष होने

براءة فى الزبر فهم لا يُسألون وما أرى خوف الله فى قلوبهم بل هم يؤذون الصادقين ولا يُبالون ما أرى فناء صدورهم رحبًا و كمثلهم اختاروا صحبًا ويهمزون ويغتابون وهم يعلمون ولا يتكلمون إلّا كطائر يخذق أو كمسلول يبصق لا يَبطُنون أمرنا ولا يعرفون سرّنا ثم يُكفرون ويسبّون ويهذرون من غير فهم الكتاب ولا كهرير الكلاب. وما بقى فيهم فهم يهديهم إلى صراطٍ مستقيم. ولا خوف يجذبهم إلى سُبُل مرضات الله الرحيم ومنهم مقتصدون يُكذّبون ولا يعلمون وبعضهم يكفّون الالسنة ولا يسبّون وتجد أكثرهم مُفحشين علينا ومُكَفّرين، سابّين غير خائفين فليبك الباكون على مصيبة الإسلام وعلى فتن هذه

की कोई ज़मानत है कि उनसे पूछताछ नहीं की जाएगी? मैं उनके दिलों में ख़ुदा का भय नहीं देखता अपितु वे तो सच्चों को दु:ख देते हैं और कुछ परवाह नहीं करते। मैं उनके दिलों के आंगन में व्यापकता नहीं देखता। उन्होंने अपने जैसे मित्र चुने हुए हैं। और वह जानबूझकर दोष निकालते और चुगली करते हैं। उनकी बातचीत ऐसी होती है जैसे कोई परिंदा बीट करता है या यक्ष्मा के रोगी के समान जो थूकता फिरता है। यह हमारे मामले की गहराई को नहीं जानते और न हमारे भेद की वास्तविकता से परिचित हैं। और वे अल्लाह की पुस्तक को समझे बिना काफ़िर ठहराते, गालियां देते और अभद्र बातें करते हैं परंतु ऐसे नहीं जैसे कुत्ते गुर्राते हैं अपितु उससे बढ़कर। उनमें ऐसा विवेक शेष नहीं रहा जो उन्हें सीधे मार्ग तक पहुँचा दे और न भय है कि जो उन्हें दयालु ख़ुदा की प्रसन्नता के मार्गों तक धीरे-धीरे ले आए। उनमें से कुछ संतुलन प्रिय हैं जो अज्ञानता के कारण झुठलाते हैं। कुछ अपनी ज़बानों को रोक कर रखते हैं और गालियां नहीं देते। परंतु उनमें से अधिकतर लोगों को तू निर्भय होकर हमारे विरुद्ध अभद्र भाषा बोलने वाला, हमारा इन्कार

الايّام وأى فتنة أكبر من فتن هذه العلماء فإنهم تركوا الدّين غريبًا كشهداء الكربلاء وإنها نار أذابت قلوبنا وجنّبت جنوبنا وثقّلت علينا خطوبنا ورمت كتاب الله بأحجار من جهلات الجاهلين ونرىٰ كثيرا منهم يخفون الحق ولا يجتنبون الزور كالصلحاء وتكذب ألسنتهم عند الإفتاء غشوا طبائعهم بغواشى الظلمات وقدّموا حَبّ الصِلات على حُبّ الصَلٰوة نبذوا القرآن وراء ظهورهم للدنيا الدنيّة وأمالوا طبائعهم إلى المقنيات المادية واشتدّ حرصهم ونهمتهم وشغفهم باللذات الفانية وجاوز الحدّ شُحّهُم فى الامانى النفسانية ما بقى فيهم علم كتاب الله الفرقان ولا تقوى القلوب وحلاوة

करने वाला और अभद्र गालियां देने वाला पाएगा। अत: चाहिए कि इस्लाम के इस संकट पर और इस युग के उपद्रवों पर रोने वाले खूब रोएं। इन विद्वानों के उपद्रवों से बढ़कर और कौन सा उपद्रव है। क्योंकि इन विद्वानों ने धर्म को कर्बला के शहीदों के समान असहाय परिस्थिति में छोड़ दिया है। यह एक ऐसी अग्नि है जिसने हमारे हृदयों को पिघला दिया है और पहलुओं को खंडित कर दिया है और हमारे लिए हमारे कार्यों को कठिन बना दिया है और अज्ञानियों की अज्ञानता पूर्ण बातों से अल्लाह की पुस्तक पर पत्थर बरसाए हैं। हम देखते हैं कि उनमें से अधिकतर सच को छुपाने से काम ले रहे हैं और नेक लोगों के समान वे झूठ से नहीं रुकते। फ़तवा देते समय उनके मुँह झूठ बोलते हैं। उन्होंने अपनी स्वभावों को अंधकार के पर्दों में छुपा रखा है। और उन्होंने दान-दक्षिणा की बहुतात को नमाज़ के प्रेम पर प्राथमिक कर दिया। इस तुच्छ संसार के लिए उन्होंने पवित्र क़ुर्आन को पीठ पीछे डाल रखा है। और अपनी तबीयतों को भौतिक भंडारों की ओर झुका दिया है। नश्वर आनंदों के लिए उनका लालच, इच्छा और दिलचस्पी बहुत बढ़ गई है और तामसिक

الإيمان وتباعدوا من أعمال البرّ وأفعال الرشد والصلاح وانتقلوا من سُبل الفلاح إلى طرق الطلاح وعاد جمرهم رمادًا وصلاحهم فسادًا بعدوا من الخير والخير بعد منهم كالاضداد وصاروا لإبليس كالمُقرّنين فى الاصفاد وانجذبوا إلى الباطل كأنّهم يُقادون فى الاقياد يخونون فى فتاواهم ولا يتّقون ويُكذّبون ولا يُبالون ويقربون حرمات الله ولا يبعدون ولا يسمعون قول الحق بل يريدون أن يسفكوا قائله ويغتالون ولمّا جاء هم إمام بما لا تهوى أنفسهم أرادوا أن يقتلوه وهم يعلمون وما كان لبشر أن يموت إلّا بإذن الله فكيف المرسلون. إنه يعصم عباده من عنده ولو مكر الماكرون يقولون نحن خدام الاسلام وقد صاروا

इच्छाओं में उनका लालच समस्त सीमाएं पार कर चुका है। उनमें न तो अल्लाह की पुस्तक पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान शेष रहा और न ही हृदयों का संयम और ईमान की मिठास। नेक कर्मों और भलाई एवं सुधार के कार्यों से वे बहुत दूर जा चुके हैं और सफ़लता के मार्गों से हटकर विनाश के मार्गों पर अग्रसर हैं। उनके ईमान का अंगारा राख में और उनकी नेकी तथा भलाई उपद्रव में परिवर्तित हो गई है। वे भलाई से और भलाई उनसे इतनी दूर हो गई मानो वे एक दूसरे से विपरीत हों और वे इब्लीस के लिए बेड़ियों में जकड़े हुए क़ैदियों के समान हो गए। वे झूठ की तरफ़ ऐसे आकर्षित हुए जैसे कि वे जेलखानों की ओर हांक कर लाए गए हों। वे अपने फ़तवों में ख़यानत करते हैं और संयम धारण नहीं करते। झूठ बोलते हैं और कुछ परवाह नहीं करते। वे अल्लाह की निषेध वस्तुओं के निकट आते हैं और उनसे दूर नहीं होते। वे सच्ची बात नहीं सुनते अपितु वे चाहते हैं कि सच बोलने वाले का ख़ून बहाएं और उसे नष्ट कर दें। जब उनके पास इमाम वह शिक्षा लेकर आया जिसे उनके नफ़्स (मन) पसंद नहीं करते थे तो उन्होंने उसे जान बूझकर

أعوانًا للنصارٰی فی أکثر عقائدهم وجعلوا أنفسهم کحبالة لصائدهم یقولون سمعنا الاحادیث بالاسانید ولا یعلمون شیئا من معنی التوحید ویقولون نحن أعلم بالاحکام الشرعیة وما وطئت أقدامهم سکك الادلّة الدینیة یطیرون فی الهوی کالحَمام ولا یُفکّرون فی ساعة الحِمام یسعون لحطامٍ بأنواع قلقٍ ویُخرجون کأهل النفاق رؤوسهم من کل نفقٍ یقعون من الشحّ علٰی کل غضارة ولو کان فیه لحم فارة إلّا الذین عصمهم اللّٰه بأیدی الفضل والکرامة فأولئك مُبرّئون مِمّا قیل ولیس علیهم شیء من الغرامة وإنّهم من المغفورین ومن الفتن العظمٰی والآفات الکبریٰ

क़त्ल करने की ठान ली। हालांकि जब एक सामान्य मनुष्य भी ख़ुदा की आज्ञा के बिना नहीं मर सकता तो फिर अल्लाह के भेजे हुए कैसे मर सकते हैं। नि:संदेह अल्लाह अपने पास से अपने बंदों की रक्षा करता है। चाहे षड्यन्त्र रचने वाले कितने ही षड्यन्त्र रचें। वे दावा करते हैं कि हम इस्लाम के सेवक हैं जबकि वास्तविकता यह है कि वह ईसाइयों के अधिकतर आस्थाओं में उनके सहायक हो गए हैं और उन्होंने स्वयं को उनके शिकारियों के लिए जाल के समान बना लिया है। वे कहते हैं कि हम ने हदीसों को उनके सनदों सहित सुना है हालांकि वे एकेश्वरवाद के अर्थ तक नहीं जानते और वे यह भी कहते हैं कि हम शरीयत के आदेशों को भली-भांति जानते हैं जबकि धार्मिक तर्कों के कूचों में उनके कदम तक नहीं पड़े। वे लालच एवं इच्छाओं की हवाओं में कबूतर के समान उड़ानें भर रहे हैं और मौत की घड़ी की चिंता नहीं करते। वह सामान्य सांसारिक लाभों के लिए अत्यधिक चिन्ताओं के साथ दौड़-धूप करते हैं और कपटाचारियों के समान हर सुराख़ से अपना सिर निकालते हैं। लालच की अधिकता के कारण वे हर थाल पर गिर पड़ते हैं चाहे उसमें एक चूहे का गोश्त हो, सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह अपनी कृपा के हाथ से बचा

صول القسوس بقسى الهمز واللمز كالعسوس وكل ما
صنعوا لجرح ديننا من النبال والقياس بنوه على المكائد
كالصائد لا على العقل والقياس نبذوا الحق ظهريّا وما
كتبوا فيما دوّنوه إلّا أمرًا فريّا وقد اجتمعت هممهم
علٰى إعدام الإسلام واتفقت آراء هم لمحو آثار سيدنا
خير الانام يدعون الناس إلى اللظٰى والدرك ناصبين شَرَك
الشرك وما وجدوا كيدًا إلّا استعملوه وما نالوا جهدًا إلّا
بذلوه استحرت حربهم وكثر طعنهم وضربهم ونعرت
كوساتهم وصاحت من كل طرف بوقاتهم وجالت خيولهم
وسالت سيولهم وسعوا كل السعى حتى جمعوا عساكر

ले। ऐसे लोग कथित वर्णन से बरी हैं और उन पर कोई जुर्माना नहीं और वे क्षमा किए हुए लोगों में सम्मिलित हैं। बड़े उपद्रव तथा बड़ी आपदाओं में से एक ईसाई पादरियों का वह यलगार है जो शिकारियों के समान जो अपने दोष लगाने और नुक्त:चीनी की कमानों से की गई थी। उन्होंने जो भी हमारे धर्म को ज़ख्मी करने के लिए तीर कमान बनाए उसकी बुनियाद उन्होंने शिकारी के समान छल और कपट पर रखी न कि बुद्धि और अनुमान पर। उन्होंने सच को पीठ के पीछे डाल दिया और अपनी पुस्तकों में अत्यंत झूठ लिखा और उनकी समस्त शक्तियाँ इस्लाम को मिटाने के लिए एकत्रित हो गईं और सय्यदना खैरुल अनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक्श मिटाने के लिए उनकी रायें सहमत हो गईं। ये (पादरी) शिर्क का जाल बिछाकर लोगों को भड़कती अग्नि और उसकी गहराइयों की ओर बुलाते हैं। छल एवं कपट का प्रत्येक साधन उन्होंने प्रयोग किया और प्रत्येक प्रयास को प्रयोग किया। उनके युद्ध में गर्मी और उनके भाले और तलवारें चलाने में तेज़ी पैदा हो गई और उनके नगाड़े गूंज उठे और हर ओर से बिगुल बज उठे। उनके घोड़ों ने तेज़ी दिखाई और सैलाब उमड़ पड़े। उन्होंने अपने प्रयासों को ऐसी चरम सीमा तक

الإلحـاد ورفعـوا رايـات الفسـاد وصُبّـت عـلى المسـلمين مصائـب وخُرّبـت تلـك الربـوع وأهديـت لسُـقياها الدمـوع وكثـر البدعـة ومـا بقـى السُـنّة ولا الجماعـة ورُفـع القـرآن وضاقـت عـن صونـه الاسـتطاعة فحاصـل الـكلام إن الإسـلام مُلِـئ مـن الآلام وأحاطـت بـه دائـرة الظـلام و أَرَى الزمـان عجائـب فى نقـض أسـواره وأسـال الدهـر سـيولا لتعفيـة آثـاره واكمـل القدرامـره لإطفـاء انـواره ولمّـا كان هـذا مـن المشـيّة الربّانيـة مبنيّـا عـلى المصالـح الخفيـة فمـا تطـرّق الىٰ عـزم العـدا خلـل ولا إلىٰ أيديـهم شـلل ولا إلىٰ ألسـنتهم فلـل وكان مـن نتائجـه أن المِـلّة ضعفـت والشـريعة اضمحلـت وجرفتهـا

पहुंचा दिया कि नास्तिकता की समस्त सेनाएं एकत्र कर लीं और उपद्रव के झंडे बुलंद कर दिए। मुसलमानों पर संकट टूट पड़े और आबादियाँ वीरान हो गईं। उनके पीने के लिए आंसुओं का उपहार प्रदान किया गया, विदअत (आडम्बरों) की इतनी प्रचुरता हुई कि न सुन्नत शेष रही न जमाअत। क़ुर्आन उठ गया और उसकी सुरक्षा और देखभाल के लिए शक्ति न रही। सारांश यह है कि इस्लाम दुःखों से भर गया, अंधकारों के दायरे ने उसे चारों ओर से घेर लिया और उसकी दीवारों को खंडित करने में युग ने अपने चमत्कार दिखाए। और उसके नक्श मिटाने के लिए युग सैलाब पर सैलाब लेकर आया। भाग्य ने उसके प्रकाश बुझाने के लिए अपना फैसला पूर्णता तक पहुंचा दिया और जब यह सब कुछ बिल्कुल ख़ुदा के इरादे के अंतर्गत और गुप्त हितों की बुनियाद पर हुआ तो शत्रुओं के अटूट इरादों पर कोई विघ्न मार्ग प्राप्त न कर सका। और न उसके हाथ नाकाम हुए और न ही उनकी ज़बानों की धार कम हुई। इसका एक परिणाम यह निकला कि मिल्लत में कमज़ोरी पैदा हो गई, शरीयत कमज़ोर हो गई और तीव्र और प्रचंड सैलाब ने उसे जड़ से उखाड़ दिया, और उसका ऐसा सफ़ाया हुआ मानो स्वयं पहचानने वाले के लिए उसका पहचानना

المجارف حتی أنکرھا العارف و کثر اللغو وذھب المعارف باخت أضواء ھا وناء ت أنواء ھا۔ودیس المِلّۃ وطالت لاواء ھا و کان ھذا جزاء قلوبٍ مقفلۃ وأثام صدورٍ مغلقۃ فإن أکثر المسلمین فقدوا تقواھم وأغضبوا مولاھم۔

وتری کثیرا منھم شغفھم حبّ الاموال والعقار والعقیان وملک فؤادھم ھوی الاملاک والنسوان وقلّب قلوبھم لوعۃ اِمرتھا فشُغلوا بھا عن الرحمٰن وتری أکثرھم اعتضدوا قِربۃ الملحدین وانقادوا کَقَئُوۡدٍ لسیر الکافرین وحسبوا أن الوصلۃ إلی الدولۃ طرق الاحتیال او القتال وزعموا أن النبالۃ لا یحصل إلاَّ بالنبال فلیس عندھم تدبیر تأیید المِلّۃ من

संभव न रहा और व्यर्थ बातों की प्रचुरता हो गई और अध्यात्मिक ज्ञानों का नामोनिशान न रहा और उस (इस्लाम) के प्रकाश धीमे पड़ गए और उसके सितारे कहीं दूर गुम हो गए। मिल्लत पैरों तले रौंदी गई और उसके संकटों का युग लंबा हो गया। और यह बन्द दिलों का दंड और बंद सीनों का बदला था। इसलिए कि अधिकतर मुसलमानों ने संयम को खो दिया और अपने मौला को नाराज़ कर दिया।

तू उनमें से अधिकतर को देखता है कि धन, सम्पत्ति, चांदी सोने के प्रेम ने उन्हें अपना आसक्त बना लिया है। और सोने तथा स्त्री की हवस ने उनके दिलों पर क़ब्ज़ा जमा लिया है। और धन और इच्छाओं की तीव्र मांग ने उनके दिलों को उथल पुथल कर दिया है जिसके कारण वे रहमान ख़ुदा से लापरवाह हो गए। तू देखता है कि अधिकतर ने नास्तिकों की मटकी उठाई हुई है और काफ़िरों की आदतों का एक सिधाए हुए घोड़े के समान अनुकरण कर रहे हैं। और उनका विचार यह है कि शासकों तक पहुंचने का तरीका चालबाज़ी या जंग और लड़ाई है। उनका विचार है कि शराफ़त केवल तीरों के कारण ही प्राप्त हो सकती है। उनके निकट तलवार एवं भालों से रक्तपात के अतिरिक्त धर्म के

غـير سـفك الدمـاء بالمرهفـات والاسـنّة ويسـتقرون فى كل وقـت مواضـع الجهـاد وإن لـم يتحقّـق شـروطه ولـم يأمـر بـه كتـاب ربّ العبـاد ومـن المعلـوم أن هـذا الوقـت ليس وقـت ضـرب الاعنـاق لإشـاعة الديـن ولـكل وقـت حكـم آخـر فى الكتـاب المبـين بـل يقتضـى حكمـة الله فى هـذه الاوقـات أن يؤيّـد الديـن بالحجـج والآيـات وتُنقّـد أمـور المِـلّة بعـين المعقـول ويُمعـن النظـر فى الفـروع والاصـول ثـم يُختـار مسـلك يهـدى إليـه نـور الإلهـام ويضعـه العقـل فى موضـع القبـول وأن يُعـدّ عُـدّة كمثـل مـا أعـدّ الاعـداء. ويُفـلّ السـيف ويُحـدّ الدهـاء ويُسـلك مسـلكُ التحقيـق والتدقيـق وتشـرب الـكأس الدهـاق مـن هـذا الرحيـق فـإن أعدائنـا

समर्थन के लिए और कोई उपाय नहीं। वह हर समय जिहाद के अवसरों की तलाश में लगे रहते हैं चाहे उनकी शर्तें लागू न हों और न ही रब्बुल इबाद की पुस्तक उसका आदेश दे रही हो। यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि यह समय धर्म के प्रसार के लिए ख़ून बहाने का नहीं। किताब-ए-मुबीन (अर्थात् पवित्र क़ुर्आन) में हर समय के लिए एक अलग आदेश है। चूँकि इस युग में अल्लाह की हिकमत यह चाहती है कि सच्चे धर्म का तर्कों तथा निशानों द्वारा समर्थन किया जाए और धर्म के विषयों को औचित्य की आंख से परखा जाए और सिद्धान्त और उसकी व्याख्याओं को गहरी नज़र से देखा जाए। तत्पश्चात ऐसा तरीका चुना जाए जिसकी ओर इल्हाम का प्रकाश मार्गदर्शन करे और जिसे बुद्धि पूर्ण रूप से स्वीकार करे और यह कि ऐसी तैयारी की जाए जैसी दुश्मनों ने तैयारी की है। तलवार को छोड़कर बुद्धि एवं विवेक को तेज़ किया जाए। जांच पड़ताल और बारीकी से देखने का मार्ग ग्रहण किया जाए। और इस उत्तम शराब के छलकते हुए जाम पिए जाएं। क्योंकि हमारे शत्रु धर्म के लिए तलवार नहीं उठाते और न ही तलवार और भालों के ज़ोर से अपनी आस्थाओं को प्रसारित करते हैं अपितु विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म छल प्रपंच प्रयोग करते हैं और

لا يسلّون النواحل للنحلة ولا يشيعون عقائدهم بالسيوف والاسنّة بل يستعملون ما لطف ودق من أنواع المكائد ويأتون فی صور مختلفة كالصائد وكذالك أراد الله لنا فی هذا الزمان أن نكسر عصا الباطل بالبرهان لا بالسنان فأرسلنی بالآيات لا بالمرهفات وجعل قلمی وكلمی منبع المعارف والنكات وما أعطانی سيفًا و سنانًا وأقام مقامهما برهانا وبيانًا ليجمع علی يدی الكلم المتفرّقة ويُنظم بی الأمور المتبدّدة و يُسكّن القلوب الراجفة ويُبكّت الالسنة المرجفة ويُنير الخواطر المظلمة ويُجدّد الادلة المخلقة حتی لا يبقی أمر غير مستقيم ولا نهج غير قويم فحاصل القول ان البيان والمعارف من معجزاتی

एक शिकारी के समान विभिन्न रूपों में आते हैं। इस युग में हमारे लिए अल्लाह ने यही चाहा है कि हम झूठ के डंडे को तर्क से तोड़ें न कि भालों से। अत: उस (अल्लाह) ने मुझे निशानों के साथ अवतरित किया है न कि तलवारों के साथ और उस ने मेरे क़लम और वाणी को अध्यात्म ज्ञानों और तर्कों का मुख्य स्त्रोत बनाया है। उसने मुझे तलवार और भाले नहीं दिए अपितु उनके स्थान पर तर्क और वर्णन प्रदान किए, ताकि वह मेरे हाथ पर विभिन्न बातों का जमा कर दे और मेरे द्वारा बिखरे हुए विषयों को एक लड़ी में पिरो दे, कांपते दिलों को सांत्वना प्रदान करे, झूठ फैलाने वाली ज़बानों को खामोश कर दे, अंधकारमय दिलों को प्रकाशमान कर दे और पुराने तर्कों को ऐसी ताज़गी प्रदान कर दे कि कोई मामला टेढ़ा और कोई मार्ग टेढ़ा न रहे। वर्णन का सारांश यह है कि वर्णन शैली और अध्यात्म ज्ञान मेरे चमत्कारों में से हैं। मेरी तलवारें मेरे निशान और शब्द हैं। मैंने अपने कुछ शत्रुओं को यह चमत्कार दिखाने के लिए आमंत्रित किया है कि शायद इस प्रकार अल्लाह उनके सीने खोल दे या उन्हें अध्यात्म ज्ञान के प्रकाश से हिस्सा प्रदान करे। अत: मैंने उनसे कहा कि यदि तुम मेरे चमत्कार से इन्कार करते हो और एक योद्धा के समान मुझ पर आक्रमण करते

وإن مرهفاتی آیاتی و کلماتی و کنت دعوت بعض أعدائی لإراءة
هذه المعجزة لعل الله یشرح صدورهم أو یجعل لهم نصیبًا من
نور المعرفة فقلت إن کنتم تنکرون بإعجازی و تصولون علیّ
کالغازی و تظنون أنکم أُعطیتم علم القرآن و بلاغة سحبان
فتعالوا ندع شهداء نا و شهداء کم و علماء نا و علماء کم
ثم نقعد مقابلین و نکتب تفسیر سورة مرتجلین منفردین غیر
مستعینین فما کان أحدٌ منهم أن یقبل الشرط المعروض و یتبع
الامر المفروض و یقعد بحذائی و یُملی التفسیر کإملائی بل
جعلوا یکیدون لیطفئوا النور و یُکذّبوا المأمور و کان أحدٌ
منهم یُقال له مهر علی و کان یزعم أصحابه أنه الشیخ الکامل
و الولی الجلی فلمّا دعوته بهذه الدعوة بعد ما ادّعی أنه یعلم

हो और तुम समझते हो कि तुम्हें क़ुर्आन का ज्ञान और सहबान वाइल जैसी सुबोधता प्रदान की गई है तो आओ हम अपने सहायकों को बुलाएं और तुम अपने सहायकों को बुलाओ। हम अपने विद्वानों को और तुम अपने विद्वानों को बुलाओ, फिर हम आमने सामने बैठ जाएं और किसी एक सूरत की व्याख्या उसी समय अकेले-अकेले बिना सहायता लिए लिखें। परंतु उनमें से किसी को यह हिम्मत न हुई कि वह इस वर्णन की हुई शर्त को स्वीकार करता और इस निर्धारित नियम का पालन करता और मेरे सम्मुख बैठता और मेरी जैसी तफ़सीर (व्याख्या) लिखता बल्कि वे नूर को बुझाने और मामूर को झुठलाने के लिए चालाकी के मार्ग चुनने लग गए। उनमें से एक व्यक्ति मेहर अली नामक था जिसे उसके मित्र पूर्ण और बहुत बड़ा वली समझते थे। उसके इस दावे के पश्चात कि वह क़ुर्आन का ज्ञान रखता है और वह अध्यात्म ज्ञानियों में से है तो उस पर जब मैंने उसे तफ़सीर (व्याख्या) लिखने का निमंत्रण दिया तो उसने मेरी तफ़सीर (व्याख्या) के सम्मुख तफ़सीर लिखने से साफ़ इंकार कर दिया। वह तो है ही धोखेबाज़, यदि वह हमदानी या हरीरी के समान भी होता तो भी उस का

القرآن وأنه من أهل المعرفة أبى من أن يكتب تفسيرا بحذاء تفسيرى و كان غبيّا ولو كان كالهمدانى أوالحريرى فما كان فى وسعه أن يكتب كمثل تحريرى و مع ذالك كان يخاف الناسَ و كان يعلم أنه إن تخلّف فلا غلبة ولا جحاسَ فكاد كيدًا وقال إنى سوف أكتب التفسير كما أشير ولكن بشرط أن تُباحثنى قبله بنصوص الاحاديث والقرآن ويُحَكّمُ من كان لك عدوًّا وأشد بُغضًا من علماء الزمان★ فإن صدّقنى وكذّبك بعد سماع البيان فعليك أن تُبايعنى بصدق الجنان ثم نكتب التفسير ولا نعتذر ونترك الاقاويل وإنّا قبلنا شرطك وما زدنا إلّا القليل هذا ما كتب إلىّ وطبعه وأشاع بين الاقوام واشتهر أنه قبل الشرائط وما كان هذا إلّا كيدا

सामर्थ्य न था कि वह मेरे जैसी रचना लिख सकता। और उसके साथ ही वह लोगों से डरता भी था और खूब जानता था कि यदि वह तफ़सीर लिखने से पीछे हटा तो इस दशा में उसे न तो वर्चस्व प्राप्त होगा और न ही अपने प्रतिद्वंदी से जंग कर सकेगा। अत: उसने साज़िश की और कहा कि जैसा कि इशारा किया गया है कि मैं (महर अली) अतिशीघ्र तफ़सीर (व्याख्या) लिखूंगा किंतु इस शर्त के साथ कि तुम ठोस हदीसों और क़ुर्आन की रोशनी में मेरे साथ शास्त्रार्थ करो और ऐसे व्यक्ति को निर्णायक बनाया जाए जो तेरा शत्रु हो और युग के विद्वानों में से सबसे अधिक द्वेष रखने वाला हो★ फिर यदि वह निर्णायक हम दोनों के बयान सुनने के पश्चात मेरी सत्यता प्रमाणित करे और तुम्हें झुठलाए तो ऐसे में तुम पर अनिवार्य होगा कि सच्चे दिल से मेरी बैअत कर लो। उसके पश्चात हम दोनों तफ़सीर (व्याख्या) लिखेंगे और किसी प्रकार के बहाने न बनायेंगे और तू-तू मैं-मैं छोड़ देंगे। हमने थोड़े से संशोधन के साथ तुम्हारी शर्त

★ارادمن ذالك الرجل محمدحسين البطالوى۔ منه

★ इस व्यक्ति से उसका अभिप्राय मुहम्मद हुसैन बटालवी है।

لإغلاط العوام ولمّا جاء نى مكتوبه المطبوع و كيده المصنوع قلت إنّا لله و لعنتُ ما أشاع وتأسّفتُ على وقت ضاع ثم إنه استعمل كيدًا آخر ورحل من مكانه وسافر ووصل لاهور وأثار النقع كالثور وأرجفت الالسنة أنه ما جاء إلّا ليكتب التفسير فى الفور فلمّا رأيت أنهم حسبوا الدودة ثعبانا والشوكة بستانا قلت فى نفسى ان نذهب إلى لاهور فأىّ حرجٍ فيه لعلّ الله يفتح بيننا ويسمع الناس ما يخرج من فينا وفيه فشاورتُ صحبتى فى الامر و كشفتُ عندهم عن هذا السرّ واستطلعتُ ما عندهم من الرأى وسردتُ لهم القصة من المبادى إلى الغاى فقالوا لا نرى أن

स्वीकार कर ली। यह था वह लेख जो उसने मुझे लिखा और उसे छपवा कर लोगों में मशहूर किया। और यह प्रसिद्ध कर दिया कि उसने शर्तें स्वीकार कर ली हैं। किंतु यह लोगों को ग़लतफहमी में डालने के लिए उसका एक छल था। जब मुझे उसका एक लिखित पत्र मिला और उसकी स्वयं बनाई हुई चलाकी का ज्ञात हुआ तो मैंने उस पर इन्ना-लिल्लाह पढ़ा। और उसके प्रकाशित किए हुए पत्र पर लानत भेजी और समय की बर्बादी पर अफ़सोस व्यक्त किया। फिर उस व्यक्ति ने एक और चाल चली, अपने आवास से निकल कर और यात्रा करते हुए लाहौर जा पहुंचा और उसने बैल की तरह धूल उड़ाई और लोग यह झूठा प्रचार करने लगे कि वह तुरन्त केवल तफ़सीर (व्याख्या) लिखने के लिए यहां आया है। अत: जब मैंने यह देखा कि लोग इस कीड़े को अजगर और कांटे को बाग़ समझ रहे हैं तो मैंने अपने दिल में यह कहा कि यदि हम भी लाहौर चले चलें तो इसमें हर्ज ही क्या है शायद अल्लाह हमारे मध्य कोई निर्णय कर दे और लोग हमारे और उसके मुंह से निकली हुई बातें सुन लें। इस पर मैंने इस संबंध में अपने मित्रों से परामर्श किया और इस राज़ को उन पर व्यक्त

تذهب إلى لاهور وإن هو إلّا محلّ الفتن والجور وقد تبيّن أنه ما قبل الشروط وأرى الضمور والمقوط و تشحّط بدمه وما رأى سبيل الخلاص إلّا الشحوط وهمط وغمط وما ذبح كبش نفسه وما سمط وما قمط وإنّا سمعنا أنه ما جاء بصحة النيّة وليس فيه رائحة من صدق الطوية هذا ما رأينا والامر إليك والحق ما أراك الله وما رأيت بعينيك و كذالك كانت جماعتى يمنعوننى و يردعوننى ويُصرّون علىّ ويكفّوننى حتى تلوّيت عما نويتُ وحُبّب إلىّ رأيهم فقبلتُ وما أبيتُ وتركت ما أردت وطويتُ الكشح عمّا قصدتُ ثم طفق المخالفون يمدحونه على فتح الميدان ويطيرونه

किया और उनकी राय पूछी और उनके सामने आरम्भ से अंत तक सारा क़िस्सा वर्णन किया। इस पर उन्होंने कहा कि आपका लाहौर जाना हमारे निकट उचित नहीं। वह शहर तो फ़ित्नों और अत्याचारों का गढ़ है और यह तो स्पष्ट हो गया है कि उसने शर्तें स्वीकार नहीं कीं और उसने अपनी असमर्थता और बेबसी और दरमाँदगी दिखा दी है। वह स्वयं अपने खून में लथपथ है और उसने पलायन में ही अपनी मुक्ति का मार्ग देखा है। उसने ज़ुल्म किया और नेमत की नाक़द्री की। उसने अपने नफ़्स के दुम्बे को न तो ज़िबह किया और न उसके पांव बांधकर लटकाया, न खाल उतारी। हम ने सुना है कि वह वहाँ अच्छी नियत से नहीं आया और उसमें सत्यता का लेश मात्र भी नहीं। यह हमारा मशवरा है और निर्णय आपके अधिकार में है। सत्य केवल वही होगा जो अल्लाह आप को दिखाए और जिसे आपकी आंखें देखें। और इस प्रकार मेरी जमाअत के लोग मुझे रोकते और मना करते रहे और आग्रह पूर्वक रोकते रहे। यहां तक कि मैंने अपना इरादा बदल लिया मुझे उनका मशवरा पसंद आया तो मैंने उसे स्वीकार कर लिया और इंकार न किया और मैंने जो इरादा किया था उसे छोड़ दिया

من غير جناح العرفان و كانوا يكذبون ولا يستحيون ويتصلّفون ولا يتقون ويفترون ولا ينتهون وينسبون إليه بحار محامد ما استحقّها وأبكار معارف ما استرقّها و كانوا يسبّوننى كما هى عادة السفهاء ويذكروننى بأقبح الذكر وبالاستهزاء ويقولون إن هذا الرجل هاب شيخنا وخاف وأكله الرعب فما حضر المصاف وما تخلّف إلّا لخطب خشّى وخوف غَشّى ولو بارز لكلمه الشيخ بأبلغ الكلمات وشج رأسه بكلام هو كالصَفات فى الصِفات و كذالك كانوا يهذرون ويستهزء ون بى ويسبّون ووالله لا أحسب نفسى إلّا كميّتٍ تُرّبَ أو كبيتٍ خُرّبَ والناس يحسبوننى

और अपने इरादे को त्याग दिया। उस पर मेरे शत्रुओं ने उसकी प्रशंसा करनी आरंभ कर दी कि उसने मैदान मार लिया है और ज्ञान एवं अध्यात्म के बिना उसे ऊंचा उड़ाने लगे। वे झूठ बोलते थे और शर्म नहीं करते थे, व्यर्थ बकते थे और तक्वा से काम नहीं लेते। झूठ बोलते और बाज़ नहीं आते। उस (मेहर अली) के संबंध में प्रशंसाओं के ऐसे पुल बांधते हैं जिनके वह योग्य नहीं। और उन्होंने ऐसे अछूते अध्यात्म ज्ञान उसकी ओर सम्बद्ध किए जिनका वह मालिक न था। और जैसा कि मूर्खों का तरीक़ा है वह मुझे गालियां देते हैं और मेरा वर्णन गंदे एवं उपहासपूर्ण अंदाज़ से करते थे और कहते थे कि यह व्यक्ति हमारे पीर से भयभीत और डरा है और उस से डरकर शास्त्रार्थ के मैदान में नहीं निकला और यह बड़ी बात से डरने एवं भयभीत होने के कारण ही बच रहा है। यदि वह मुकाबले में आता तो हमारा पीर अत्यंत उच्च वर्णनों से उसे ज़ख्मी कर देता और अपने अत्यन्त सुबोध वर्णनों से उसका सिर तोड़ देता। इसी प्रकार वे व्यर्थ बातें करते थे और मुझसे उपहास करते और मुझे गालियां देते थे। ख़ुदा की क़सम मैं अपने नफ़्स को मिट्टी में दबे हुए मुर्दे के समान विचार करता हूं या वीरान घर

شَیئًا ولستُ بشیء وما أنا إلّا لربی کفیء وما
کان لی أن أبارز وأدعو العدا ولکن اللّٰہ أخرجنی لهذا
الوغیٰ وما رمیتُ إذ رمیتُ ولکن اللّٰہ رمٰی ولی حِبٌّ
قدیر وإعانته تکفینی ومتُّ فظهر الحِبُّ بعد تجهیزی
وتکفینی ووهب لی بعد موتی کلامًا کالریاض و قولًا
أصفی من ماء یسیح فی الرضراض وحجة بالغة تلدغ
الباطل کالنضناض و کلها من ربی وما أنا إلّا خاوی
الوفاض وأُمرتُ أن أنفق هذه الاموال علی الاوفاض وأن
أرُمّ جدران الإسلام قبل الانقضاض ومن بارزنی فقد
بارز اللّٰہ رب العالمین وما جئتُ إلّا بزیّ المساکین
وما أجیز حزنا من حولی ولا بطنًا من جولی بل

के समान। लोग मुझे कुछ चीज़ समझते हैं जबकि मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं तो अपने रब्ब के साए के समान हूं मेरा क्या साहस था कि शास्त्रार्थ के मैदान में निकलूँ और दुश्मनों को ललकारूं परन्तु अल्लाह ने मुझे इस युद्ध के लिए निकाला। जब मैंने तीर चलाया तो मैंने नहीं चलाया अल्लाह ने चलाया। मेरा एक सामर्थ्यवान प्रिय है और उसकी सहायता मेरे लिए पर्याप्त है। मैं मर चुका तो मेरी मौत के बाद वह मेरा महबूब मुझ पर प्रकट हुआ और मेरे मरने के पश्चात उसने मुझे आनन्द एवं बहार जैसा वर्णन प्रदान किया और ऐसी वर्णन शैली प्रदान की जो उस पानी से भी अधिक स्वच्छ एवं पवित्र है जो पत्थरों से भरी ज़मीन पर बह रहा हो और ऐसे अकाट्य तर्क प्रदान किए जो एक जानलेवा नाग के समान झूठ को डसते हैं और यह सब कुछ मेरे रब्ब की ओर से है मैं तो ख़ाली हाथ हूं। और मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं प्रत्येक विशिष्ट एवं सामान्य पर यह धन दौलत खर्च करूं और इस्लाम की दीवारों की उनके गिरने से पहले मरम्मत करूँ। और जो मेरे मुकाबले पर निकलता है वह वास्तव में रब्बुल आलमीन ख़ुदा के मुक़ाबले पर निकलता है। मैं तो केवल असहाय के भेष में

معی قادر یواری عیانہ ویُری برھانہ فلاجل ذالك
تحامت العدا عن طریقی وقطّعت النحور والاعناق
من منجنیقی وما لاحد بمقاومتی یدان ویدی
ھذہ تعمل تحت ید اللّٰہ الرحمان نزلت علیّ برکات
ھی حرز للصالحین فجمعتُ بھا لنفسی التحصین
والتحسین ومن نوادر ما أُعطی لی من الکرامات أن
کلامی ھذا قد جُعل من المعجزات فلو جَھّز سلطانٌ
عسکرًا من العلماء لیبارزونی فی تفسیر القرآن
ومُلح الإنشاء فواللّٰہ إنی أرجو من حضرۃ الکبریاء ان
یکون لی غلبۃ وفتحٌ مبینٌ علی الاعداء ولذالك بثثتُ
الکتب وأشعتُ الصحف النخب فی الاقطار وحثثتُ

आया हूं। मैं अपनी शक्ति से न तो बुलंद ज़मीन को तय कर सकता हूँ और न ही अपनी ताकत से किसी निचली ज़मीन को तय कर सकता हूं बल्कि मेरे साथ वह सामर्थ्यवान (ख़ुदा) है जो अपने वजूद को छुपाता है किंतु अपने अकाट्य तर्कों एवं निशानों को दिखाता है। इस कारण शत्रु मेरे मार्ग से कतरा गए और मेरी तोप से (उनके) गले और उनकी गर्दनें और सीने टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। मेरा मुक़ाबला करने का किसी को सामर्थ्य नहीं। मेरा यह हाथ ख़ुदा-ए-रहमान की क़ुदरत के अधीन काम कर रहा है। मुझ पर वे बरकतें अवतरित हुईं जो नेक लोगों के लिए प्राणों की रक्षा करने वाली हैं। अत: उनके द्वारा मैंने अपने लिए मज़बूत किला और प्रशंसा प्राप्त की है। और जो दुर्लभ चमत्कार मुझे प्रदान किए गए हैं उनमें से मेरा यह वर्णन है जो चमत्कारों में से है। यदि कोई बादशाह विद्वानों की फौज इस उद्देश्य के लिए तैयार करे कि वह क़ुर्आन की तफ़सीर और दिलों में उतर जाने वाले लेखों में मेरा मुकाबला करे तो ख़ुदा की क़सम मुझे प्रतापवान ख़ुदा से पूरी उम्मीद है कि मुझे शत्रुओं पर स्पष्ट विजय प्राप्त होगी। इस उद्देश्य के लिए मैंने बहुत सी पुस्तकें और बहुत सा उत्तम लिट्रेचर

علی هٰذا المصارعة كل من يزعم نفسه من أبطال هٰذه المضمار وما كان لاحد من علماء هذه الديار أن يُبارزنى فيما دعوتهم بإذن الله القهّار فما أنت وما شأنك أيها المسكين الجولروى أتتغاوى علىّ بأخلاط الزمر وأوباش الناس أيها الغوى أيّها الغافل اعلم أن السماء أهدتك إلىّ لتكون نموذج عبرة فى الارضين وقادك إلىّ القدر ليُرِى الناسَ ربّى قدر المقبولين وإنّا إذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين أيها المسكين لا تقل غير الصدق ولا تشهد لغير الحق واتّق الله ولا تكن من المجترئين أأنت تجد فى نفسك قدرة على تفسير القرآن برعايت مُلح الادب ولطائف

प्रकाशित करके समस्त संसार के कोनों तक फैला दिया है और प्रत्येक उस व्यक्ति को जो अपने आपको इस मैदान का शहसवार समझता है, मैंने उसे मुक़ाबला करने की ओर प्रेरित किया है। इस देश के विख्यात विद्वानों में दम नहीं कि वह मेरे इस मुकाबले में निकलें जिसकी ओर मैंने उन्हें उस रूद्र ख़ुदा के आदेश से बुलाया है। तो फिर हे दरिद्र गोलड़वी! तू क्या ओर तेरी हैसियत क्या? हे पथभ्रष्ट! क्या तू कुछ गुंडों और उपद्रवी लोगों के साथ मिलकर मुझ पर हमला करने का इरादा करता है? हे लापरवाह! अच्छी तरह जान ले कि आसमान ने तुझे मेरे समक्ष प्रस्तुत किया है ताकि ज़मीन पर रहने वालों के लिए इबरत (सीख) का नमूना बने। भाग्य तुझे घेर कर मेरे पास ले आया है ताकि मेरा रब्ब लोगों पर अपने प्रिय बन्दों का मान एवं प्रतिष्ठा प्रकट करे। और जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतरते हैं तो भयभीत किए जाने वाली क़ौम की सुबह अत्यंत बुरी होती है। हे दरिद्र! सच के अतिरिक्त कुछ न कह और सत्य के अतिरिक्त कोई गवाही न दे। अल्लाह से डर और जान-बूझ कर दिलेरी न दिखा। क्या तू साहित्यिक अलंकार और वर्णन शैली की सूक्ष्मताओं की रियायत से अपने भीतर क़ुर्आन

البيـــان۔

سـبحان ربى إن هـذا إلّا كـذب مبـين. وأنـت تعلـم مبلـغ علمـك وتعلـم علـم مـن معـك ومـن تبعـك ثـم تدّعـى الفضـل كالماكريـن ويعلـم العلمـاء أنـك لسـت رجـل هـذا الميـدان ولكنّـهم يكتمـون عـوارك كمـا يُكتـم الداء الدخيـل ويُسـعى للكتمـان فحاصـل الـكلام إنـك لسـت أهـل هـذا المقـام ومـا علّمـك الله العلـم والادب مـن لدنـه موهبـة ومـا اقتنيـتَ المعـارف مكتسـبة ومـع ذالـك لمّـا حللـتَ لاهـور إدّعيـتَ كأنـك تكتـب التفسـير فى الفـور تعاميـت أومـا رأيـتَ عنـد غلوائـك وفعلـت مـا فعلـت وسـدرتَ فى خيلائـك و خدعـت النـاس بأغلوطاتـك

की तफ़सीर करने का सामर्थ्य रखता है।

पवित्र है मेरा रब्ब! यह तो एक स्पष्ट झूठ है तू अपने प्रचारक ज्ञान को भली-भांति जानता है और अपने मित्रों और अनुयायियों के ज्ञान से भी परिचित है फिर भी तू मक्कारों के समान उच्च वर्णन शैली का दावा कर रहा है। विद्वान जानते हैं कि तू इस मैदान का शहसवार नहीं लेकिन वे तेरे दोष को छुपा रहे हैं जिस प्रकार एक अंदरूनी बीमारी छुपाई जाती है और उसको अदृश्य रखने का प्रयास किया जाता है। सारांश यह कि तू इस श्रेणी एवं स्थान के योग्य नहीं, न तो अल्लाह ने अपनी ओर से तुझे बिना परिश्रम के ज्ञान एवं दर्शन सिखाया है और न ही तूने स्वयं परिश्रम करके उन अध्यात्म ज्ञानों को प्राप्त किया है फिर भी जब तू लाहौर आया तो दावा करने लगा कि मानो तू बिना किसी रुकावट के तफ़सीर लिखेगा। अपनी हदों से आगे बढ़ने के कारण जानते बूझते हुए अंधा बन गया या अपनी शोखियों के कारण तू देख ही नहीं सका। तूने जो किया सो किया और अपने अहंकार में बेबाक और अपने ग़लत वर्णनों से लोगों को धोखा देता रहा। और उन्हें अपनी विभिन्न प्रकार की झूठी बातों के रंग से रंगीन

ولوّنتھم بألوان خزعبيلاتك و خدعتَ كل الخدع حتى
أجاحَ القوم جهلاتك وأهلك الناس حَيَواتك ثم ما
تركتَ دقيقة من الإغلاظ والازدراء وتفرّدتَ فى كمال
الزراية والسب والهذر والاستهزاء وما قصدتَ
لاهور إلا لطمعٍ فى محامد العامة. ولِتُعَدّ فى أعينهم من
حُماة المِلّة ومن مُواسى الدين ومعالجى هذه الغمّة
ببذل المال والهمّة ولعلك تامن بهذا القدر حصائد
الالسنة ولا تُرهق بالتبعة و المعتبة وليحسب الناس
كأنك مُنزّه عن معرّة اللكن ولست كعنين فى رجال
اللسن وليظن العامة الذين هم كالانعام. أنك رُزقتَ
من كل علمٍ وأُنعمتَ من أنواع الإنعام وأُعطِيتَ بصيرة

कर लिया। और तूने इस क़दर धोखे पर धोखा दिया कि तेरी अज्ञानता पूर्ण बातों ने क़ौम का उन्मूलन किया। तेरी (मक्कारी के) सांपों ने लोगों का विनाश कर दिया। इससे अधिक तूने कड़वे वचन और ऐब लगाने वाली आदत को कभी नहीं त्यागा। बुरा-भला कहने, गालियाँ देने और अभद्रता और हंसी ठठ्ठा की पराकाष्ठा में तू अकेला है। तूने केवल सामान्य जनता की प्रशंसा के लालच में लाहौर की यात्रा की, ताकि धन एवं धोंस के बल से तुम्हारी गणना उनकी दृष्टि में धर्म के समर्थन करने वाले और धर्म के हमदर्दों और उसके दु:खों को दूर करने वालों में हो। और इन उपायों के द्वारा तू ज़बानों की निंदा से अमन में आ जाए और तुझ पर बुरा अंजाम और दोष न थोपा जाए ताकि लोग यह समझें कि मानो तुम हिचकिचाहट के दोष से पवित्र हो और माहिर प्रवक्ताओं के मध्य तुम नामर्द नहीं और ताकि भोले-भाले लोग यह समझें कि तुम्हें प्रत्येक प्रकार का ज्ञान दिया गया है और विभिन्न प्रकार के ज्ञान सम्बन्धी पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हो और तुम्हें ऐसी दृष्टि दी गई है जो अध्यात्म ज्ञान के चरम तक पहुंचती है और ऐसी स्पष्ट राय दी गई है जो वर्णन के दायरे को पूर्ण करती है।

تُـدرك منتهـى العرفـان و إصابـة تُكمّـل دائـرة البيـان و فهمًـا كفـهم ذوّادٍ عـن الزيـغ والطغيـان وعقـلًا كبـازى يصيـد طـير البرهـان ونطقًـا مُؤيّـدًا بالحجـج القاطعـة المنـيرة ونفسًـا مُتحلّيـة بأنـواع المعـارف وحسـن السـريرة وتوفيقًـا قائـدًا إلى الرشـد والسـداد وإلهامًـا مُغنيـا عـن غـير رب العبـاد ثـم مـا بقـى منـك مـن تحميـدك كمّـله صحبـك فى تأييـدك وأُنشِـد الاشـعار فى ثنائـك ومـا تُـرك دقيقـة فى إطرائـك ثـم سـبّونى وحقّـرونى بعـد رفعـك وإعلائـك و كانـوا لا يُلاقـون أحـدًا ولا يوافـون رجـلًا إلا ويذكرونـنى عندهـم اسـتخفافا و أكلـوا لحمـى بالغيبـة فمـا أكلـوا إلا سـمًّا زعافـا فلمّـا بلغـت إهانتـهم منتهاهـا و كَلَّمـنى كَلِمـهم بمُداهـا ووصـل الامـر

और तुम्हें ऐसी समझ मिली है जो प्रत्येक त्रुटी और उद्दण्डता से रोकने वाली है और ऐसी बुद्धि दी गई है जो तर्कों के परिंदों को बाज़ की भांति शिकार करती है और ऐसी वाक् शक्ति प्रदान की गयी है जो स्पष्ट तर्कों द्वारा सहायता प्राप्त है, और ऐसा नफ़्स जो विभिन्न प्रकार के अध्यात्म ज्ञान और आन्तरिक सौन्दर्य से सुशोभित है और ऐसी क्षमता प्रदान की गई है जो सन्मार्ग की ओर ले जाती है और ऐसा इल्हाम दिया गया है जो बन्दों के रब्ब के अतिरिक्त उपास्यों से बेनियाज़ कर दे। फिर अपनी प्रशंसा में जो अपनी ओर से कमी रह गई थी उसे तेरी सहायता में तेरे मित्रों ने पूर्ण कर दिया और तेरी प्रशंसा के तराने गाए गए और तेरी प्रशंसा में अतिरंजित का कोई भी भाग छोड़ा नहीं गया। फिर तुझे बुलंदी देने के साथ उन्होंने मुझे गालियां दीं और मेरा अपमान किया। वह जिनसे भी मिलते हैं या जिन से भी उनका सामना होता उनके समक्ष मेरा वर्णन निम्न स्तर का करते हैं। उन्होंने चुगली करके मेरा गोश्त खाया और ऐसा करके वास्तव में उन्होंने ख़ुद ही ज़हरीला विष खाया। जब उनका अपमान अपनी चरम सीमा को पहुँच गया और उनकी बातों की छुरियों ने मुझे ज़ख्मी किया और मामला अपनी

إلى مداهــا ورأيــتُ أنــهم جــاروا كل الجــور وأثــاروا كالثــور
وتركــوا طـريــق الانصــاف وسـلكوا مسـلك الاعتسـاف و كثــر
الهــذر والهذيــان ومُلِئــت بكلمـات السـبّ القلـوب والآذان
وتاهــت الخيــالات و كُذّبــت المعــارف وصُدّقــت الجهــلات
أُلقــيَ فى روعــى أن أُنــجّى العامــة مــن أغلوطاتــهم۔ وأُطفــئَ
بقــولٍ فيصــلٍ مــا ســعّروا بتُرهاتــهم۔ وأكتــب التفســير وأُرِى
الصغــير والكبــير أنــهم كانــوا كاذبــين۔

ومــا حملــنى عــلى ذالــك إلا قصــد إفشــاء كــذب هــذا
المــكّار۔ فإنــه مكــر مكــرًا كُبّــارًا وأظهــر كأنــه مــن العلمــاء
الكبــار وادّعــى أنــه يعلــم القــرآن وفــاق الاقــران وحــان أن يَغلــب
ويُعــان۔ والغــرض مــن تفســيرى هــذا تفريــق الظــلام والضيــاء۔

चरम सीमा को पहुंच गया और मैंने देखा कि उन्होंने हर प्रकार का ज़ुल्म ढाया है और बैल की भांति धूल उड़ाई है और इंसाफ के मार्ग को त्याग दिया है और ज़ुल्म का रवैया अपनाया है, व्यर्थ बातों और बकवास की प्रचुरता हो गई है। और इस अभद्रता से दिल और कान भर गए हैं और विचार आवारा हो गए हैं अध्यातम ज्ञान को झुठलाया और अज्ञानता पूर्ण बातों को सत्यापित किया गया है तो मेरे दिल में यह डाला गया कि मानवता को इन लोगों के गलत वर्णनों से बचाऊँ और उनकी बकवास के परिणाम स्वरूप भड़काई हुई आग को निर्णायक कथन के द्वारा ठंडा करूँ और मैं तफ़सीर लिखूं और इस प्रकार हर छोटे-बड़े को यह दिखा दूँ कि वही लोग झूठे हैं।

इस मक्कार के झूठ की पोल खोलने के उद्देश्य ने ही मुझे इस (तफ़सीर लिखने पर) आमंत्रित किया है क्योंकि उसने एक बहुत बड़ा छल किया और यह प्रकट किया कि वह बड़े विद्वानों में से है और यह दावा किया कि वह क़ुर्आन का ज्ञान रखता है और वह अपने हम पल्ला विद्वानों पर प्राथमिकता रखता है और समय आ गया है कि वह विजयी हो और उसकी सहायता की

و إراءة تضوّع المسك بحذاء جيفة البيداء وإظهار خدع
الخادع ومواسات الرجال والنساء و الاشفاق على العُمی
ومُتّبعی الاهواء وقضاءُ خطبٍ كان كحق واجب ودين
لازم لا يسقط بدون الاداء فهذا هو الامر الداعی إلی هذه
الدعوة مع قلّة الفرصة ليكون تفسير الفرقان فرقانا بين
أهل الهدی وأهل الضلالة ولولا التصلّف وتطاول اللسان
وإظهار شجاعة الجنان من هذا الجبان لمررتُ بلغوه مرور
الكرام وما جعلته غرض السهام ولكنه هتك ستره بيديه
فكان منه ما ورد عليه وإنه كذب كذبا فاحشا وما خاف
بل خدع وزوّر وأغری علیّ الاجلاف وزعم نفسه كأنه

जाए। मेरी इस तफ़सीर का मूल उद्द्देश्य गुमराही तथा सद्मार्ग के मध्य अन्तर करना और मरुभूमि के मुर्दों के मुक़ाबले पर कस्तूरी की सुगंध को फैलाना है। साथ ही एक धोखेबाज़ के धोखे को प्रकट करना, मर्दों और औरतों के साथ हमदर्दी करना और अंधों एवं मोह-माया में डूबे हुए लोगों से प्रेम व्यवहार करना भी इस तफ़सीर का उद्द्देश्य है। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करना एक ऐसा अनिवार्य काम और ऐसा अनिवार्य क़र्ज़ था जो भुगतान किए बगैर माफ़ नहीं होता। यह वह असल कारण है जो फुर्सत न होने के बावजूद इस आमंत्रण का प्रेरक हुआ ताकि फ़ुर्क़ान-ए-हमीद की तफ़सीर हिदायत प्राप्त एवं पथ भ्रष्ट लोगों के मध्य फ़र्क कर दे। यदि इस बुज़दिल की ओर से बहादुरी की अभिव्यक्ति, ज़बान दराज़ी और बढ़-चढ़ कर बातें न होतीं तो मैं उसकी व्यर्थ बातों को अन्देखा करते हुए भद्र लोगों की भांति गुज़र जाता और उसे तीरों का निशाना न बनाता किंतु उसने स्वयं अपने हाथों अपना पर्दा फाड़ दिया। अब वह मुसीबत जो उस पर पड़ी है वह स्वयं उसकी अपनी ही ओर से है। उसने घिनौना झूठ बोला और न डरा बल्कि यह कि उसने छल से काम लिया झूठ को सच दिखाने का प्रयास किया और नीच प्रकृति लोगों को मेरे विरुद्ध

صاحب الخوارق والكرامات وعالم القرآن وشارب عين العرفان ومالك الدقائق والنكات فوجب علينا أن نُرِى الناس حقيقة ما ادّعاه ونُظهر ما أخفاه ولولا الامتحان لصعب التفريق بين الجماد والحيوان و كنتُ أقدر أن أُرِى ظالعه كالضليع وحُمره كالافراس ولكن هذا مقام العماس لا وقت عفو عثار الناس والمتكبّر ليس بِحَرِيّ أن يُقال عِثارُه وستر عواره و كذالك لا يليق به ان يعرض عن ذالك الخصام ويستقيل من هذا المقام مع دعاوى العلم و كونه من العلماء الكرام بل ينبغى أن يُسبر عقله ويُعرف حقله وقد ادّعى أنه صبّغ نفسه بألوان البلاغة

भड़काया और स्वयं को यह समझा कि मानो वह चमत्कारी और क़ुर्आन का विद्वान, अध्यात्म ज्ञान के चश्मे से पीने वाला और प्रत्येक बारीकी तथा सूक्ष्म बिन्दुओं का ज्ञान रखने वाला है। अत: हम पर यह अनिवार्य हो गया कि उसके दावे की सच्चाई को लोगों के सामने लाएं और उसकी सच्चाई को उन पर प्रकट करें क्योंकि परीक्षा के बिना निर्जीव एवं सजीव के मध्य फ़र्क करना असंभव होता है। मुझे यह सामर्थ्य प्राप्त है कि उसके लूले लंगड़े घोड़े को मज़बूत घोड़े और उसके गधों को उच्च घोड़ों के रूप में प्रकट करता किन्तु यह अवसर जंग का है न कि लोगों की भूलचूक को क्षमा करने का। कोई अभिमानी व्यक्ति इस योग्य नहीं होता कि उसकी भूलचूक को अन्देखा कर दिया जाए और उसके दोषों को छुपाया जाए। इसी प्रकार इस व्यक्ति के लिए यह उचित न था कि वह ज्ञान का दावा करते हुए और अपने आप को विद्वानों के समूह में सम्मिलित करते हुए इस मुक़ाबले से बचता और इस मौके से हाथ खींच लेता। बल्कि चाहिए कि उसकी अक़्ल को परखा जाए और उसके खेत की सच्चाई जानी जाए। उसने दावा तो यह किया था कि उसने अपने आप को उच्च शैली के वर्णनों के विभिन्न रंगों से इस प्रकार रंगा हुआ है जिस प्रकार

كجلـودٍ تُحَلَّى بالدباغـة فـإن كان هـذا هـو الحـق ومـن الامـور الصحيحـة الواقعـة فـأى خـوف عليـه عنـد هـذه المقابـلة بـل هـو محـلّ الإبشـار والفرحـة لا وقـت الفـزع والرِعْـدة فـإن كمالاتـه المخفيـة تظهر عنـد هـذا الامتحـان والتجربـة ويـرى النـاس كلـهم مـا كان له مسـتورًا مـن الشـأن والرتبـة ومـن المعلـوم أن قيمـة المـرء الكامـل يزيـد عنـد ظهـور كمـاله كمـا أن البئـر يُحَـبّ ويؤثـر عنـد شـرب زلاله ولا يخفـى أن القـادر عـلى تفسـير القـرآن يفـرح كل الفـرح عنـد السـؤال عـن بعـض معـارف الفرقـان فإنـه يعلـم أن وقـت اشـراق كوكبـه جـاء وحـان أن يُعـرَف ويُخـزى الاعـداء فـلا يحـزن ولا يغتـمّ

चमड़े को दबाग़त (कच्चे चमड़े की सफ़ाई एवं रंगाई) से सजाया और सुशोभित किया जाता है। यदि उसका दावा वास्तव में सत्यता पर आधारित और स्पष्ट था तो उसे इस मुकाबला (अर्थात् तफ़सीर लिखने) के समय ऐसा क्या भय था? बल्कि वह तो हर्ष व उल्लास का अवसर था न कि भयभीत होने और कांपने का। क्योंकि उसकी रहस्यात्मक विशिष्टाएँ इस परीक्षा के मुक़ाबले और रचनाओं के समय प्रकट हो जातीं और समस्त लोग उसकी छुपी हुई शान और प्रतिष्ठा को जान लेते। और यह तो मालूम ही है कि किसी सम्पूर्ण मनुष्य का मान-सम्मान उसकी विशेषताओं के प्रकटन से बढ़ जाया करता है बिल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार एक कुएं के स्वच्छ पानी के पीने से वह प्रिय एवं महबूब बन जाता है। यह बात छुपी हुई नहीं कि वह व्यक्ति जो क़ुर्आन की तफ़सीर का ज्ञान रखता हो क़ुर्आन के कुछ रहस्यात्मक ज्ञान सम्बन्धी प्रश्नों पर अत्यंत प्रसन्न होता है क्योंकि वह जानता है कि उसके सितारे के चमकने का समय आ गया है और उसके लिए वह घड़ी आ पहुंची है कि वह प्रसिद्धि पाए और उसके शत्रु अपमानित हों। इसलिए जब उसे मुक़ाबले के लिए बुलाया जाए और जब उसे जंग का न्योता दिया जाए तो वह शोकग्रस्त और क्रोध से भरा

إذا دُعِـى لمقابـلة ونـودى لمناضـلة بـل يزيـد مسـرّة ويحسـبها لنفسـه كبشـارة أو كتفـاؤل لإمـارة فـإن العالـم الفاضـل لا يُقَـدَّرُ حـق قـدره إلّا بعـد رؤيـة أنـوار بـدره ولا يخضـع له الاعنـاق بالكليـة إلّا بعـد ظهـور جواهـره المخفيـة وإنّـا اخترنـا الفاتحـة لهـذا الامتحـان فإنهـا أمّ الكتـاب ومفتـاح الفرقـان ومنبـع اللؤلـؤ والمرجـان وكوكنـة لطـير العرفـان وليكتـب كلٌّ منّـا تفسـيرها بعبـارة تكـون مـن البلاغـة فى أقصاهـا و تُنـير القلـب وتُضاهـى الشـمس فى بعـض معناهـا ليـرى النـاس مـن اقتعـد منّـا غـارب الفصاحـة و امتطـى مطايـا الملاحـة ولِيُعـرفَ أريـبٌ حـداه العقـلُ إلى هـذا الارب ويعلـم أديـبٌ سـاقه

हुआ नहीं होता बल्कि उसकी खुशी बढ़ जाती है और वह उसे अपने लिए एक सुसमाचार या अपनी प्रतिष्ठा के लिए सौभाग्य समझता है क्योंकि एक सम्माननीय विद्वान का पूर्ण मान-सम्मान तो उसके पूर्ण चंद्रमा के नूर के अवलोकन के पश्चात ही हो सकता है और उसकी गुप्त योग्यताओं के प्रकटन के पश्चात ही उसके आगे लोगों की गर्दनें पूर्णता झुक जाती हैं। हमने इस मुक़ाबले के लिए सूरह फ़ातिहा का चयन किया है क्योंकि यह उम्मुल किताब, मिफ्ताहुल क़ुर्आन, मोतियों और विद्रुम की खदान और अध्यात्म ज्ञानों के अभिलाषियों के लिए आशियाने की भांति है। इसलिए हम में से प्रत्येक को चाहिए कि वह इसकी तफ़सीर ऐसी अत्यंत उच्च कोटि की लिखे जो दिल को प्रकाशमान कर दे और वह अपनी कुछ आर्थिक विशेषताओं के दृष्टिकोण से सूरज के समान हो ताकि लोग देख लें कि हम में से कौन वर्णन की उच्च शैली की चोटी पर बैठा है और कौन अलंकृत शैली का प्रयोग करता है और ताकि उस बुद्धिजीवी की पहचान हो जाए जिसकी बुद्धि उसे इस लक्ष्य की ओर लाई है और उस साहित्यकार की भी निशान दही हो जाए जिसकी समझ उसे गुलशने अरब की ओर खींच-खींच कर ले आई है ताकि हम में से प्रत्येक अपने-अपने लक्ष्यों की

الفهم إلى رياض العرب وليُضمر كلّ منّا لهذا المراد كل ما عنده من الجياد ويفرى كل طريق من الوهاد والنجاد بزاد اليراع والمداد ليشاهد الناس مَنْ تُداركه العناية الإلٰهية وأخذ بيده اليد الصمدية ومن كان يزعم نفسه أنه هو العالم الربّانى فليس عليه بعزيز أن يكتب تفسير السبع المثانى مع رعاية مُلح الادب وشوارد المعانى ثم إنى أرخيتُ له الزمام كل الإرخاء ووسّعتُ له الكلامَ لتسهيل الإنشاء وكتبتُ من قبلُ فى صحيفةٍ أشعتُها ونميقةٍ إليه دفعتها أن ذالك الرجل الغُمْرَ إن لم يستطع أن يتولّى بنفسه هذا الامر فله أن يُشرك به من العلماء الزمر أو يدعو من العرب طائفة الادباء أو يطلب من صلحاء قومه همّةً

प्राप्ति के लिए अपने उच्च नस्ल के घोड़ों को इस मुक़ाबले की दौड़ में थका दे और ऊँचे-नीचे के समस्त मार्गों को अपनी क़लम और स्याही के द्वारा तय करे ताकि लोगों को ज्ञात हो जाये कि ख़ुदा की कृपा किसके साथ है और बेनियाज़ी (निस्पृह्यता) के हाथ ने किस की सहायता की है। और उस व्यक्ति के लिए जो रब्बानी विद्वान होने का दावा करता है यह कुछ मुश्किल नहीं कि वह साहित्य की लावण्यता, एवं नए-नए अर्थों को दृष्टिगत रखते हुए सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर लिखे। फिर मैंने उस (मेहर अली) के लिए लगाम को पूर्ण रूप से ढीला छोड़ दिया और उसके लिए मैंने वार्तालाप में गुंजायश रखी ताकि वह सरलता से लिख सके। मैंने अपने इश्तिहार जो मैं प्रकाशित कर चुका हूं और पत्र जो मैं उसे भिजवा चुका हूं पहले ही यह लिख दिया था कि अगर यह नादान व्यक्ति इस बात का स्वयं सामर्थ्य नहीं रखता तो उसे अधिकार है कि विद्वानों का एक समूह अपने साथ मिला ले या अरब से साहित्यकारों का एक समूह बुला ले या अपनी क़ौम के नेक लोगों से इस कठिन कार्य हेतु हिम्मत और दुआ का निवेदन करें। यह बात मैंने केवल इसलिए कही थी कि ताकि लोग यह जान लें कि यह सब मूर्ख हैं और इनमें से कोई भी इस प्रकार

و دعـاءً لهـذه الـلاواء ومـا قلـتُ هـذا القـول إلّا ليعلـم النـاس أنـهم كلـهم جاهلـون ولا يسـتطيع أحـدٌ منـهم أن يكتـب كمثـل هـذا ولا يقـدرون وليـس مـن الصـواب أن يُقـال أن هـذا الرجـل المدعـو كان عالمًـا فى سـابق الزمـان وأمّـا فى هـذا الوقـت فقـد انعـدم علمـه كثلـج ينعـدم بالذوبـان ونسـج عليـه عناكـب النسـيان فـإن العلـم الذى ادّعـاه وحفظـه ووعـاه وقـرأه وتـلاه لا بـدّ أن يكـون له هـذا العلـم كَـدَرٍّ ربّـاه أو كسـراج أضـاء بيتـه وجَـلّاه فكيـف يـزول هـذا العلـم بهـذه السـرعة ويخلـو كظـرف مُنثلـمٍ وعـاء الحافظـة وتنـزل آفـة مُنْسـية عـلى المـدارك والجنـان حـتّى لا يبقـى حـرف عـلى لوحهـا إلى هـذا القـدر القليـل مـن الزمـان وكيـف تهـبّ صراصـر الذهـول عـلى

की तफ़सीर लिखने की योग्यता एवं सामर्थ्य नहीं रखता। और यह कहना उचित नहीं होगा कि यह व्यक्ति जिसे मुक़ाबले का निमन्त्रण दिया गया है वह पिछले ज़माने में तो विद्वान था किन्तु इस समय बर्फ के पिघल जाने की भांति उस का ज्ञान समाप्त हो गया है। और यह कि उस पर विस्मरण की मकड़ियों ने जाले बना दिए हैं क्योंकि वह ज्ञान जिस का वह दावेदार है और जिसे उसने याद किया और सुरक्षित रखा और लगातार पढ़ता रहा, आवश्यक था कि वह ज्ञान उसके लिए मां के दूध के समान होता है जिसने उसकी परवरिश की या ऐसे दीपक के समान होता जिसने उसके घर को ख़ूब रोशन किया और उसे ज़िन्दगी प्रदान की। फिर कैसे संभव है वह ज्ञान इतनी जल्दी नष्ट हो जाए और दिमाग़ छेद किए हुए बर्तन के समान ख़ाली हो जाए और किस प्रकार संभव है कि होश और दिल पर भूलने की आफ़त आ पड़े कि इतने थोड़े समय में दिल की तख़्ती पर एक शब्द भी शेष न रहे और वह ज्ञान जो जान जोखिम में डालकर लंबे संघर्ष के बाद प्राप्त किए गए हों उन पर भूलने की तेज़ हवा किस प्रकार चल सकती है। और यदि हम यह मान भी लें कि भूलने की आफ़त ने उसके ज्ञान के वृक्ष को जड़ से उखाड़ फेंका है और अभाव की बिजलियां उसकी

علـوم كُسـبت بشـق النفـس والقحـول۔ ولـو فرضنـا أنّ آفـة النسيان أجاح شجرة علمه من البنيان وسقطت على زهر درايتـه صواعـق الحرمـان فكيـف نفـرض أن هـذا البـلاء ورد عـلى ألـوف مـن العلمـاء الذيـن جُعلـوا له كالشـركاء۔ وأُشـرِكوا في وزره كالـوزراء بـل أُذن له أن يطلـب كل مـا استيسـر له مـن الادبـاء لعـلّه يكتـب قـولًا بليغـا ولا يتيـه كالناقـة العشـواء ثـم مـن المُسَـلّم أن الله يُـربّي عقـول الصالحـين ويُسـعدهم بالهدايـة إلى طـرق الروحانيين۔ ويُذكّرهـم إذا مـا ذهلـوا معـارف كلام الله القـدّوس ويُنـزل السـكينة عنـد الزلـزال عـلى النفـوس ويؤيّدهـم بـروحٍ منـه ويُعضـد بالإعانـة عـلى الإبانـة ويتـولى أمورهـم ويُميّزهـم بالحصـات والرزانـة ويصرفـهم

बुद्धिमत्ता की कलियों पर गिर गई हैं किन्तु हम यह कैसे मान लें कि भूलने की यह बला उन हज़ारों विद्वानों पर भी आ पड़ी है जो उसके सहायकों के समान ठहराए गए और उसके बोझ उठाने में बतौर सहायक सम्मिलित हैं बल्कि उसे तो यह भी अनुमति दी जा चुकी है कि जितने भी साहित्यकार उसे उपलब्ध हो सकें वह उन्हें बुला ले। शायद इस प्रकार वह कोई उच्चकोटि की तहरीर लिख सके और अंधी ऊँटनी के समान इधर उधर भटके न। फिर यह मानी हुई बात है कि अल्लाह नेक लोगों की बुद्धि को बढ़ाता है और रूहानी लोगों के मार्गों की ओर मार्गदर्शन करके सौभाग्यशाली बनाता है और जब कभी भी ख़ुदा-ए-क़ुद्दूस के पवित्र कलाम के रहस्य उन्हें भूल जाएं तो वह उन्हें याद दिला देता है। और कठिनाइयों के समय उनके दिलों को सांत्वना देता है और रुहुल क़ुदुस (फ़रिश्ते) के द्वारा उनकी सहायता करता है और वर्णन के समय अपने समर्थन द्वारा उनकी सहायता करता है और उनके समस्त कार्यों का संरक्षक हो जाता है और बुद्धि एवं समर्थन के द्वारा उन्हें (अन्यों से) विशिष्ट कर देता है और उन्हें मूर्खता से दूर रखता है। और पथ भ्रष्टता से उन्हें बचाता है वर्णन एवं ज्ञान में

من السفاهة ويَعصمهم من الغواية ويحفظهم فی الرواية والدراية فلا يقفون موقف مندمةٍ ولا يرون يوم تندّم ومنقصة ولا تغرب أنوارهم ولا تخرب دارهم منابعهم لا تغور وصنائعهم لا تبور ويُؤَيّدُون فی كل موطن ويُنصرون ويُرزَقون من كل معرفة ومن كل جهل يُبعدون ولا يموتون حتی تُكَمّل نفوسهم فإذا كُمّلت فإلی ربهم يُرجعون فإن اللّٰه نورٌ فيميل إلی النور وعادته البَدور إلی البدور ولمّا كانت هذه عادة اللّٰه بأوليائه وسُنّته بعباده المنقطعين وأصفيائه لزم أن لا يری عبده المقبول وجه ذلّة ولا يُنسب إلی ضعفٍ وعلّة عند مقابلةٍ من أهل ملّة ويفوق الكل عند تفسير القرآن بأنواع علم ومعرفة وقد قيل أن الولیّ يخرج من

स्वयं उनकी सुरक्षा करता है। अत: वह (पवित्र लोग) निंदा के स्थान पर खड़े नहीं होते और न अपमान और घाटे का दिन देखते हैं। उनकी प्रकाश धीमे नहीं पड़ते और न उनके घर वीरान होते हैं। उनके झरने सूखते नहीं और न उनके कारोबार नष्ट होते हैं। उनकी प्रत्येक मैदान में समर्थन एवं सहायता की जाती है और उन्हें प्रत्येक प्रकार का अध्यात्म ज्ञान प्रदान किया जाता है और वह प्रत्येक अज्ञानता से दूर रखे जाते हैं। और वे उस समय तक नहीं मरते जब तक कि उनके नफ़्सों को उत्कृष्टता न प्रदान की जाए और जब वह पूर्ण कर दिए जाते हैं तब वे अपने रब्ब की ओर लौटाए जाते हैं। अल्लाह नूर है इसलिए वह नूर की ओर झुकाव रखता है उसका दस्तूर यह है कि जो लोग पूर्ण होते हैं वह उनकी ओर लपकता है। चूँकि अल्लाह की आदत और सुन्नत अपने औलिया और अपने पवित्र बन्दों के प्रति यही निर्धारित है तो फिर यह निश्चित है कि उसका प्रिय बन्दा रुसवाई का चेहरा न देखे और किसी धर्मावलम्बी से मुक़ाबले के समय उसकी ओर कोई निर्बलता एवं रोग संबधित न किया जा सके। और वह क़ुर्आन की तफ़सीर करते समय अपने विभिन्न प्रकार के ज्ञान मारिफ़त के

القرآن والقرآن يخرج من الولى وإنّ خفايا القرآن لا يظهر
إلَّا على الذی ظهر من يَدَيِ العليم العلیّ فإن كان رجلٌ ملك
وحده هذا الفهم الممتاز فمثله كمثل رجل أخرج الرُكاز
وما بذل الجهد وما رأى الارتماز فهو ولیّ الله وشأنه أعظم
وذيله أرفع من همز الهمّاز ولمز اللمّاز وما أُعطی
هذا الولیّ الفانی من معارف القرآن كالجَهَاز فهو معجزة
بل هو أكبر من كل نوع الإعجاز وأیّ معجزة أعظم من
اعجازٍ قد وقع ظل القرآن وشابه كلام الله فی كونه أبعد
من طاقة الإنسان وليس هذا الموطن إلَّا للمتّقين ولا تُفتح
هذه الابواب إلَّا على الصّالحين ولا يمسّه إلَّا الذی كان من

द्वारा सब पर श्रेष्ठता ले जाए। यह निश्चित रूप से कहा गया है कि वली क़ुर्आन से और क़ुर्आन वली से प्रकट होता है और यह कि क़ुर्आन के छिपे हुए खज़ाने (संकेत एवं बारीकियाँ) केवल उसी व्यक्ति पर प्रकट होते हैं जो ख़ुदा-ए-अलीम व बरतर के सामर्थ्य से प्रकटन में आया हो। फिर यदि कोई व्यक्ति ऐसा हो जो अकेला ही ऐसा प्रसिद्धि एवं विख्याती का मालिक हो तो वह उस व्यक्ति के समान है जो बिना किसी परिश्रम एवं व्याकुलता के एक छिपा हुआ ख़ज़ाना बाहर निकाल लाया हो तो वह व्यक्ति वलीउल्लाह है और उसकी शान महान है और उसका दामन प्रत्येक दोष लगाने वाले के दोष और प्रत्येक ग़लती निकालने वाले की ग़लती से ऊपर है और वह क़ुर्आनी रहस्यात्मक ज्ञान जो इस अल्लाह के मार्ग में फ़ना होने वाले वली को यात्रा सामग्री के तौर पर प्रदान किए जाते हैं वह एक चमत्कार होते हैं बल्कि प्रत्येक चमत्कार से श्रेष्ठ होते हैं। बताओ कि उस चमत्कार से बढ़कर और कौन सा चमत्कार हो सकता है जो क़ुर्आन का प्रारूप हो और मानवीय शक्तियों से ऊपर होने के कारण ख़ुदा के कलाम से समानता रखता हो और यह स्तर केवल संयम रखने वालों के लिए विशिष्ट है और यह दरवाज़े केवल पवित्र लोगों के लिए खोले

المُطَهّرين وإن الله لا يهدى كيد الخائنين الذين يجعلون المكائد منتجعًا والاكاذيب كهفًا ومرجعًا ولهم قلوبٌ كلَيْلٍ أردف أذنابه وظلام مدّ إلى مدى الابصار أطنابه لا يعلمون ما القرآن وما العلم والعرفان ومن لم يعلم القرآن وما أوتى البيان فهو شيطان أو يُضاهى الشيطان وما عرف الرحمان وما كان لفاسق أن يبلغ هذه المنية العليّة ولو شحذ إليها النفس الدنيّة بل هو يختار طريق الفرار خوفًا من هتك الاستار وظهور العثار وكذالك فعَلَ هذا الرجل الكائد والْمُزَوّرُ الصائد فانظروا كيف زوّر وأرى التهوّر وقال لبّيْتُ الدعوة وما لبّى وقال عبّيتُ

जाते हैं। पवित्र किए हुए लोगों के अतिरिक्त कोई और इन क़ुर्आनी रहस्यों को छू भी नहीं सकता और अल्लाह ख़यानत करने वालों की योजनाओं को कभी सफ़ल नहीं करता। जिन्होंने छल को अपनी जीविका बनाया और झूठी बातों को अपना आश्रय बना रखा है। उनके हृदय उस रात के समान हैं जिसने अपना दामन फैला दिया है और उस अँधेरे के समान हैं जिसने दृष्टि की सीमा तक अपनी रस्सियाँ बाँध रखी हों। वे नहीं जानते कि क़ुर्आन क्या है और ज्ञान और विवेक क्या चीज़। जो व्यक्ति क़ुर्आन का ज्ञान नहीं रखता और उसे वर्णन का सामर्थ्य नहीं दिया गया तो ऐसा व्यक्ति या तो शैतान है या शैतान का समरूप और उसने ख़ुदा-ए-रहमान को नहीं पहचाना। और किसी पापी की क्या मजाल कि उसे उस पवित्र उद्देश्य तक पहुँच हो, चाहे वह अपने दरिद्र नफ़्स को इस की ओर कितना ही तीव्र करे। बल्कि वह झूठा तो अपने रहस्यों के खुल जाने और दोषों के प्रकटन के भय से भागने का मार्ग चुनता है। ऐसा ही इस मक्कार व्यक्ति और झूठे शिकारी ने किया। देखो! उसने कैसे झूठ को सुशोभित किया और बेबाकी दिखाई और कहा कि मैंने चेलैंज स्वीकार किया जबकि उसने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने यह भी कहा कि मैंने इस मुक़ाबले हेतु लश्कर तैयार

العسكر للخصام وما عبّى وما بارز بل خدع وخبّ وإلى جُحرِهِ أبّ وتراءى نَحيفا ضعيفا وكان يُرى نفسه رجلا ببّا وأخلد إلى الارض وشابه الضبّ وما صعد وما ثبّ وجمع الاوباش وما دعا الربّ وحقّرنى وشتم وسبّ وتبع الحيَل وما صافى الله وما أحبّ وما قطع له العُلَق وما جبّ۔ وقال إنى عالم والآن نجم علمه أزبّ وكلّ ما دبّر تبّ وإن كان عالمًا فأى حرج على عالم أن يُفسّر سورة من سور القرآن ويكتب تفسيره فى لسان الفرقان بل يُحمد لهذا ويُثنى عليه بصدق الجنان ويُعلَم أنه من رجال الفضل والعلم والبيان ويُشكر بما ينفع الناس من معارفٍ عُلّم

कर रखा है जबकि उसने तैयार नहीं किया। वह मुक़ाबले के मैदान में नहीं निकला बल्कि धोखा दिया और छल किया और अपने बिल में वापिस चला गया। वह कमज़ोर और असहाय सिद्ध हुआ जबकि वह अपने आपको विशालकाय व्यक्ति प्रकट करता था। वह ज़मीन की ओर झुक गया और गोह के समान हो गया। न वह बुलंदी की ओर चढ़ा और न उसने स्थिरता दिखाई। उसने उपद्रवी लोगों को इकठ्ठा किया और रब्ब को न पुकारा और मेरा अपमान किया और गालियाँ दीं। उसने बहाने बनाए और अल्लाह से सच्चाई और प्रेम का संबंध नहीं रखा। उसने पवित्र ख़ुदा के लिए अल्लाह के अतिरिक्त उपास्यों से संबंध पृथक एवं समाप्त न किए और उसने कहा कि वह विद्वान है जबकि उसके ज्ञान का सितारा डूब चुका है। उसने जो भी योजना बनाई वह नष्ट हुई। यदि वास्तव में वह विद्वान है तो एक विद्वान के लिए तो क़ुर्आन की सूरतों में से किसी एक सूरह की तफ़सीर करने और क़ुर्आन की भाषा में उसकी तफ़सीर लिखने में क्या कठिनाई है? बल्कि ऐसा करने से तो उसका सच्चे दिल से सम्मान एवं प्रशंसा की जाती और यह ज्ञात हो जाता कि वह ज्ञानी तथा वाग्मि व्यक्ति है। और ख़ुदा-ए-रहमान की ओर सिखाये गए उन

من الرحمان۔ فلذالك أقول أنه من كان يدّعى ذُرَى المكان
المنيع فليبذل الآن جهد المستطيع و يُثبّت نفسه كالضليع
ولا شكّ أن إظهار الكمال من سيرة الرجال وعادة الابطال
لينتفع به الناس وليخرج به مسكينٌ من سجن الضلال
ولا يرضى الكامل بأن يعيش كمجهول لا يُعرف ونكرة لا
تُعَرّف وإن الفضل لا تتبيّن إلّا بالبيان ولا يُعرف الشمس إلّا
بالطلوع على البلدان وإنى ألزمتُ نفسى أن أكتب تفسيرى
هذا فى إثبات ما أُرسِلتُ به من الحضرة وأن أفتح هذه
الابواب بمفاتيح الفاتحة مع لطائف البيان ورعاية الملح
الادبية والتزام الفصاحة العربية ومن المعلوم أن نمق

अध्यात्म रहस्यों से लोगों को लाभान्वित करने के कारण उसका धन्यवाद किया जाता। इस कारण मैं कहता हूँ कि जो व्यक्ति एक ऊँचे एवं प्रतिष्ठित स्तर की चोटी पर स्थित होने का दावेदार है उसे चाहिए कि यथा सामर्थ्य प्रयास करे और अपने आपको एक सुदृढ़ और उत्कृष्ट घोड़े के समान सिद्ध करे। निश्चित रूप से श्रेष्ठता का प्रकटन मर्दों का चरित्र और बहादुरों का स्वभाव है। ताकि इस मार्ग से लोग उससे लाभान्वित हों और ताकि उसके द्वारा कोई असमर्थ बंदा अंधकार के कारागार से बाहर निकल आए। कोई परिपूर्ण मर्द यह बर्दाश्त नहीं करेगा कि वह एक गुमनाम व्यक्ति जैसा जीवन व्यतीत करे और वह ऐसा अनभिज्ञ हो जो अभिज्ञ न बन सके। उच्च वर्णन शैली के बिना कोई श्रेष्ठता प्रमाणित नहीं हो सकती और सूरज की पहचान धरती पर रोशनी भेजने के अतिरिक्त संभव नहीं। मैंने स्वयं पर अनिवार्य कर लिया है कि मैं हज़रत बारी (ख़ुदा तआला) से मिलने वाले संदेश के हक़ में अपनी तफ़सीर लिखूँ और सूक्ष्म वर्णन शैली और साहित्यिक चमक-दमक की रियायत और अरबी भाषा की वाग्मिता के साथ सूरह फ़ातिहा की चाबी से इन दरवाज़ों को खोलूं। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि धर्म की सूक्ष्मताएं और ज्ञान के संकेत और संकेतों

الدقائق الدينية والرموز العلميّة والإيماضات والإشارات مع توشيح العبارات وترصيع الاستعارات والتزام محاسن الكنايات وحسن البيان ولطائف الإيماءات أمرٌ قد عُدّ من المعضلات وخطبٌ حُسبَ من المشكلات وما جمع هذين الضدّين إلّا كتاب الله مظهر الآيات البينات وماحی الاباطيل والجهلات۔ وإنّ الشعراء لا يملكون أعنّة هذه الجياد۔

فتنتشر كلماتهم انتشار الجراد۔ ولكنی سألتُ الله فأعطانی۔ وجئته عطشان فأروانی فنحن الموفّقون ونحن المؤيّدون تُؤاتينا الاقلام كأنها السهام والحسام ولنا من ربّنا كلام تام وظلّ ظليل۔ فكلّ رداء نرتديه

को सुसज्जित इबारतों, गहनों से जुड़े हुए रूपकों, उच्च संकेतों, उच्च वर्णनों और सूक्ष्म इशारों का प्रबन्धन तथा अनिवार्यता के साथ लिखना एक बहुत ही कठिन तथा दुर्लभ कार्य गिना जाता है। और इन दो विपरीत बातों को केवल अल्लाह तआला की पुस्तक ने ही जो स्पष्ट निशानों की द्योतक और झूठी तथा मूर्खतापूर्ण बातों को मिटाने वाली है, एकत्रित किया है। कवि (वाग्मिता के) इन उत्तम घोड़ों की बागडोर के मालिक नहीं हो सकते।

उनके शब्द तो केवल विचलित टिड्डियों के समूह के समान बिखरे होते हैं किंतु मैं वह हूँ कि अल्लाह से जो मांगा वह उसने मुझे प्रदान किया। मैं उसके पास प्यासा आया तो उसने मुझे तृप्त कर दिया। हम अल्लाह से क्षमता प्राप्त एवं समर्थन प्राप्त हैं। क़लम हमारा ऐसा साथ देते हैं मानो कि वह तीर और तलवार हों, हमें अपने रब्ब से स्पष्ट वचन एवं घना साया प्राप्त है। जो चादर भी हम ओढें वह खूबसूरत लगती है। हमारा वह स्वभाव है कि जिस तक पहाड़ों की भी पहुँच नहीं। और वह शक्ति प्राप्त है जिसे बड़े से बड़ा बोझ भी कम नहीं कर सकता। हमारी वह शान है कि जिसे ज़माने के हालात बदल नहीं

جمیل ولنا جبلّةٌ لا تبلغها الجبال و قوّةٌ لا تُعجزها الاثقال وحالٌ لا تُغَیِّرها الاحوال۔ و ربٌّ لا تُرَدّ من حضرته الآمال فحاصل الکلام أنی من اللّٰہ و کلامی من ھذا العلّام وإنی کتبتُ دعوای ودلائلها فی ھذا الکتاب لِاسعف الخصم بحاجته وأُنجّیه من الاضطراب۔ فإن الخصم کان یدعونی إلی المباحثات بعد ما دعوته لنمق التفسیر فی حلل البلاغة ومحاسن الاستعارات فلمّا لویتُ عذاری وتصدّیت لاعتذاری من المناظرات حمل إنکاری علی فراری من ھذه الغزاة وما کان ھذا إلّا کیدًا منه وحیلةً للنجاة لیستعصم من اللائمین واللائمات و کان یعلم أن إعراضی کان لعهدٍ سبق وما کنتُ کعبدٍ

सकते और हमारा वह रब्ब है कि जिस की चौखट से उम्मीदें रद्द नहीं की जातीं। निष्कर्ष यह है कि मैं अल्लाह की ओर से हूँ और मेरा वर्णन भी उसी सर्वज्ञ ख़ुदा की ओर से है। मैंने इस पुस्तक में अपना दावा और उसके तर्क लिखे हैं ताकि मैं अपने मुक़ाबले पर आने वाले की जो आवश्यकता है उसे पूर्ण करूँ और उसे बेचैनी से मुक्ति दिलाऊँ। क्योंकि बाद इसके कि मैंने उसे उत्तम वर्णन शैली और उपमाओं की विशेषताओं द्वारा तफ़सीर लिखने का आमंत्रण दिया तो वह इसके बदले में मुझे शास्त्रार्थ के लिए बुलाने लगा। फिर जब मैंने शास्त्रार्थ से इन्कार किया और अपनी आपत्ति प्रस्तुत की तो उसने मेरे इस इन्कार को इस जंग से फ़रार समझा और यह उसकी ओर से केवल छुटकारा पाने के लिए एक छल और कपट था ताकि वह निंदा करने वाले मर्द और औरतों की निंदा से बच जाए। वह ख़ूब जानता था कि मेरा शास्त्रार्थ से पीछे हटना एक पुराने वादे के कारण था और मैं किसी भागे हुए ग़ुलाम के समान नहीं। फिर भी उसने उन झूठे बहानों के साथ भागने का मार्ग ढूंढा ताकि लोग यह समझें कि यह बड़ा बहादुर मनुष्य तथा तर्कों को पूर्ण करने वाला है। अत: हमने अब यह

أبــق ولكنــه طلــب الفــرار بهــذه المعاذيــر الكاذبــة لعــل
النــاس يفهمونــه بطــل المضمــار ومُتــمّ الحجــة فأردنــا الآن
أن نُعطيــه ماســأل ولا نــردّه بالحرمــان ونُجَــلّي مطلــع صدقنــا
بنــور البرهــان ونقطــع معاذيــره كلهــا بسـيف البيــان لعــلّ
الله يجلــو بــه صــدأ الاذهــان ويُفَــهّم مــا لــم يفهمــوه قبــل
هــذا الميــدان فهــذا هــو السـبب الموجــب لنمــق الدعــوى
والدلائــل لئــلا يبقــى عــذر للســائل وإن هــذا التفســير جمــع
المباحثــات مــع اللطائــف والنِــكات فاليــوم أدرك الخصــم
كل مــا طلــب منّــا فى حُلــل المناظــرات مــع أنــه تــرك طــرق
الديانــات وتصــدى للامــر بأنــواع الاهتضــام والخيانــات
وبقــى دَيْنُنــا فعليــه أن يقضــى الدَّيْــن كَــرَدّ الامانــات وإنى

इरादा कर लिया है कि उसकी इस माँग को पूरा करें और उसे वंचित न लौटाएं। और अपने सच्चाई के आसमान को नूर की सत्यता से रोशन कर दें और वर्णन की तलवार से उसके समस्त बहानों को काट कर रख दें। शायद इसी प्रकार अल्लाह तआला (उनके) दिमाग के ज़गों को दूर कर दे और इस मैदान में उतरने से पहले वह बात जो वह समझ न सके थे वह उन्हें समझा दे। अत: यह वह कारण है जो दावा एवं तर्क लिखने का कारण बना कि किसी भी प्रश्नकर्ता के लिए कोई संशय बाकी न रहे। इस तफ़सीर ने रहस्यों एवं बिन्दुओं को अपने अंदर समेटा हुआ है। अत: आज शत्रु ने वह सब कुछ प्राप्त कर लिया है जो शास्त्रार्थ के रूप में वह हम से मांग रहा है। बावजूद इसके कि उसने सत्यता के समस्त तरीकों को त्याग दिया है और इस संबंध में हर प्रकार से अधिकारों के हनन और ख़यानत का व्यवहार किया है हमारा क़र्ज़ शेष हैष अत: उस पर अनिवार्य है कि वह अमानतों को लौटाने के समान इस क़र्ज़ को पूर्ण करे। मैं अल्लाह से यह प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि मैं शास्त्रार्थ की जगह पर नहीं जाऊंगा और मैं इस प्रतिज्ञा को अपनी पुस्तकों में प्रकाशित कर चुका हूँ।

عاهـدتُ الله أن لـن أحضـر مواطـن المباحثـات وأشـعتُ هـذا العهـد فى التأليفـات فمـا كان لى أن أنكُـث العهـود وأعصـى الـربّ الـودود فلاجـل ذالـك أغلقـتُ هـذا البـاب ومـا حضـرت الخصـم للبحـث ولـو عيّبـنى واغتـاب وإنى كلّمتـه كالخليـط فكَلِمـنى بالتخليـط وقـد دعوتُـه مـن قبـل ففرّمـن شـوكتى ثـم دعـوتُ فهابَـهُ هيبـتى وهـذه ثالثةليتـم عليـه حجّـة الله وحُجّـتى إنـه مـال إلى الزمـر وملنـا إلى الذمـار وإن المعـارف منّـا كبعـوث جُمّـروا عليالثغـور مـن قِبَـلِ ملـك الديـار ثـم اعلمـوا أن رسـالتى هـذه آيـة مـن آيـات الله رب العالمـين وتبصـرة لقـوم طالبـين وإنّهـا مـن ربّى حجـة قاطعـة وبرهـان مبـين كذالـك ليذيـق الافّاكـين

अत: मेरे लिए संभव न था कि मैं वादा ख़िलाफ़ी करूँ और अपने अत्यन्त प्रेम करने वाले रब्ब की अवज्ञा करूँ। इस कारणवश मैंने शास्त्रार्थ का दरवाज़ा बंद कर दिया और मेरी आलोचना एवं निंदा के बावजूद मैं बहस करने के लिए अपने विपक्षी के पास न आया। मैंने उसके साथ एक मेलजोल रखने वाले मित्र के समान बातचीत की, किंतु उसने अभद्रता से मुझे ज़ख्मी किया। मैंने पहले भी एक बार उसे निमन्त्रण दिया था किन्तु मेरी प्रतिष्ठा के कारण वह भाग गया। फिर मैंने उसे पुन: निमन्त्रण दिया किंतु वह मेरे रौब से डर गया। और यह तीसरी बार है ताकि उस पर अल्लाह की हुज्जत और मेरी हुज्जत पूर्ण हो जाए। वह निचाई की ओर, और हम आधिकारिक कर्तव्यों की ओर प्रेरित हुए। हमारी ओर से प्रस्तुत किए गए ज्ञान की हैसियत ऐसी है जैसे किसी मुल्क के बादशाह की ओर से सरहदों पर सेना तैनात कर दी जाए। फिर यह भी जान लो कि मेरी यह पत्रिका समस्त संसार के रब्ब के निशानों में से एक निशान है और सत्य के अभिलाषियों के लिए ज्ञानवर्धक संदेश। यह मेरे रब्ब की ओर से एर पूर्ण तर्क और स्पष्ट दलील है। यह इसलिए है कि झूठों को किसी क़दर उनके गुनाहों का

قليلا من جزاء ذنوبهم ويُرِی الناس ما ترشّح من ذَنوبهم ويُجنّبهم بمعجزة قاهرة ويزيل اضطجاع الامن من جنوبهم ويستأصل راحة كاذبة من قلوبهم والحق والحق أقول إن هذا كلام كأنه حسام وإنه قطع كل نزاع وما بقى بعده خصام ومن كان يظنّ أنه فصيح وعنده كلام كأنه بدر تام فليأت بمثله والصمتُ عليه حرام وإن اجتمع آباء هم وأبناء هم وأكفاء هم وعلماء هم وحكماء هم وفقهاء هم على أن يأتوا بمثل هذا التفسير فى هذا المُدى القليل الحقير لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعضٍ كالظهير فإنى دعوتُ

स्वाद चखाए और लोगों को यह दिखाए कि उनके बर्तन से क्या टपका हुआ है। और उनकी पसलियों को ज़बरदस्त चमत्कार से तोड़ दे और वह अपने पहलुओं पर चैन से लेट न सकें और उनके दिलों की झूठी खुशी का उन्मूलन कर दे। यह सत्य है और मैं सत्य ही कहता हूं कि यह कलाम एक नंगी तलवार की तरह है और उस ने प्रत्येक झगड़े को काट कर रख दिया है और उसके बाद कोई झगड़ा शेष नहीं रहा। जो व्यक्ति यह विचार करता है कि वह सुवक्ता है और उसके पास पूर्ण चन्द्रमा जैसा कलाम है तो वह इसका उदाहरण लाए और ख़ामोश रहना उस पर हराम होगा। और यदि उनके पूर्वज और उनकी औलादें, उनके हमराही, उनके विद्वान, उनके बुद्धिजीवी उनके फुक्हा सब एकत्र हो जाएं कि वह मामूली और थोड़ी अवधि में लिखी जाने वाली इस तफ़सीर का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें तो वह ऐसी तफ़सीर कदापि प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे यद्यपि उनमें से कुछ-कुछ के सहायक हों। मैंने इस विषय में दुआ की और मेरी दुआ निःसंदेह स्वीकृत है। इसलिए कोई लिखने वाला न वृद्ध न युवा, कदापि इस तफ़सीर का उत्तर देने का सामर्थ्य नहीं पायेगा। यह तफ़सीर निस्सन्देह ज्ञान का ख़ज़ाना और उसका शहर है और सच्चाइयों का आधार है तथा रचना के दृष्टिकोण से अत्यंत

لذالك و إن دُعائى مُستجاب فلن تقدر علىٰ جوابه كتّاب لا شيوخ ولا شاب وإنه كنز المعارف ومدينتها وماء الحقائق وطينتها وقد جاء ألطف صُنعًا وأرق نسجًا وأكثر حكمًا وأشرف لفظًا وأقلّ كلمًا وأوفر معنًى وأجلى بيانًا وأسنىٰ شأنًا وما كتبتُه من حولى وإنى ضعيف وكمثلى قولى بل الله وألطافه اغلاق خزائنه ومن عنده أسرار دفائنه جمعت فيه أنواع المعارف ورتّبت وصفّفت شوارد النكات وألجمت من عرفه عرف القرآن ومن حسبه كذبًا فقد مان فيه باكورة العرفان ودقائق الفاتحة والفرقان وفيه بلاد الاسرار

उत्कृष्ट, हिकमतों से सुशोभित, शब्द अत्यंत उच्च, कम वचन किन्तु अर्थों से परिपूर्ण, वर्णन स्पष्ट और आलीशान। मैंने इस तफ़सीर को अपने सामर्थ्य से नहीं लिखा मैं तो एक कमज़ोर बंदा हूँ और इसी प्रकार मेरा वर्णन भी। किन्तु यह सब कुछ अल्लाह और उस की अनुकंपा हैं कि इस तफ़सीर के ख़ज़ानों की चाबियाँ मुझे दी गई हैं और फिर उसी की ओर से मुझे उसके छुपे हुए खज़ानों के रहस्य प्रदान किए गए हैं। मैंने उसमें विभिन्न प्रकार के अध्यात्म ज्ञान एकत्र किए और उन्हें क्रमबद्ध किया है असामान्यों को पंक्तिबद्ध खड़ा किया और उन्हें लगाम पहनाई जिसने उसे पहचान लिया उसने पवित्र क़ुर्आन को पहचान लिया। और जिसने उसको झूठा विचार किया उसने झूठ बोला। इसमें अध्यात्म ज्ञान के नए और ताज़ा फल हैं और सूरह फ़ातिहा और फ़ुर्क़ान-ए-हमीद की सूक्ष्मताएं हैं। इस में संकेतों एवं रहस्यों के शहर और क़िले (आबाद) हैं। सत्यता के मैदान एवं पहाड़ हैं। दूरदर्शिता के चश्मे और अनुभूति की आँखें हैं। तर्कों के घुड़सवार और उनकी सवारियां हैं। यह सब कुछ उम्मूल किताब (सूरह फ़ातिहा) की बरकतों में से है। अपने रब्बे तव्वाब के समझाने के बाद मैं उनसे परिचित हुआ। यह वह सूरत है कि जिस के मैदान को सवारियों को तेज़ दौड़ा कर और थका करके भी

وحصونها وسهل الحقائق وحزونها وعيون البصيرة
وعيونها وخيل البراهين ومتونها وذالك من بركات أمّ
الكتاب وما اطّلعتُ عليها إلّا بعد تفهيم ربّي التوّاب
فإنها سورة لا تطوى عرصتها بانضاء المراكب ولا
يبلغ نورَها نورُ الكواكب ولمّا كان الظالمون نسبونی
إلى الهزيمة أعوزنى فريتهم هذه إلى تفسير سورة
الفاتحة لاخلّص نفسى من النواجذ والانياب فإن
صول الكلاب أهون من صول المفترى الكذّاب وهذا
من فضل الله ورحمته ليكون آية للمؤمنين وحسرة
على المنكرين وحجّة على كل خصم إلى يوم الدين
وهدًى للمتقين وليعلم الناس أن الفوز بصدق المقال

तय नहीं किया जा सकता। सितारों की रोशनी भी उसके नूर तक नहीं पहुंच सकती। जब उन ज़ालिमों ने मेरी ओर हार को मन्सूब किया तो उनके इस झूठ ने मुझे (सूरह फ़ातिहा) की तफ़सीर (लिखने) पर मजबूर किया ताकि मैं अपने आप को दाढ़ों और कुचलियों से निजात दिलाऊं क्योंकि कुत्तों का हमला एक मुफ़्तरी तथा अत्यन्त झूठे के हमले से बहुत कम होता है। यह (तफ़सीर) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से है ताकि यह मोमिनों के लिए एक निशान और इन्कार करने वालों के लिए हसरत और प्रत्येक मुक़ाबला करने वाले के लिए क़यामत के दिन तक हुज्जत और डरने वालों के लिए हिदायत हो और ताकि लोगों को यह ज्ञात हो जाए कि कामयाबी सच्चाई के द्वारा प्राप्त होती है न कि मूर्खों के समान डींगे मारने से। सफ़लता हृदय की पवित्रता से प्राप्त होती है न कि गन्दी और झूठी बातों से। और हालत के सुधार, ज्ञान एवं श्रेष्ठता के हथियार द्वारा प्राप्त होता है न कि झूठ और छल और अभिमान द्वारा। विनाश है उन लोगों के लिए जो छल एवं कपट द्वारा विजय प्राप्त करना चाहते हैं और शिकारी की तरह गुप्त स्थानों पर बैठकर शिकार की घात में लगे हुए हैं। और विजय सर्वश्रेष्ठ

لا بالتصلّف كالجهال والفتح بطهارة البال لا بِعَذِرَةِ الاقوال التى هى كالابوال وصلاح الحال بسلاح العلم والكمال لا بالاحتيال والاختيال فويلٌ للذين قصدوا الفتح بالمكائد ورصدوا مواضعها كالصائد وإن هو إلّا من أحكم الحاكمين وينصر من يشاء ويُكفّل الصالحين فيندمل جريحهم ويستريح طليحهم ولا تركد ريحهم ولا تَخْمُدُ مصابيحهم ومنصوره يُملا من علم الفرقان ولسان العرب كما يُملا الدلو إلى عقد الكرب وإنه أنا ولا فخر وإن دعائى يذيب الصخر وإنّ يومى هذا يوم الفتح ويوم الضياء بعد الليلة الليلاء اليوم خرس الذين كانوا يهذرون وغُلّت أيديهم

निर्णायक ख़ुदा की ओर से ही आती है। वह जिसको चाहता है समर्थन देता है और पवित्र लोगों का सहायक हो जाता है। अत: उनके घायल स्वस्थ होते हैं और उनके थके हुए चैन प्राप्त करते हैं। उनके वैभव का पतन नहीं, न उनके चिराग़ बुझते हैं। अल्लाह के समर्थन प्राप्त को फुर्कान-ए-हमीद और अरबी भाषा के ज्ञान से इस प्रकार भर दिया जाता है जिस प्रकार रस्सी की गाँठ तक पानी से पूरा भरा हुआ डोल और वह मैं हूं और कोई गर्व नहीं। मेरी दुआ पत्थर को मोम कर देती है। मेरा यह दिन अँधकारमय रात के पश्चात विजय तथा प्रकाश का दिन है। आज अभद्र बातें करने वाले गूंगे हो गए और उनके हाथ क़यामत तक के लिए जकड़ दिए गए। मैं उन क़ुर्आनी पृष्ठों के इर्द-गिर्द इस प्रकार घूमता रहा हूं जिस प्रकार एक मांगने वाला गली कूचों का चक्कर लगाता है तो अल्लाह ने मुझे जो चाहा दिखाया और मुझे जो चाहा पिलाया और जिस प्रकार उस ने मेरा नेतृत्व किया उसके अनुसार मैंने उन (क़ुर्आनी) मार्गों को प्राप्त कर लिया और जो मैंने मांगा मुझे प्रदान कर दिया गया और मुझ पर खोला गया और मैं दाखिल हो गया। जो कुछ मैंने लिखा है वह केवल सर्वज्ञानी ख़ुदा के दिव्य शब्दों के कारण

إلىٰ يوم يبعثون وكنتُ أطوف حول هذه الاوراق كسائل يطوف فى السكك والا سواق فأرانى الله ما أرانى وسقانى ما سقانى فوافيتُ دروبها كما هدانى وأُعطى لى ما سألتُ وفُتح علىّ فحللتُ وكل ما رقّمتُ فهو من أنفاس العلام لا من أفراس الاقلام فما كان لى أن أقول إنى أعلم من غيرى أو زاد منهم سيرى ولا أقول أن روحى التفّ بأرواح فتيان كانوا من الادباء أو غالت نفسى جميع نفائس الإنشاء ولا أدّعى أنى انتهيت إلى فناء منتهى الادب أو أكلتُ كل باكورة من المعانى النخب بل دعوتُ مُخدّراته فوافتنى فتياته فقبلهن فتاه مفتّرة شفتاه متهلّلا مُحيّاه فلا تستطلعونى طِلع أديب وما

है न कि क़लमों के घोड़े दौड़ाने से। मेरा यह अधिकार नहीं है कि मेरी यह कहूं कि मैं अन्यों से अधिक विद्वान हूँ या यह कि मेरा प्रयास उन से अधिक है, न मैं यह कहता हूँ कि मेरी रूह उन लोगों में से हूँ जो विद्वान थे न यह कि मैंने सुरुचिपूर्ण लेखन के समस्त विशेषताओं पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर लिया है। न मुझे इस बात का दावा है कि साहित्य के मैदान में मैं पराकाष्ठा तक पहुंचा हुआ हूँ, न यह कि मैंने उत्कृष्ट और चुनिन्दा अर्थों के समस्त नए एवं ताज़ा फल खाए हैं। नहीं बल्कि मैंने पर्दे में रहने वाले साहित्यकारों को दावत दी तो उनके सत्पृवृत्ति रखने वाले मेरे पास आए। अत: उस जवान ने मुस्कुराते हुए होंठों और दमकते चेहरे के साथ उन्हें स्वीकार कर लिया। अत: मुझ से उस विद्वान की ख़बर न पूछो। मैं तो शहर-ए-अदब में एक मुसाफ़िर की भांति हूं जो कुछ तुम मुझसे देखते हो केवल ख़ुदा तआला का विशेष समर्थन है और उसी की ओर से है जिसके समक्ष मैंने अपनी गर्दन रख दी है और अपनी प्रत्येक आवश्यकता उसके समक्ष प्रस्तुत कर दी है। वह लोक-परलोक में मेरा प्रियतम है। निस्संदेह मैं उसका मसीह हूँ। ख़ुदा की सुरक्षा का क़िला मेरी सवारी है और उसकी अनुकंपा

أنا فی بلدة الادب إلّا کغریب و کل ما ترون منی فھو من
تأیید ربی ومن حضرةٍ ألقیتُ بھا جِرانی وحملتُ إلیھا
إربی وإنہ فی العُقبیٰ وھذہ حبّی وإنی مسیحہ وحماری
حمارة حفظہ ولطفہ قتبی ولولا فضل اللّٰہ ورحمتہ
لکان کلامی ککلم حاطب لیل أو کغثاء سیل وواللّٰہ
إنی ما قدرتُ علی ھذا بقریحةٍ وقّادة بل بفضل من اللّٰہ
وسعادة وإن ھذہ المخدرة ما سفرت عن وجھھا بیدی
القصیرة ولکن بفضل اللّٰہ و عنایاتہ الکثیرة فإنہ رأی
الإسلام کسقیم فی موماةٍ فیہ رمق حیاة ساقطًا علی
صلاتٍ کقذائف فلوات وعلاہ صغار وعلیہ أطمار
فأدرکہ کإدراك عھاد لسنةٍ جماد ورحض وجھہ و أزال

मेरी गद्दी है। यदि अल्लाह का फ़ज़्ल एवं उसकी कृपा न होती तो मेरा कलाम रात को ईंधन जमा करने वाले अच्छे या बुरे या सैलाब के कूड़ा-कर्कट के समान होता और ख़ुदा की क़सम मैं इस तफ़सीर के लिखने पर अपनी रोशन तबीयत के कारण समर्थ नहीं हुआ बल्कि यह अल्लाह का फ़ज़्ल और असीम कृपा है। इस पर्दानशीन के चेहरे से पर्दे का हटना मेरे हाथों से नहीं हुआ बल्कि अल्लाह की कृपा और अपार उपकारों से हुआ है क्योंकि उसने देखा कि इस्लाम जंगल में पड़े ऐसे रोगी के समान है जिसमें जिंदगी की कुछ अंतिम साँस शेष हो और जो जंगल की सूखी हुई लकड़ियों के समान पत्थर पर पड़ा हो और तिरस्कृत हो और उसके वस्त्र चिथड़े हों। फिर अल्लाह अनावृष्टि (सूखे) के अवसर पर होने वाली बारिशों के समान इस्लाम की सहायता को आया और उसके चेहरे को धो डाला और उस पर साफ़ पानी डालकर वर्षों के गंद को दूर किया। अत: हुज्जत पूरी करने के उदेश्य से उसने अपने बंदों में से एक बंदा अवतरित किया और उसके कलाम में चमत्कार भर दिया ताकि उसका कलाम नबी के चमत्कार का प्रतिरूप हो जाए। आप सल्लल्लाहु वसल्लम पर हज़ारों दुरूद और सलाम हों। और इस (चमत्कारिक कलाम) से सृष्टि के रब्ब के कलाम की शान में कोई

وسخ مئين وصب عليه الماء المعين فبعث عبدًا من عباده لإتمام الحجة وأودع كلامه إعجازًا ليكون ظلًّا للمعجزة النبوية عليه ألوف الصلاة والتحيّة ولا يمسّ منه منقصة شأن كلام رب الكائنات فإن الكرامات أظلال للمعجزات وكذالك دمّر الله كل ما دبّر العِدا كالصائد وهدم كل ما بنوا من المكائد وأبطل كل ما حققوا مكيدةً وأخّر كل ما قدموا حربةً وعطّل كلّ ما نصبوا حيلة وهدّم كل ما أشادوا بروجًا مشيدة وأطفأ كلّ ما أوقدوا نارًا وأغلق الدروب كلما أرادوا فرارًا فما كان فى وسعهم أن يبارزوا كأبطال المضمار أو يخرجوا من هذا السجن بتسوّر الخنادق والاسوار وما قدّموا قدمًا إلّا رجعوا بأنواع

कमी नहीं हुई क्योंकि करामात, चमत्कार का ही तो प्रतिरूप होता। है और इस प्रकार जब कभी भी शत्रुओं ने विख्यात शिकारी के समान तदबीर की तो अल्लाह ने उसे नष्ट एवं बर्बाद कर दिया और जो भी छल एवं कपट उन्होंने गढ़े उसने उन्हें ध्वस्त कर दिया। और जो भी तदबीरें उन्होंने कीं उन्हें असफ़ल कर दिया। उनके पहले से तैयार की हुई चालों को लंबित कर दिया और जो भी षड्यंत्र उन्होंने बनाये उसे व्यर्थ कर दिया और जो भी मज़बूत किले उन्होंने बनाए थे उन्हें मिट्टी में मिला दिया और जो भी आग उन्होंने भड़काई उसे बुझा दिया और जब भी उन्होंने भागना चाहा उसने समस्त मार्ग बंद कर दिए। इस प्रकार उनके सामर्थ्य में नहीं रहा कि वह मर्दे मैदान के समान मुक़ाबले पर आएं। और उनके सामर्थ्य में नहीं रहा कि खाइयों और दीवारों को फांद कर इस क़ैद से बाहर निकल सकें। उनकी प्रत्येक चाल को भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाबों द्वारा खदेड़ दिया गया। यहां तक कि इस तफ़सीर लेखन का समय आ गया जो तरकश के तीरों में अन्तिम तीर है। हमने इस तफ़सीर को सर्व शक्तिमान अल्लाह के फ़ज़्ल से संपूर्ण कर लिया है। वह पहाड़ों से भी अधिक मज़बूत और दृढ़ होकर आई है और ऐसे

النكال حتى جاء وقت هذا التفسير الذى هو آخر نبل من النبال و إنّا كمّلناه بفضل الله ذى الجلال وجاء أرسى و ارسخ من الجبال وصاركحصن حصين بُنى بالاحجار الثقال وإنه بلغ حدّ الإعجاز من الله الفعّال وإنه محفوظ من قصد العدوّ المدحور الضّال وانتصفنا به من العِدا بعض الانتصاف و كسرنا خيامًا ضربوها وقبابا نصبوها فى المصاف و كان هذا الامر صعبا ولكن الله الان لى شديدًا وأدنىٰ إلىّ بعيدًا ونقل العدوّ من السعة إلى المضايق وأعمى أبصاره وصرف همته عن العلوم والحقائق وألقى الرعب فى قلوبهم وأخذهم بذنوبهم فنبذوا سلاحهم وتركوا لقاحهم وأنفدوا وجاحهم وقوّضوا قبابهم ونثلوا جعابهم ونفضوا جرابهم

अभेद्य किले के समान हो गई है जो भारी पत्थरों से बनाया गया हो। वह ख़ुदा की ओर से चमत्कार की सीमा तक पहुंच गई और यह ख़ुदा के दरबार से तिरस्कृत शत्रु के बुरे इरादे से सुरक्षित है। इसके द्वारा हमने शत्रु से कुछ बदला ले लिया है और युद्ध के मैदान जो तंबू उन्होंने लगाए और शामियाने लगाए हमने उन्हें उखाड़ दिया। यह कार्य अत्यंत कठिन था किन्तु अल्लाह ने इस कठिन कार्य को मेरे लिए सरल कर दिया और दूर को मेरे निकट कर दिया। और शत्रु को प्रचुरता से संकीर्णता की ओर स्थानांतरित कर दिया और उसकी आंखें अंधी कर दीं और ज्ञान एवं अध्यात्म ज्ञान से उसकी हिम्मत को फेर दिया। और उनके हृदयों में रौब डाल दिया और उन्हें उनके गुनाहों के कारण पकड़ा। इस पर उन्होंने अपने हथियार डाल दिए और अपनी दूध देने वाली ऊँटनियों को छोड़ दिया और अपना थोड़ा सा बचा हुआ पानी भी व्यय कर डाला। उन्होंने अपने तंबू गिरा दिए और अपने तुणीर खाली कर दिए और अपनी म्यानें फेंक दीं और बेबसी के कारण अपने दांत दिखाए। हालांकि उन्हें अनुमति दे दी गई थी कि वह अपने समस्त सैनिक बल अर्थात सवार, पैदल, जत्थे, विशाल सेनाएं, दस्ते और

وأروا مـن العجـز أنيابـهم وأذن لـهم أن يـأ تـوا بجميـع جنودهـم
مـن خيلهـا ورجلهـا وحفلهـا وجحفلهـا وزمرهـا وقوافلهـا
فصـاروا كميـت مقبـور أو زيـت سـراج احـترق ومـا بقـى
معـه مـن نـور وسـكّتنا مـن بـارز مـن صغيرهـم وكبيرهـم
وأوكفنـا مـن نهـق مـن حميرهـم فمـا كانـوا أن يتحر كـوا مـن
المـكان أو يميلـوا مـن السِنة إلى السـنان بـل جرّبنـا مـن شـرخ
الزمـن إلى هـذا الزمـان إن هـؤلاء لا يسـتطيعون أن يبارزونـا فى
الميـدان وليـس فيـهم إلّا السـب والشـتم قاعديـن فى الحجـرات
كالنسـوان يفـرّون مـن كل مـأزق ويـتراءى أطمارهـم مـن تحت
يلمـقٍ ثـم لا يقـرّون ولا يتندّمـون ولا يتقـون الله ولا يرجعـون
فهـذا التفسـير عليـه سـهم مـن سـهام وكَلْـمٌ بـكلام لعلـهم

क़ाफिले ले आएं। किन्तु उनकी हालत एक क़ब्र में पड़े हुए मुर्दे के समान हो गई या चिराग़ के उस तेल की भांति जो जल गया हो और उसकी रोशनी शेष न रही हो। उनके छोटे-बड़े जो भी मुकाबले पर आए हमने उन्हें खामोश एवं लाजवाब कर दिया और उनके गधों में से प्रत्येक हींगने वाले पर ऐसा पालन डाल दिया कि वह अपने स्थान से हरकत न कर सकें। या अपनी तंद्रा से बेदार होकर नेज़े की तरफ़ रुख कर सकें। बल्कि हमने आरम्भिक युग से आज तक यह अनुभव किया है कि ये लोग मैदान में निकल कर हमारा मुकाबला करने की हिम्मत नहीं रखते, औरतों की तरह कमरों में बैठे हुए गाली-गलौज के अतिरिक्त उनके पास कोई ताक़त नहीं। और वह प्रत्येक जोखिम भरे युद्ध के मैदान से भाग जाते हैं और उनकी क़बा (कोट जैसा वस्त्र) के नीचे उनके चीथड़े नज़र आ रहे होते हैं। फिर न तो वे स्वीकार करते हैं और न पछतावा करते हैं। न अल्लाह से डरते हैं और न रुकते हैं। यह तफ़सीर उनके लिए एक तीर और कलाम का एक चुरका है। शायद कि इस प्रकार वह सचेत हो जाएं और अल्लाह की ओर तौबा करते हुए झुकें। हमने इस तफ़सीर के लिए यह शर्त निर्धारित की है कि हम में

يتنبّهون وإلى الله يتوبون وإنّا شرطنا فيه أن لا يجاوز فريق منّا سبعين يومًا۔

ومن جاوز فلن يُقبل تفسيره ويستحق لومًا وكذالك من الشرائط أن لا يكون التفسير أقل من أربعة أجزاء وهذه شروط بينى وبين خصمى على سواء وقد شهرناها من قبل وبلّغناها إلى الاحباب والاعداء بعد الطبع والإملاء والآن نشرع فى التفسير بعون الله النصير القدير ورتبناه على أبواب لئلا يشقّ على طُلّاب ومع ذالك سلكنا مسلك الوسط ليس بإيجاز مُخلّ ولا إطنابٍ مُملّ وإنه له عن هذا العاجز كالعجزة وأُخرج من رحم القدر برحم من الله ذى العزّة فى أيام الصيام وليالى

से कोई पक्ष भी सत्तर दिन से आगे न बढ़ेगा।

और जो इससे बढ़ेगा तो उसकी तफ़सीर कदापि स्वीकृत न की जाएगी और वह निन्दा योग्य होगा। और इसी प्रकार एक शर्त यह भी है कि वह तफ़सीर चार अध्यायों से कम न हो ये शर्तें मेरे एवं मेरे प्रतिपक्षी के मध्य बराबर थीं। हम इन शर्तों को सार्वजनिक कर चुके हैं। और प्रकाशित करके लिखित रूप से उसे मित्रों एवं शत्रुओं तक पहुंचा चुके हैं अब हम सहायता करने वाले एवं सामर्थ्यवान अल्लाह की सहायता से तफ़सीर का आरम्भ करते हैं। हमने इसे कुछ अध्याओं में संकलित किया है ताकि यह तफ़सीर सत्याभिलाषियों के लिए कठिन न हो। इसके साथ ही हमने मध्य मार्ग चुना है कि न तो विषय बिगाड़ने वाला संक्षिप्तीकरण हो और न बेज़ार करने वाला विस्तार। यह तफ़सीर उस (महर अली) के लिए इस विनीत की ओर से ऐसी है जैसे किसी बूढ़े बाप का अंतिम बच्चा, जो अल्लाह रब्बुलइज्ज़त के रहम से तक़दीर के गर्भ से बाहर लाई गई हो। इस तफ़सीर का लेखन रोज़ों के महीने के पवित्र दिनों और उसकी रहमत वाली रातों में किया गया। मैंने इसका नाम **"एजाज़ुल मसीह**

الرحمة وسمّيتُه " إعجاز المسيح فى نمق التفسير الفصيح"
وإنى أُرِيتُ مبشرةً فى ليلة الثلثاء . إذ دعوتُ اللّٰه أن يجعله
معجزة للعلماء ودعوتُ أن لا يقدر على مثله أحدٌ من
الادباء ولا يُعطى لهم قدرة على الإنشاء فأجيب دعائى
فى تلك الليلة المباركة من حضرة الكبرياء وبشّرنى ربى
وقال منعه مانع من السماء ففهمت أنه يشير إلٰى أن العدا لا
يقدرون عليه و لا يأتون بمثله ولا كصفتيه و كانت هذه
البشارة من اللّٰه المنّان فى العشر الآخر من رمضان الذى
أنزل فيه القرآن ثم بعد ذالك كُتب فيه هذا التفسير
بعون اللّٰه القدير ربّ اجعل أفئدة من الناس تهوى إليه

फ़ी नमक़ित्तफ़सीरुल फ़सीह" रखा अर्थात अलंकृत तफ़सीर लेखन के प्रारूप में एजाज़ुल मसीह रखा है। मंगल की रात मुझे शुभ स्वप्न उस समय दिखाया गया जब मैंने अल्लाह से दुआ की कि वह इस तफ़सीर को विद्वानों के लिए चमत्कार बना दे और यह भी दुआ की कि कोई भी साहित्यकार इसका समरूप लिखने पर सक्षम न हो और न ही उन्हें इसके लिखने का सामर्थ्य मिले। तो अल्लाह तआला की ओर से उसी मुबारक रात को मेरी यह दुआ स्वीकृत की गई और मेरे रब्ब ने मुझे ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया - इस तफ़सीर लेखन में कोई तेरा मुक़ाबला न कर सकेगा। ख़ुदा ने विरोधियों से बुद्धि और बल छीन लिया है। इस पर मैंने यह समझ लिया कि यह इस ओर संकेत है कि विरोधी इस पर सक्षम नहीं होंगे। और इस के सदृश्य और इन दो विशेषताओं (वाग्मिता एवं वास्तविकता सूरत फ़ातिहा) वाली तफ़सीर न ला सकेंगे। यह ख़ुशख़बरी उपकारी ख़ुदा की ओर से रमज़ान के अंतिम अश्रह (दस दिन) में जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, मुझे दी गई। फिर उसके पश्चात इस अवधि में सर्वशक्तिमान ख़ुदा की सहायता से यह तफ़सीर लिखी गई। हे मेरे रब्ब! तू लोगों के दिलों को इस (तफ़सीर) की ओर प्रेरित कर। इसे शुभ पुस्तक बना दे और इस पर अपनी

واجعله كتابًا مُبارگًا وأنزل بركات من لدنك عليه فإنّا
توكلنا عليك فانصرنا من عندك وأيّدنا بيديك وكفّل
أمرنا كما كفلتَ السابقين من الصالحين. واستجب هذه
الدعوات كلها وإنّا جئناك متضرعين. فكن لنا فى الدنيا
والدين. آمين.

ओर से बरकतें अवतरित कर। हमने तुझ पर भरोसा किया। अत:! तू अपनी ओर से हमारी सहायता फ़रमा। और अपने हाथों से समर्थन फ़रमा और हमारे विषयों का इस प्रकार पोषक हो जैसे तू पहले पवित्र लोगों की सहायता करता रहा है। हमारी इन समस्त दुआओं को स्वीकार कर हम तेरे समक्ष विनम्रतापूर्वक उपस्थित होते हैं। अत: संसार एवं धर्म में तू हमारा हो जा। आमीन

الباب الاوّل

فی ذکر أسماء هذه السورة وما يتعلق بها

اعلم أن هذه السورة لهاأسماء كثيرة فأوّلها فاتحة الكتاب وسُمّيَت بذالك لانه يُفتتح بها فی المصحف و فی الصلاة وفی مواضع الدعاء من رب الارباب وعندی أنها سُمّيت بها لما جعلها الله حكَمًا للقرآن ومُلیء فيها ما كان فيه من أخبار ومعارف من الله المنّان و إنها جامعة لكل ما يحتاج الإنسان إليه فی معرفة المبدء والمعاد كمثل الاستدلال علی وجود الصانع و ضرورة النبوة و الخلافة فی العباد ومن أعظم الاخبار وأكبرها أنها تبشر بزمان المسيح الموعود وأيام المهدی المعهود وسنذكره فی مقامه بتوفيق الله الودود

प्रथम अध्याय

इस सूरत के नाम और उसके अन्य संबंध

जान लो कि इस सूरत के बहुत से नाम हैं। पहला नाम 'फ़ातिहतुल किताब' है। इस का यह नाम इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन, नमाज़ और समस्त प्रति पालकों के प्रतिपालक से दुआ मांगते समय इस से प्रारंभ किया जाता है मेरे निकट इस का नाम फ़ातिहा इसलिए रखा गया है कि अल्लाह ने इसे क़ुर्आन के लिए **हकम** बनाया है और उपकारी ख़ुदा की ओर से ख़बरें और अध्यात्म ज्ञान भर दिए गए हैं और प्रारंभ करने का स्थान तथा आख़िरत की पहचान के लिए मनुष्य जिस चीज़ का मुहताज है यह सूरह उसकी संग्रहीता है उदाहरणतया वास्तविक रचयिता के अस्तित्व पर मार्ग दर्शन और ख़ुदा के बन्दों में नुबुव्वत और ख़िलाफ़त की आवश्यकता इसकी सब से बड़ी और महान ख़बर यह है कि वह मसीह के युग और महदी माहूद के समय की ख़ुशख़बरी देती है। हम अत्यधिक प्रेम करने वाले ख़ुदा के सामर्थ्य से इस बात का ज़िक्र उसके स्थान पर करेंगे तथा इस (फ़ातिहा) की ख़बरों में से एक यह है कि वह इस तुच्छ

ومن أخبارها أنها تبشر بعمر الدنيا الدنية وسنكتبه بقوّةٍ من الحضرة الاحديّة وهذه هى الفاتحة التى أخبر بها نبى من الانبياء وقال رأيتُ ملكا قويًّا نازلا من السّماء وفى يده الفاتحة على صورة الكتاب الصغير فوقع رجله اليُمنٰى على البحر واليسرٰى على البر بحكم الربّ القدير وصرخ بصوت عظيم كما يزأر الضرغام وظهرت الرعود السبعة بصوته و كلٌّ منها وُجِد فيه الكلام وقيل اختم على ما تكلّمت به الرعود ولا تكتب كذالك قال الرب الودود والملك النازل أقسم بالحيّ الذى أضاء نوره وجه البحار والبلدان أن لا يكون زمانٌ بعد ذالك الزمان بهذا الشان وقد اتفق المفسرون أن هذا الخبر يتعلق بزمان المسيح الموعود

संसार की आयु के विषय में सूचना देती है, हम उसे भी ख़ुदा तआला की प्रदत्त शक्ति से लिखेंगे। यही वह फ़ातिहा है जिसकी सूचना नबियों में से एक नबी ने दी थी। उसने कहा कि मैंने एक शक्तिशाली फ़रिश्ते को आकाश से उतरते देखा और उसके हाथ में छोटी सी पुस्तक के रूप में सूरह फ़ातिहा थी और शक्तिमान ख़ुदा के आदेश से उस फ़रिश्ते का दायां पांव समुद्र पर और बायां पांव सूखे पर पड़ा और उसने बड़ी आवाज़ से जैसे बबर शेर गरजता है पुकारा। उसकी इस आवाज़ से सात दहाड़ें प्रकट हुईं। उन में से प्रत्येक दहाड़ में कलाम पाया जाता था और कहा गया कि बिजलियों के कलाम को मुहर लगा कर बन्द कर ले और उसे मत लिख। बहुत प्रेम करने वाले रब्ब ने ऐसा ही फ़रमाया। उतरने वाले फ़रिश्ते ने उस ज़िन्दा ख़ुदा की क़सम खा कर कहा जिसके प्रकाश ने दरियाओं और आबादियों के मुख को प्रकाशित किया है कि इस युग के बाद कोई युग शान वाला न होगा। व्याख्याकार इस बात पर सहमत हैं कि यह ख़बर (भविष्यवाणी) रब्बानी मसीह मौऊद के युग के साथ संबंध रखती है और निस्सन्देह वह युग आ चुका है और सब्अ मसानी (सात आयतों वाली अर्थात्

الربّانى فقد جاء الزمان وظهرت الاصوات السبعة من السبع المثانى وهذا الزمان للخير والرشد كآخر الازمنة ولا يأتى زمان بعده كمثله فى الفضل والمرتبة وإنّا إذا ودّعنا الدنيا فلا مسيح بعدنا إلى يوم القيامة ولا ينزل أحدٌ من السماء ولا يخرج رأس من المغارة إلّا ما سبق من ربى قولٌ فى الذريّة ★ وإنّ هذا هو الحق و قد نزل من كان نازلا من الحضرة وتشهد عليه السماء والارض ولكنكم لا تطّلعون على هذه الشهادة وستذكرونى بعد الوقت والسعيد من أدرك الوقت وما أضاعه بالغفلة ثم نرجع إلى كلمنا الاولى. فاسمعوا منى يا أولى النُّهٰى إن للفاتحة أسماء أخرىٰ منها

सूरह फ़ातिहा) की वे सात आवाज़ें प्रकट हो चुकी हैं और यह युग भलाई और ज्ञानता के लिए अन्तिम युग है और इसके बाद कोई युग फ़ज़्ल और श्रेणी में इस जैसा नहीं होगा और जब हम इस दुनिया को अलविदा कहेंगे तो हमारे बाद क़यामत के दिन तक कोई मसीह न होगा, न कोई आकाश से उतरेगा और न गुफ़ा से निकलेगा सिवाए उस मनुष्य के कि जिसकी नसल के बारे में मेरा रब्ब पहले से फ़रमा चुका है।★ यह भविष्यवाणी बिल्कुल सच है और जिस ने ख़ुदा तआला की ओर से अवतरित होना था वह अवतरित हो चुका और आकाश तथा पृथ्वी उसकी गवाही दे रहे हैं परन्तु तुम हो कि उसकी गवाही से बेख़बर हो। और एक समय गुज़र जाने के बाद मुझे याद करोगे। परन्तु सौभाग्यशाली है वह मनुष्य जिसने समय पाया और उसे लापरवाही में व्यर्थ न किया। अब हम पुन: अपने कलाम की ओर लौटते हैं तो फिर हे बुद्धिमानो। मेरी सुनो (सूरह) फ़ातिहा के और भी नाम हैं उनमें से एक सूरतुल हम्द है। क्योंकि उसका प्रारंभ हमारे बुज़ुर्ग और श्रेष्ठतर अल्लाह की

★اليه اشارة فى قوله عليه السلام يتزوج ويولد له۔ منه

★**हाशिया -** आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में इसी की ओर संकेत है कि मसीह मौऊद निकाह करेगा और उसे सन्तान दी जाएगी। इसी से।

سورة الحمد بما افتتح بحمد ربّنا الاعلیٰ ومنها أم القرآن بما جمعت مطالبه کلها بأحسن البیان وتأبطت کصدفٍ دررَ الفرقان وصارت کعُشٍّ لطیر العرفان فإن القرآن جمع علوما أربعة فی الهدایات علم المبدء وعلم المعاد وعلم النبوة وعلم توحید الذات والصفات ولا شك أن هذه الاربعة موجودة فی الفاتحة وموؤودة فی صدور أكثر علماء الامة یقرء ونها وهی لا تجاوز من الحناجر لا یفجرون أنهارها السبعة بل یعیشون کالفاجر ومن الممکن أن یکون تسمیة هذه السورة بأمّ الکتاب نظرًا إلیٰ غایة التعلیم فی هذا الباب فإن سلوك السالکین لا یتم إلّا بعد أن یستولی علی قلوبهم

हम्द (प्रशंसा) से हुआ है। इसका एक और नाम उम्मुल क़ुर्आन भी है जिसके नाम का कारण यह है कि इस सूरह ने क़ुर्आन के समस्त मतलबों को अत्यन्त सुन्दर वर्णन शैली में एकत्रित कर दिया है और एक सीप की तरह यह फ़ुर्क़ान-ए-हमीद के समस्त मोतियों को अपने अन्दर लिए हुए है और इर्फ़ान (अध्यात्म ज्ञान) के परिन्दों के लिए यह घोंसले की तरह है। निस्सन्देह क़ुर्आन ने अपनी हिदायतों में चारों ज्ञान एकत्र किए हुए हैं अर्थात् मब्दअ (आरंभिक ज्ञान) का ज्ञान, आख़िरत का ज्ञान, नुबुव्वत का ज्ञान, एकेश्वरवाद का ज्ञान और ख़ुदा के अस्तित्व तथा विशेषताओं का ज्ञान। निस्सन्देह ये चारों ज्ञान सूरह फ़ातिहा में मौजूद हैं और अधिकतर उम्मत के उलमा के सीनों में ज़िन्दा हैं। वे उसे पढ़ते तो हैं परन्तु वह उनके हलक (कंठ) से नीचे नहीं उतरता और उसकी सात नहरों को फाड़ कर जारी नहीं करते अपितु वे दुराचारियों जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। संभव है कि इस सूरह का नाम इस दृष्टि से उम्मुल क़िताब हो कि इसमें समस्त सम्पूर्ण शिक्षाएं पाई जाती हैं क्योंकि साधकों की साधना उस समय तक पूर्ण नहीं होती जब तक उनके दिलों पर ख़ूबियों (प्रतिपालन) का सम्मान और अबूदियत

عـزّة الربوبيّـة وذلّة العبوديـة ولـن تجـد مرشـدًا فی هـذا الامـر كهـذه السـورة مـن الحضـرة الاحديـة ألا تـرى كيـف أظهـر عـزّة الله وعظمتـه بقـوله اَلۡحَمۡـدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِـيۡنَ إلى مٰلِـكِ يَـوۡمِ الدِّيۡـنِ ﴿۳﴾ ثـم أظهـر ذلّة العبـد وهوانـه وضعفـه بقـوله اِيَّـاكَ نَعۡبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسۡـتَعِيۡنُ ﴿۵﴾ ومـن الممكـن أن يكـون تسـمية هـذه السـورة بـه نظـرًا إلى ضـرورات الفطـرة الإنسـانية وإشـارةً إلى مـا تقتضـى الطبائـع بالكسـب أو الجـواذب الإلهيـة فـإن الإنسـان يُحـبّ لتكميـل نفسـه أن يحصـل له علـم ذات الله وصفاتـه وأفعـاله ويُحـبّ أن يحصـل له علـم مرضاتـه بوسـيلة أحكامـه الـتى تنكشـف حقيقتهـا بأقـواله و كذالـك تقتضـى روحانيتـه أن تأخـذ بيـده العنايـة الربّانيـة ويحصـل بإعانتـه صفـاء الباطـن

(बन्दगी) की विनम्रता पूर्णतया न छा जाए। इस बात में तुम ख़ुदा तआला की ओर से सूरह फ़ातिहा जैसा कोई पथ प्रदर्शक नहीं पाओगे। क्या तुम नहीं देखते कि 'अलहम्दुल्लिाहि रब्बिल आलमीन' (सूरह फ़ातिहा-1/2) से 'मालिकि यौमिद्दीन' (सूरह फ़ातिहा-4) तक के कलाम से अल्लाह ने अपने सम्मान और श्रेष्ठता को किस प्रकार स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। फिर आयत 'इय्य' का नाबुदो व इय्याका नस्तईन' (सूरह फ़ातिहा-5) में बन्दे का अपमान, विवशता और उसकी कमज़ोरी को अभिव्यक्त किया है। और यह भी संभव है कि मानवीय प्रकृति की समस्त आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए इस सूरह का नाम उम्मुलकिताब रखा गया हो और ख़ुदा के आकर्षण और कसब (कमाने) के द्वारा जो तबियतें मांग करती हैं उनकी ओर संकेत अभीष्ट हो, क्योंकि इन्सान अपने नफ़्स की पूर्ति के लिए पसन्द करता है कि उसे अल्लाह के अस्तित्व, विशेषताओं और कार्यों का ज्ञान प्राप्त हो और वह यह भी चाहता है कि उसे ख़ुदा की प्रसन्नता का ज्ञान उसके उन आदेशों के माध्यम से प्राप्त हो जिन की वास्तविकता उसके कथनों से प्रकट

والانوار والمكاشفات الإلٰـهية وهذه السورةالكريمة مشتملة
عـلى هـذه المطالـب بـل وقعـت بحُسـن بيانهـا و قـوة تبيانهـا
كالجالـب ومـن أسـماء هـذه السـورة السـبع المثـانى وسـبب
التسـمية أنهـا مُثـنّى نصفهـا ثنـاء العبـد للـرب و نصفهـا عطـاء
الـرب للعبـد الفـانى وقيـل أنهـا سُـمّيت المثـانى بمـا أنهـا
مُسـتثناة مـن سـائر الكتـب الإلٰهيـة ولا يوجـد مثلهـا فى التـوراة
ولا فى الإنجيـل ولا فى الصحـف النبويّـة وقيـل أنهـا سُـمّيت مثـانى
لانهـا سـبع آيـات مـن الله الكريـم وتعـدل قرائـت كل آيـة منهـا
قرائـة سُـبُعٍ مـن القـرآن العظيـم وقيـل سُـمّيت سـبعًا إشـارة
إلى الابـواب السـبعة مـن النـيران ولـكل منهـا جـزء مقسـوم
يدفـع شُـواظَها بـإذن الله الرحمـان فمـن أراد أن يمـرّ سـالمًا مـن

होती है। इसी प्रकार उसकी रूहानियत चाहती है कि रब्बानी अनुकम्पा उसकी सहायता करे और उसी की सहायता से उसकी आन्तरिक सफ़ाई तथा प्रकाश एवं ख़ुदा के कश्फ़ प्राप्त हों। यह पवित्र सूरह इन्हीं अर्थों पर आधारित है अपितु यह सूरह अपने सुन्दर वर्णन और अभिव्यक्ति के कारण उन अर्थों की ओर आकर्षित करने वाली है, इस सूरह का एक नाम सब्अ मसानी (अर्थात् सात आयतों वाली) है इसके नाम का कारण यह है कि यह दो भागों पर आधारित है इसका अर्ध बन्दे का अपने प्रतिपालक की स्तुति करना है और दूसरा अर्ध, नश्वर बन्दे के लिए रब्ब की अता (दान) पर आधारित है और वर्णन किया गया है कि इसे मसानी का नाम इस कारण से भी दिया गया है कि अन्य समस्त ख़ुदा की किताबों से यह विपरीत है जिसका उदाहरण न तो तौरात में पाया जाता है और न ही इंजील में और न नबवी ग्रन्थों में। मसानी नाम रखने का एक कारण यह भी बताया जाता है कि कृपालु ख़ुदा की ओर से सात आयतें हैं जिनमें से प्रत्येक आयत की क़िराअत (पढ़ने का तरीक़ा) पवित्र क़ुर्आन के सातवें भाग की तिलावत के बराबर है। यह भी कहा गया है कि इस का सब्अ नाम रखना नर्क के सात दरवाज़ों की ओर संकेत करने

سبع أبواب السعير فعليه أن يدخل هذه السبع و يستأنس بها و يطلب الصبر عليها من الله القدير و كل ما يُدخِل فى جهنم من الاخلاق و الاعمال و العقائد فهى سبع موبقات من حيث الاصول و هذه سبع لدفع هذه الشدائد ولها أسماء أخرى فى الاخبار و كفاك هذا فإنه خزينة الاسرار و مع ذالك حصر هذا التعداد إشارة إلى سنوات المبدء و المعاد أعنى أن آياتها السبع إيماء إلى عمر الدنيا فإنها سبعة آلاف و لكل منها دلالة على كيفية ايلاف و الالف الاخير فى الضلال كبير و كان هذا المقام يقتضى هذا الإعلام كما كفلت الذكر إلى معاد من ائْتِناف و حاصل

के लिए है। हर दरवाज़े के लिए इस सूरह का निर्धारित भाग है जो रहमान ख़ुदा के आदेश से उसके शोलों को दूर करता है। जो मनुष्य यह चाहता है कि वह नर्क के उन सात दरवाज़ों से सही सलामत गुज़र जाए तो उस पर अनिवार्य है कि वह इन सात आयतों में दाख़िल होष उन से प्रेम पैदा करे और शक्तिमान ख़ुदा से उन पर स्थिर रहने का अभिलाषी हो। शिष्टाचार, कर्म और आस्थाओं से संबंध रखने वाली ऐसी बुराइयां जो नर्क में दाखिल करती हैं वे सैद्धान्तिक दृष्टि से वे सात घातक चीज़ें हैं और ये सात उन कठिनाइयों से बचाने वाली हैं। हदीसों में इसके और भी नाम हैं परन्तु तेरे लिए इतने ही पर्याप्त हैं क्योंकि यह रहस्यों का एक खज़ाना है। इसके अतिरिक्त इस संख्या का सीमित करना मब्दा से मआद (अर्थात् आरंभ से अन्त) तक के युग की ओर एक संकेत है अर्थात् इसकी सात आयतें दुनिया की आयु की ओर संकेत करती हैं। अत: वह सात हज़ार वर्ष है। इन आयतों में से प्रत्येक आयत पहले हज़ार वर्षों की कैफ़ियत (विवरण) पर मार्ग दर्शन करती है और यह अन्तिम हज़ार वर्ष तो गुमराही में बहुत बढ़ा हुआ है यह स्थान उस अवधि के वर्णन करने की मांग करता है जैसा कि सूरह फ़ातिहा प्रांरभ से अंजाम तक के

الـكلام أن الفاتحـة حصـن حصـين ونـور مبـين ومُعلّـم ومُعـين وإنهـا يحصـن أحـكام القـرآن مـن الزيـادة والنقصـان كتحصـين الثغـور بامـرار الامـور ومثلهـا كمثـل ناقـة تحمـل كل مـا تُحتـاج إليـه وتوصـل إلى ديـار الحِـبّ مـن ركـب عليـه وقـد حُمـل عليهـا مـن كل نـوع الازواد والنفقـات والثيـاب والكسـوات أو مثلهـا كمثـل بركـة صغـير فيهـا مـاء غزيـر كأنهـا مجمـع بحـار أو مجـرى قلهـذم زخـار وإنى أرى أن فوائـد هـذه السـورة الكريمـة ونفائسـها لا تُعـدّولا تُحصٰـى وليـس فى وُسـع الإنسـان أن يحصيهـا وإن أنفـد عمـرًا فى هـذا الهـوى وإن أهـل الغـىّ والشـقاوة مـا قدروهـا حـق قدرهـا مـن

विषयों की अभिभावक है। सारांश यह कि फ़ातिहा एक सुदृढ़ किला और स्पष्ट प्रकाश है, शिक्षक और मददगार है। यह क़ुर्आन के आदेशों को हर प्रकार की कमी-बेशी से सुरक्षित रखती है जैसे उच्चतम और सुन्दर व्यवस्था से सरहदों की रक्षा की जाती है। इसका उदाहरण उस ऊंटनी की तरह है जो आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु को अपनी पीठ पर लादे हुए है और अपने सवार को प्रिय के घर तक पहुंचाती है जिस पर हर प्रकार की जीवनयापन सामग्री और खाद्य सामग्री और कपड़ा और वस्त्र लादा गया हो या उसका उदाहरण उस छोटे से तालाब के समान है जिसमें बहुत पानी है जैसे कि वह समुद्रों के एकत्र होने का स्थान है या बहुत गहरे समुद्र का मार्ग। मैं देखता हूं कि इस पवित्र सूरह के लाभ और खूबियां असीमित और नगण्य हैं और इन्सान के वश में नहीं कि वह उनकी गणना कर सके चाहे वह इस इच्छा में अपनी समस्त आयु व्यय कर दे। गुमराहों और अभागों ने अपनी जहालत और मन्दबुद्धि के कारण इस सूरह की यथा योग्य क़द्र नहीं की। उन्होंने उसे पढ़ा परन्तु उसकी बार-बार तिलावत करने के बावजूद उन्होंने उसकी सुन्दरता और खूबी को न जाना, न पहचाना। यह सूरह काफ़िरों पर एक भरपूर यलग़ार है। प्रत्येक स्वस्थ हृदय पर शीघ्र प्रभाव करने वाली है जो भी छान बीन करने

الجهل والغباوة وقرأوها فما رأوا طلاوتها مع تكرار التلاوة وإنها سورة قوى الصَّول على الكفرة سريع الاثر على الافئدة السليمة ومن تأمّلها تأمّل المنتقد وداناها بفكر منير كالمصباح المتّقد ألفاها نور الابصار ومفتاح الاسرار۔ وإنه الحق بلا ريب۔ ولا رجم بالغيب۔ وإن كنتَ فى شكٍّ فقم وجرّب واترك اللغوب والاَيْن ولا تسأل عن كيف وأين ومن عجائب هذه السورة أنها عرَّف الله بتعريف ليس فى وُسْع بشرٍ أن يزيد عليه فندعو الله أن يفتح بيننا وبين قومنا بالفاتحة۔ وإنّا توكلنا عليه۔ آمين يا رب العالمين۔

वालों की तरह उस पर विचार करेगा और रोशन दीपक की तरह रोशन विचार से उस का करीब से अध्ययन करेगा तो वह उसे आंखों का प्रकाश और रहस्यों की कुंजी पाएगा। और यह निस्सन्देह साक्षात सच है, अटकल पच्चू नहीं। हे सम्बोध्य। यदि तुझे इस पर सन्देह है तो उठ और अनुभव कर सुस्ती और काहिली त्याग और इधर-उधर के अनुचित प्रश्न न कर। इस सूरह के चमत्कारों में से एक यह है कि इसने अल्लाह तआला की वह मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) प्रदान की है कि किसी मनुष्य के वश में नहीं कि इस में बढ़ोतरी कर सके। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमारे और हमारी क़ौम के मध्य सूरह फ़ातिहा के द्वारा फैसला करे। हमारा उसी के अस्तित्व पर भरोसा है। आमीन हे रब्बुल आलमीन।

الباب الثانی

فی شرح ما یُقال عند تلاوة الفاتحة و القرآن العظیم

أعنی أعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم

اعلم یا طالب العرفان أنه من أحلّ نفسه محل تلاوة الفاتحة و الفرقان فعلیه أن یستعیذ من الشیطان کما جاء فی القرآن. فإن الشیطان قد یدخل حِمی الحضرة کالسارقین و یدخل الحرم العاصم للمعصومین. فأراد اللّٰہ أن یُنجّی عباده من صول الخناس عند قراءة الفاتحة و کلام رب الناس و یدفعه بحربة منه و یضع الفاس فی الراس و یُخلّص الغافلین من النعاس. فعلّم کلمة منه لطرد الشیطان المدحور إلی یوم النشور و کان سرّ هذا الامر المستور أن الشیطان قد عادی الإنسان من الدهور

द्वितीय अध्याय

फ़ातिहा और महान क़ुर्आन के पाठ से पूर्व अदा किए जाने वाले शब्द अर्थात् 'आऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' की व्याख्या

हे मारिफ़त के अभिलाषी ! यह जान ले कि जो व्यक्ति फ़ातिहा और फ़ुर्क़ान हमीद की तिलावत करने लगे तो उस पर अनिवार्य है कि जैसा कि क़ुर्आन में आया है कि اعوذ باللّٰہ من الشیطان الرَّجیم पढ़ कर शैतान से शरण मांगे, क्योंकि शैतान अल्लाह तआला की चरागाह में और उसके हरम में जो उसके मासूम बन्दों के लिए विशिष्ट है चोरों के समान दाखिल होता है। इसलिए अल्लाह ने इरादा किया है कि वह सूरह फ़ातिहा और लोगों के रब्ब का कलाम पढ़ते समय शैतान के आक्रमण से अपने बन्दों को मुक्ति दिलाए और अपने उपाय से उसे दूर हटाए और उसके सिर पर कुल्हाड़ा चलाए। और लापरवाहों को गहरी नींद से मुक्ति दिलाए। तो उसने दुष्ट शैतान को क़यामत

و كان يُريد إهلاكه من طريق الاخفاء والدمور و كان أحبّ الاشياء إليه تدمير الإنسان ولذالك الزم نفسه أن تُصغى إلى كل أمر ينزل من الرحمٰن لدعوة الناس إلى الجِنان و يبذل جهده للإضلال والافتنان فقدّر الله له الخيبة والقوارع ببعث الانبياء وما قتله بل أنظره إلى يومٍ تُبعث فيه الموتى بإذن الله ذى العزة والعلاء وبشّر بقتله فى قوله الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ فتلك هى الكلمة التى تُقرأ قبل قوله وهذا الرجيم هو الذى ورد فيه الوعيد أعنى الدجّال الذى يقتله المسيح المبيد والرجم القتل كما صُرّح به فى كتب اللسان العربية فالرجيم هو الداجل

तक मार भगाने के लिए अपने पास से एक वाक्य (तअव्वुज़) सिखाया। इस गुप्त बात का रहस्य यह है कि शैतान युगों से इन्सान का शत्रु है और वह गुप्त तरीक़े से उसे तबाह और बर्बाद करना चाहता है। इन्सान को बर्बाद करना उसका सर्वाधिक प्रिय कार्य है। इस उद्देश्य से उसने अपने ऊपर यह अनिवार्य कर लिया है कि वह रहमान ख़ुदा के आदेश पर जो वह लोगों को स्वर्ग की ओर बुलाने के लिए उतारता है, कान लगाए रखे और गुमराही एवं उपद्रव के लिए अपना पूर्ण प्रयास व्यय करे तो अल्लाह तआला ने नबियों के अवतरण के द्वारा उसके लिए असफ़लता और आघात निर्धारित कर दिए और उसे नष्ट न किया, अपितु उसे उस दिन तक छूट दी जिसमें महान एवं श्रेष्ठ ख़ुदा के आदेश से मुर्दे उठाए जाएंगे और اَلشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ के कथन में उसके विनाश की ख़ुशख़बरी दी गई है। यह वह कलिमा तअव्वुज़ (शरण) है जो अल्लाह तआला के आदेश बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से पहले पढ़ा जाता है और यह कि رجيم (रजीम) वही है जिसके संबंध में अज़ाब का वादा आया है इससे मेरा अभिप्राय वह दज्जाल है जिसे हलाक करने वाला मसीह क़त्ल करेगा और जैसा कि अरबी भाषा की पुस्तकों में स्पष्टीकरण किया गया

الذی یُغـال فی زمـان مـن الازمنـة الآتیـة وعـدٌ مـن اللّٰہ الذی
یخـول عـلی أهـله ولا تبدیـل للکلـم الإلٰهیـة۔ فهـذه بشـارة
للمسـلمین مـن اللّٰہ الرحیـم۔ وإیمـاءٌ إلیٰ أنـه یُقتـل الدجّـال فی
وقـتٍ کمـا هـو المفهـوم مـن لفـظ الرجیـم۔

है कि रजम का अर्थ क़त्ल है। अतः رجیـم (रजीम) वह दज्जाल है जिसे किसी भावी युग में क़त्ल किया जाएगा। यह उस ख़ुदा का वादा है जो अपने बन्दों की निगरानी करता है और ख़ुदा के कलाम में कोई परिवर्तन संभव नहीं। अतः यह रहीम ख़ुदा की ओर से मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी है और इस ओर संकेत है कि वह दज्जाल को किसी समय क़त्ल करेगा जैसा कि रजीम के शब्द का अर्थ है।

اشعار

وَمَعْنَى الرَّجْمِ فِي هَذَا الْمُقَامِ — كَمَا عُلِّمْتُ مِنْ رَبِّ الْاَنَامِ

هُوَ الْإِعْضَالُ إِعْضَالُ اللِّئَامِ — وَإِسْكَاتُ الْعِدَا كَهْفِ الظَّلَامِ

وَضَرْبٌ يَخْتَلِيْ أَصْلَ الْخِصَامِ — وَلَا نَعْنِيْ بِهٖ ضَرْبَ الْحُسَامِ

تَرَى الْإِسْلَامَ كُسِّرَ كَالْعِظَامِ — وَكَمْ مِّنْ خَامِلٍ فَاقَ الْعِظَامِ

فَنَادَى الْوَقْتُ أَيَّامَ الْإِمَامِ — لِتُنْجَى الْمُسْلِمُوْنَ مِنَ السِّهَامِ

فَلَا تَعْجَلْ وَفَكِّرْ فِي الْكَلَامِ — أَلَيْسَ الْوَقْتُ وَقْتُ الْاِنْتِقَامِ

أَتَى فَوْجُ الْمَلَا ئِكَةِ الْكِرَامِ — بِكَفِّ الْمُصْطَفٰى أَضْحَى الزِّمَامِ

अश्आर (काव्य)

जैसा कि मुझे सृष्टियों के रब्ब की ओर से ज्ञान दिया गया है इस स्थान पर रजम के अर्थ

असमर्थ करना और दर मांदा करना अर्थात् कमीनों को असमर्थ करना और शत्रुओं को ख़ामोश कराना है जो अंधकार के लक्ष्य स्थल हैं।

और ऐसी चोट जो झगड़े की जड़ काट कर रख दे और चोट से हमारा अभिप्राय तलवार की चोट नहीं है।

तू देखता है कि इस्लाम को हड्डियों की तरह तोड़ कर रख दिया गया है और कितने ही गुमनाम हैं जो महान पुरुषों से भी बुलन्द हो गए हैं।

अतः समय ने एक इमाम के दिनों को आवाज़ दी है ताकि मुसलमान तीरों से बचाए जाएं।

अतः तू जल्दी न कर और (इस) वर्णन पर विचार कर। क्या यह समय प्रतिशोध का समय नहीं है।

मैं फ़रिश्तों की सेनाएं देखता हूं (जिनकी) बागडोर मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हाथ में दी गई है।

وقد أتى زمان تهلك فيه الاباطيل ولا تبقى الزور والظلام وتفنى الملل كلها إلّا الإسلام وتُمْلاءِ الارض قسطًا وعدلًا ونورًا كما كانت مُلئت ظلمًا و كفرًا وجَورًا وزورًا فهناك تقتل من سبق الوعيد لتدميره ولا نعنى من القتل إلّا كسر قوّته وتنجية أسيره فحاصل الكلام أن الذى يُقال له الشيطان الرجيم هو الدجّال اللئيم والخنّاس القديم و كان قتله أمرًا موعودًا وخطبًا معهودًا ولذالك ألزم الله كافّة أهل الملّة أن يقرء وا لفظ "الرجيم" قبل قراء ة الفاتحة وقبل البسملة ليتذكر القارىء أن وقت الدجّال لا يُجاوز وقت قومٍ ذُكروا فى آخر آية من هذه

अब वह युग आ गया जिसमें समस्त धोखेबाज़ियां तबाह हो जाएंगी, झूठ और अंधकार शेष न रहेगा और इस्लाम के अतिरिक्त समस्त मिल्लतें मिट जाएंगी। पृथ्वी न्याय और इन्साफ़ तथा प्रकाश से भर दी जाएगी जैसा कि इस से पूर्व वह अन्याय, अत्याचार, कुफ्र और झूठ से भरी हुई थी तो उस समय उस दज्जाल के समूह को जिसके विनाश का वादा पहले से दिया गया है, क़त्ल किया जाएगा। क़त्ल से हमारा अभिप्राय केवल उसकी शक्ति तोड़ देने और उसके क़ैदियों को आज़ाद कर देने से है। वर्णन का सारांश यह कि जिसे शैतानिर्ररजीम कहा गया है वही लईम दज्जाल और पुराना ख़न्नास है और उसका क़त्ल किया जाना एक निश्चित मामला और प्रतिज्ञात उद्देश्य था। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने सम्पूर्ण इस्लामी मिल्लत पर यह अनिवार्य कर दिया कि वह फ़ातिहा और बिस्मिल्लाह से पढ़ने से पहले रजीम शब्द अर्थात् तअव्वुज़ पढ़ें ताकि यह पढ़ने वाले के मस्तिष्क में बैठ जाए कि दज्जाल का समय उस क़ौम के समय से बाहर नहीं जाएगा जिन का वर्णन इन सात आयतों में से अन्तिम आयत में की गया है। सृष्टि के प्रारंभ ही से अल्लाह तआला की यह तक़्दीर लिख दी

الآيات السبعة و كان قدر الله كُتب من بدء الإوان أنه يقتل الرجيم المذكور فی آخر الزمان ويستريح العباد من لدغ هذا الثعبان فاليوم وصل الزمان إلی آخر الدائرة وانتهی عمر الدنيا كالسبع المثانی إلی السابعة من الإلوف الشمسيّة والقمريّة اليوم تجلّی الرجيم فی مظهرٍ هو له كالحُلل البروزية واختتم أمر الغی علی قوم اختتم عليه آخر كلم الفاتحة ولا يفهم هذا الرمز إلّا ذو القريحة الوقّادة ولا يُقتل الدجّال إلّا بالحربة السماوية أی بفضلٍ من الله لا بالطاقة البشرية فلا حرب ولا ضرب ولكن أمرٌ نازلٌ من الحضرة الاحدية و كان هذا الدجّال يبعث بعض ذراريه فی كل مائة من مئين ليُضل المؤمنين والموحّدين والصالحين

गई थी कि कथित रजीम (दज्जाल) अन्तिम युग में क़त्ल किया जाएगा और बन्दे इस अजगर के डसने से मुक्ति पाएंगे। अत: आज युग अपने दौर के अन्त तक पहुंच गया है और "सब्अ मसानी" की तरह दुनिया की आयु भी शम्सी तथा क़मरी★ हिसाब से सातवें हज़ार तक पहुंच चुकी है। आज यह रजीम शैतान ऐसे द्योतक के रूप में प्रकट हुआ जो उसके लिए प्रतिरूपी वस्त्र की तरह है और गुमराही उस क़ौम पर समाप्त हो गई है जिसका ज़िक्र सूरह फ़ातिहा के अन्तिम शब्दों में आया है। इस रहस्य को केवल एक तीव्र बुद्धि मनुष्य ही समझ सकता है। दज्जाल केवल आकाशीय हथियार से ही क़त्ल होगा अर्थात् अल्लाह की कृपा से न किसी मानवीय शक्ति से। अत: न कोई युद्ध होगा न मार-धाड़ परन्तु यह ख़ुदा तआला की ओर उतरने वाला मामला है। यह दज्जाल हर सदी में अपनी किसी न किसी सन्तान को मोमिनों, एकेश्वरवादियों, नेकों, सच पर स्थापित लोगों और सत्याभिलाषियों को गुमराह करने के लिए भेजता रहा है। ताकि धर्म की बुनियादें गिरा दे, और अल्लाह के ग्रन्थों को टुकड़े-टुकड़े कर दे। और अल्लाह का यह वादा

★ शम्सी और क़मरी से अभिप्राय है सूर्य एवं चन्द्र की गणना अनुसार।

والقائمين على الحق والطالبين ويهدّ مبانى الدين ويجعل صحف الله عضين وكان وعدٌ من الله أنه يُقتَل فى آخر الزمان ويغلب الصلاح على الطلاح والطغيان وتُبَدّل الارض ويتوب أكثر الناس إلى الرحمٰن وتُشرِق الارض بنور ربّها وتخرج القلوب من ظلمات الشيطان فهذا هو موت الباطل وموت الدجّال وقتل هذا الثعبان أم يقولون إنه رجل يُقتل فى وقت من الاوقات كلا بل هو شيطان رجيم أبو السّيئات يُرجم فى آخر الزمان بإزالة الجهلات واستيصال الخزعبيلات وعدٌ حقٌّ من الله الرحيم كما أُشير فى قوله "الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ" فقد تمّت كلمة ربنا صدقًا وعدلًا فى هذه الايام۔ ونظر الله إلى الإسلام۔ بعد ما عَنَتْ به البلايا

था कि वह दज्जाल अन्तिम युग में क़त्ल किया जाएगा। नेकी, फ़साद और उद्दण्डता पर विजयी होगी, ज़मीन परिवर्तित कर दी जाएगी और अधिकतर लोग ख़ुदा की ओर लौटेंगे और ज़मीन अपने रब्ब के प्रकाश से रोशन हो जाएगी और दिल शैतानी अंधकारों से बाहर आ जाएंगे। यही असत्यता की मृत्यु और दज्जाल की मृत्यु और उस अजगर का क़त्ल है। क्या लोग यह कहते हैं कि दज्जाल एक व्यक्ति है जो किसी समय क़त्ल किया जाएगा। ऐसा कदापि नहीं अपितु वह समस्त बुराइयों का बाप "रजीम" शैतान है जिसे अन्तिम युग में अज्ञानताओं के निवारण और बेहूदगियों के उन्मूलन के द्वारा संगसार किया जाएगा, यह दयालु ख़ुदा की ओर से सच्चा वादा है जैसा कि अल्लाह के कथन اَلشَّيطانِ الرَّجيْم में इशारा किया गया है। इस युग में हमारे रब्ब की बात सच्चाई और इन्साफ़ की दृष्टि से पूर्णता को पहुंची। अल्लाह ने अपनी कृपा दृष्टि इस्लाम पर डाली बाद इसके कि उस पर संकट और कष्ट आए। तो ख़ुदा ने अपने मसीह को उस "ख़न्नास" को क़त्ल करने और इस झगड़े को समाप्त करने के लिए उतारा और छुपी हुई

والآلام۔ فأنزل مسيحه لقتلِ الخنّاس وقطع هذا الخصام
وما سُمِّيَ الشيطان رجيمًا إلَّا على طريق أنباء الغيب۔ فإن
الرجم هو القتل من غير الريب۔ ولما كان القدر قد جرى
في قتل هذا الدجّال۔ عند نزول مسيح الله ذى الجلال۔ أخبر
الله من قبلِ هذه الواقعة تسليةً وتبشيرًا لقوم يخافون أيام
الضلال۔

ख़बरों की पद्धति पर ही शैतान का नाम रजीम रखा गया। क्योंकि रजम के मायने निस्सन्देह क़त्ल के हैं और क्योंकि प्रतापी ख़ुदा के मसीह के उतरने के समय इस दज्जाल के क़त्ल के बारे में आदेश पारित हो चुका था। इस कारण से अल्लाह तआला ने पथभ्रष्टता और गुमराही के युग से डरने वाली क़ौम की सन्तुष्टि और ख़ुशख़बरी के लिए इस घटना की पहले से सूचना दे दी।

الباب الثالث

فی تفسیر اٰیة بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

اعلم وهب لك الله علم أسمائه وهداك إلى طرق مرضاته وسبل رضائه أن الاسم مشتق من الوسم الذى هو أثر الكىّ فى اللسان العربية يُقال "اتّسم الرجل" إذا جعل لنفسه سِمةً يُعرف بها ويُميّز بها عند العامة۔ ومنه سمت البعير ووسامه عند أهل اللسان۔ وهو ما وُسِم به البعير من ضُروب الصور ليُعين للعرفان ومنه ما يُقال إنّى توسّمتُ فيه الخير وما رأيت الضير أى تفرّستُ فما رأيت سمةَ شرٍّ فى

तृतीय अध्याय

आयत- 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' की व्याख्या

अल्लाह तआला आपको अपने नामों का ज्ञान प्रदान करे और अपनी रज़ामंदी तथा प्रशंसा के मार्गों की ओर मार्ग-दर्शन करे। जान लो कि 'اسم' (इस्मुन) 'وسم' (वस्म) से निकला है जिसके मायने अरबी भाषा में दाग़ने के निशान के हैं اتّسم الرَّجُلُ कहा जाए तो इसका अर्थ यह होता है कि उस मनुष्य ने अपने लिए एक निशान निर्धारित कर लिया जिस निशान से वह पहचाना जाता है और उसके द्वारा लोगों में पहचाना जाता है और अहले ज़ुबान के नज़दीक (وَسْمٌ के शब्द) से ही سِمَةُ الْبَعِيْرِ और وِسَامُ الْبَعِيْرِ बने हैं जिसके अर्थ ऊंट पर दाग़ देकर कोई शक्ल बनाने के हैं ताकि वह उसकी पहचान में सहायक हो। इसी प्रकार कहा जाता है اِنِّی تَوَسَّمْتُ فيه الْخَيْرَ وَمَا رَأَيْتُ الضَّيْرَ अर्थात् मैंने विचार किया और उसके चेहरे में भलाई के लक्षण देखे और बुराई का कोई निशान नहीं देखा

محیّاہ ولا أثر خبث فی مَحیاہ ومنہ الوسمی الذی ھو أوّل مطر من أمطار الربیع لأنہ یَسِمَ الارض إذا نزل کالینابیع ویُقال "أرض موسومۃ" إذا أصابھا الوسمی فی إبّانہ وسکّن قلوب الکفار بجریانہ ومنہ موسم الحج والسوق وجمیع مواسم الاجتماع لانھا معالم یجتمع إلیھا لنوع غرض من الانواع ومنہ المیسم الذی یُطلق علی الحسن والجمال ویستعمل فی نساء ذات ملاحۃ فی أکثر الاحوال وقد ثبت من تتبّع کلام العرب ودواوینھم أنھم کانوا لا یستعملون ھذا اللفظ کثیرًا إلّا فی موارد الخیر من دنیاھم ودینھم وأنت تعلم أن اسم الشیء عندالعامۃ ما یُعرف بہ ذالک الشیء وأما عند الخواص وأھل المعرفۃ فالاسم لاصل الحقیقۃ الفیء

और न ही उसके जीवन में बुराई का कोई प्रभाव दिखाई दिया और وَسْمٌ से ही وَسْمِیٌّ बना है जो बसन्त ऋतु की पहली वर्षा है क्योंकि वह तेज़ बरसने के कारण श्रोतों के समान पृथ्वी पर अपने बहाव के निशान छोड़ जाती है। इसी प्रकार اَرْض مَوْسُوْ مَةٌ ऐसी ज़मीन को कहते हैं कि जब उस पर बसन्त ऋतु की पहली वर्षा समय पर बरसे और वह खूब बरस कर खेती करने वालों के दिलों को आराम प्रदान करे। इसी से शब्द مَوْسَمُ الْحَج۔ مَوْ سَمُ السُّوق और समस्त इज्तिमाओं के मौसम निकले हैं क्योंकि वे निर्धारित स्थान हैं जहां लोग किसी न किसी उद्‌देश्य के लिए एकत्र होते हैं। इसी से शब्द मीसम مِیْسَم है जिसका चरितार्थ सुन्दरता एवं सौन्दर्य पर होता है और अधिकतर अवसरों पर इस शब्द को खूबसूरत स्त्रियों के संबंध में प्रयोग किया जाता है। अरबी कलाम और उसके पद्यों के अध्ययन से यह बात सिद्ध है कि वे इस शब्द को प्राय: अपनी धार्मिक एवं सांसारिक भलाई के अवसरों पर ही इस्तेमाल करते थे। आप जानते हैं कि सामान्य लोगों के निकट اِسْمُ الشَّیْءِ किसी चीज़ का ऐसा नाम है जिसके

بـل لاشـكّ أن الاسـماء المنسـوبة إلى المسـمّيات مـن الحضـرة الاحديـة قـد نزلـت منهـا منـزلة الصـور النوعيـة وصـارت كوكنـاتٍ لطيـورِ المعـانى والعلـوم الحِكَميـة و كذالـك اسـم الله و الرحمٰـن و الرحيـم فى هـذه الآيـة المباركـة فـإن كل واحـد منهـا يـدل عـلى خصائصـه وهويّتـه المكتومـة والله اسمٌ لـلذات الإلٰهيـة الجامعـة لجميـع أنـواع الكمـال والرحمٰـن والرحيـم يـدلاَّن عـلى تحقـق هاتـين الصفتـين لهـذا الاسـم المسـتجمع لـكل نـوع الجمـال والجـلال ثـم للرحمٰـن معـنى خـاص يختـص بـه ولا يوجـد فى الرحيـم وهـو أنـه مُفيـضٌ لوجـود الإنسـان وغـيره مـن الحيوانـات بـإذن الله الكريـم بحسـب مـا اقتضـى الحِكَـم الإلٰهيـة مـن القديـم وبحسـب تحمّـل القوابـل لا بحسـب تسـوية التقسـيم

द्वारा उस चीज़ को पहचाना जाता है किन्तु विशेष लोगों और अध्यात्म ज्ञानियों के नज़दीक नाम असल वास्तविकता का प्रतिबिम्ब होता है। अपितु यह बात निश्चित है कि चीज़ों के जो नाम ख़ुदा तआला की ओर से हैं ये समस्त नाम उन चीज़ों के लिए उनकी प्रजाति की सूरतों की हैसियत रखते हैं। यह नाम अर्थों तथा दार्शनिक ज्ञानों के विशेषज्ञों के लिए घोंसलों के समान हैं। इसी प्रकार इस मुबारक आयत में اِسْـمُ الله الرَّحْمٰـن (इस्म, अल्लाह, अर्रहमान) और الرَّحِيْـم (रहीम) हैं। अतः इनमें से प्रत्येक नाम उसकी विशेषताओं और गुप्त हालतों पर दलालत करता है। अल्लाह, उस अस्तित्व का नाम है जो समस्त खूबियों का संग्रहीता है और रहमान तथा रहीम दोनों दलालत करते हैं कि ये दोनों विशेषताएं निश्चित हैं उस नाम के लिए जो हर प्रकार के सौन्दर्य और प्रताप का संग्रह है। फिर الرَّحْمٰـن के अर्थ जो विशेष तौर पर उसी से विशिष्ट हैं और الرَّحِيْـم में नहीं पाए जाते और वे ये हैं कि करीम ख़ुदा की आज्ञा से रहमान की विशेषता इन्सान के अस्तित्व तथा अन्य हैवानों को, अनादि काल से ख़ुदा की हिकमत की

وليس فى هذه الصفة الرحمانية دخل كسبٍ وعملٍ وسعيٍ من القوى الإنسانية أو الحيوانية بل هى مِنّةٌ من الله خاصة ما سبقها عمل عامل ورحمته من لدنه عامّة ما مسّها أثر سعيٍ من ناقصٍ أو كامل فالحاصل أن فيضان الصفة الرحمانية ليس هو نتيجة عملٍ ولا ثمرة استحقاقٍ بل هو فضلٌ من الله من غير إطاعة أو شقاق وينزل هذا الفيض دائما بمشيّة من الله و إرادة من غير شرط إطاعة وعبادة و تُقاة و زهادة و كان بناءُ هذا الفيض قبل وجود الخليقة وقبل أعمالهم وقبل جهدهم وقبل سؤالهم فلإجل ذالك توجد آثار هذا الفيض قبل آثار وجود الإنسان والحيوان وإن كان ساريًا فى جميع مراتب الوجود والزمان والمكان والطاعة والعصيان ألا ترى

मांग के अनुसार और हर एक की योग्यता के अनुसार लाभ पहुंचा रहा है न कि समान विभाजन के तौर पर। इस रहमानियत की विशेषता में किसी मानवीय या हैवानी शक्तियों के अर्जित करने, कर्म एवं प्रयास का कोई हस्तक्षेप नहीं अपितु यह मात्र ख़ुदा का उपकार है जिस से पहले कर्म करने वाले का कर्म मौजूद नहीं। यह उसके दरबार से उसकी सामान्य रहमत (दया) है किसी अपूर्ण या पूर्ण मनुष्य के किसी प्रयास का परिणाम नहीं। वर्णन का निष्कर्ष यह है कि रहमानियत की विशेषता का लाभ किसी कर्म का परिणाम तथा अन्य किसी हक़ का फल नहीं अपितु वह आज्ञाकारिता या किसी विरोध के बिना मात्र ख़ुदा की कृपा है। और यह लाभ आज्ञापालन, इबादत, संयम और परहेज़गारी की शर्त के बिना अल्लाह की इच्छा और उसके इरादे से हमेशा उतरता है। और इस फ़ैज़ की बुनियाद सृष्टि के अस्तित्त्व और उनके कर्मों तथा उनके प्रयास और मांगने से भी पहले से है। यही कारण है कि उसका फ़ैज़ के लक्षण, इन्सान और हैवान के अस्तित्व के लक्षण से भी पहले से पाए जाते हैं। यद्यपि यह फ़ैज़, अस्तित्व की

أن رحمانية الله تعالى وسعت الصالحين والظالمين وترى قمره وشمسه يطلعان على الطائعين والعاصين وانه أعطى كل شيء خلقه وكفّل أمر كلهم أجمعين وما من دابّة إلّا على الله رزقها ولو كان فى السمٰوات أو فى الارضين وانه خلق لهم الاشجار وأخرج منها الثمار والزهر والرياحين وإنها رحمة هيّأها الله للنفوس قبل أن يبرأها وإن فيها تذكرة للمتّقين وقد أعطى هذه النعم من غير العمل ومن غير الاستحقاق من الله الراحم الخلّاق ومنها نعماء أخرى من حضرة الكبرياء۔ وهى خارجة من الإحصاء كمثل خلق أسباب الصحة وأنواع الحيَل والدواء لكل نوع من الدّاء وإرسال الرسل وإنزال الكتب على الانبياء وهذه كلها

समस्त श्रेणियों में और युग तथा स्थान, आज्ञापालन और अवज्ञा की परिस्थिति में जारी रहता है। क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह तआला की रहमानियत नेकों और अत्याचारियों सब पर व्यापक (फैली हुई) है। तू देखता है कि उसका चन्द्रमा और उसका सूर्य आज्ञाकारियों और अवज्ञाकारियों सभी पर उदय होता है और उसने हर चीज़ को उसके यथायोग्य जीवन प्रदान किया, और उनके समस्त मामलों का प्रतिपालक हुआ। प्रत्येक चलने-फिरने वाले प्राणी का अन्न अल्लाह के ज़िम्मे है चाहे वह आसमानों में हो या ज़मीनों में। उसने उनके लिए वृक्ष पैदा किए और उन वृक्षों के द्वारा फल-फूल और सुगन्धें पैदा कीं। यह ऐसी दया है जिसे अल्लाह ने लोगों के लिए उन के जन्म से पहले उपलब्ध किया। इसमें संयमियों के लिए नसीहत है। ये सब नेमतें बिना कर्म और बिना पात्रता के अत्यन्त मेहरबान और ख़ल्लाक़ अल्लाह की ओर से प्रदान की गई हैं। प्रतिष्ठावान ख़ुदा की ओर से ऐसी और बहुत सी नेमतें हैं जो गिनती से बाहर हैं उदाहरणतया स्वास्थ्य के सामान पैदा करना, हर प्रकार के रोग के लिए समस्त उपाय और दवाएं पैदा करना,

رحمانیۃ من ربنا أرحم الرحماء وفضل بحتٌ لیس من عمل عامل ولا من التضرّع والدعاء. وأمّا الرحیمیۃ فھی فیض أخص من فیوض الصفۃ الرحمانیۃ ومخصوصۃ بتکمیل النوع البشری وإکمال الخلقۃ الإنسانیۃ ولکن بشرط السعی والعمل الصالح وترك الجذبات النفسانیۃ بل لا تنزل ھذہ الرحمۃ حق نزولھا إلّا بعد الجھد البلیغ فی الاعمال وبعد تزکیۃ النفس وتکمیل الإخلاص بإخراج بقایا الریاء وتطھیر البال وبعد إیثار الموت لابتغاء مرضات اللّٰہ ذی الجلال فطوبی لمن أصابہ حظ من ھذہ النِعم بل ھو الإنسان وغیرہ کالنَعم وھھنا سؤال عضال نکتبہ فی الکتاب مع الجواب لیفکّر

रसूलों को अवतरित करना और नबियों पर किताबें उतारना। यह सब कुछ हमारे अरहमुर्राहिमीन (समस्त कृपालुओं से बढ़कर कृपा करने वाला) रब्ब की रहमानियत (कृपा) है और उसकी शुद्ध अनुकम्पा है जिसमें न किसी कर्म करने वाले के कर्म का और न किसी विनय और दुआ का हस्तक्षेप है। और जो रहीमियत (दया) है तो वह ऐसा फ़ैज़ है जो रहमानियत की विशेषता के फ़ैज़ों (लाभों) से अधिक विशेष है और मानवजाति की पूर्णता और मानवीय प्रकृति को चरम सीमा तक पहुंचाने के लिए विशिष्ट है परन्तु उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्न यथास्थिति कर्म और इंसानी भावनाओं को पूर्णतया त्यागने की शर्त पर है। अपितु यह रहमत कर्मों में पूर्ण प्रयास करने, नफ़्स का शुद्धिकरण करने, दिखावे के प्रभावों को बाहर निकाल कर निष्कपटता को पूर्णता तक पहुंचाने, दिल को पवित्र करने और प्रतापी ख़ुदा की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए मृत्यु को प्राथमिकता देने के बाद ही वास्तविक तौर पर उतरती है। अत: भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन नेमतों से परिपूर्ण है अपितु वही तो वास्तव में इन्सान है और इसके अतिरिक्त अन्य सब पशुओं के समान हैं। यहाँ एक जटिल प्रश्न है कि जिसे हम इस पुस्तक में उत्तर सहित

فیہ من کان من أولی الالباب وهو أن الله اختار من جمیع
صفاته صفتی الرحمان والرحیم فی البسملة وما ذکر صفتا
أخری فی هذه الآیة مع أن اسمه الاعظم یستحق جمیع ما هو
من الصفات الکاملة کما هی مذکورة فی الصحف المطهّرة
ثم إن کثرة الصفات تستلزم کثرة البرکات عند التلاوة۔
فالبسملة أحق وأولی بهذا المقام والمرتبة۔ وقد نُدِب لها عند
کل أمرٍ ذی بال کما جاء فی الاحادیث النبویة وإنها أکثر وردًا
علی ألسن أهل الملّة وأکثر تکرارًا فی کتاب الله ذی العزّة
فبأی حکمة ومصلحة لم یُکتب صفاتٌ أخری مع هذه
الآیة المتبرّکة فالجواب أن الله أراد فی هذا المقام أن یذکر مع

लिखते हैं ताकि जो बुद्धिमान है इस पर विचार कर सके और वह यह है कि अल्लाह ने अपनी कुल विशेषताओं में से केवल दो विशेषताओं 'अर्रहमान' और 'अर्रहीम' को ही बिस्मिल्लाह में क्यों चुना है और अन्य विशेषताओं का इस आयत में वर्णन नहीं किया बावजूद इसके कि उसका इस्म-ए-आज़म समस्त कामिल विशेषताओं का पात्र है जैसा कि यह पवित्र क़ुर्आन में वर्णित है। फिर विशेषताओं की अधिकता से तिलावत के समय, बरकतों की अधिकता हेतु अनिवार्य है। अत: आयत بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ इस स्थान और पद की अधिक हक़दार है और प्रत्येक कार्य के समय बिस्मिल्लाह पढ़ने की प्रेरणा दी गई है जैसा कि नबवी हदीसों में वर्णन किया जा चुका है और मुसलमानों के मुख पर सर्वाधिक विर्द (जप) इस आयत का होता है और अल्लाह तआला की पुस्तक में सब से अधिक इसी की पुनरावृत्ति है। फिर किस हिकमत और युक्ति के कारण इस पवित्र आयत के साथ दूसरी विशेषताएं नहीं लिखी गईं। इसका उत्तर यह है कि अल्लाह तआला ने इस स्थान पर इरादा किया कि वह अपने मुख्य नाम (अल्लाह) के साथ इन दो विशेषताओं का वर्णन करे जो उसकी समस्त महान विशेषताओं का पूर्णरूपेण

اسمه الاعظم صفتين هما خلاصة جميع صفاته العظيمة على الوجه التام وهما الرحمن والرحيم كما يهدى إليه العقل السليم فإن الله تجلّى علىٰ هٰذا العالم تارة بالمحبوبية ومرة بالمحبيّة وجعل هاتين الصفتين ضياءً ينزل من شمس الربوبيّة على أرض العبوديّة. فقد يكون الرب محبوبًا والعبد مُحِبًّا لذالك المحبوب وقد يكون العبد محبوبًا والرب مُحبًّا له وجاعله كالمطلوب. ولا شك أن الفطرة الإنسانية التى فُطرت على الْمُحبّة والخلّة ولوعة البال تقتضى أن يكون لها محبوبًا يجذبها إلى وجهه بتجلّيات الجمال والنعم والنوال وأن يكون له مُحِبًّا مُواسيًا يتَداركُ عند الاهوال وتشتّت الاحوال ويحفظها من ضيعة الاعمال ويوصلها إلى الآمال فأراد الله أن يُعطيها ما

सारांश है और वे दो विशेषताएं अर्रहमान और अर्रहीम हैं जैसा कि सद्बुद्धि भी इस की ओर मार्ग दर्शन करती है क्योंकि अल्लाह तआला इस संसार में कभी तो महबूब होने की शान के साथ प्रकट होता है और कभी प्रियतम होने के रूप में। और उसने इन दो विशेषताओं को ऐसी रोशनी ठहरा दिया है जो प्रतिपालन के सूर्य से दासता की ज़मीन पर उतरती है। तो इस प्रकार रब्ब कभी प्रियतम बन जाता है और बन्दा उस प्रियतम का प्रेमी, और कभी बन्दा प्रियतम बन जाता है और रब्ब उसका प्रेमी हो जाता है और उसे अपना अभीष्ट बना लेता है। और इस में कोई सन्देह नहीं कि मानवीय प्रकृति जिसमें प्रेम, दोस्ती और दर्द-ए-दिल रख दिया गया है इस बात की मांग करती है कि उसका कोई प्रियतम हो जो अपने सौन्दर्य, पुरस्कार और उपकार की तजल्लियों के द्वारा उसे अपने ओर आकर्षित करे और उस का ऐसा हमदर्द प्रेमी हो जो ख़तरों और बुरे हालात में उसकी सहायता को पहुंचे और प्रकृति को कर्मों के व्यर्थ होने से बचाए और उसे उसकी मनोकामनाओं तक पहुंचाए। तो अल्लाह ने चाहा कि जिसको फ़ितरत चाहती है उसे वह

اقتضتها و يُتمّ عليها نعمه بجوده العميم فتجلّٰى عليها بصفتيه الرحمٰن والرحيم ★ ولا ريب أن هاتين الصفتين هما الوُصلة بين الربوبية والعبودية وبهما يتم دائرة السلوك والمعارف الإنسانية فكل صفةٍ بعدهما داخلة فى أنوارهما و قطرة من

प्रदान करे और अपने विशाल दान से उस पर नेमत को पूर्ण करे। इसलिए वह अपनी दो विशेषताओं अर्रहमान और अर्रहीम के साथ उस पर प्रकट हुआ।★ इसमें कोई सन्देह नहीं कि दोनों विशेषताएं रुबूबियत और उबूदियत (दासता) के मध्य एक माध्यम हैं। और इन दोनों के द्वारा साधना तथा

★الحاشية:- قد عرفت ان اللّٰه بصفة الرحمٰن ينزل على كل عبد من الانسان والحيوان والكافر واهل الايمان انواع الاحسان والامتنان۔ بغير عمل يجعلهم مستحقين فى حضر الديّان اذ لاشك ان الاحسان علىٰ هٰذا المِنوال يجعل المحسنمحبوباً فى الحال فثبت ان الافاضة على الطريقة الرحمانية يظهر فى اعين المستفيضين شان المحبوبيّة و اما صفة الرحيميّة فقدالزمت نفسها شان المحبّية فان اللّٰه لا تتجلّٰى علىٰ احدٍ بهذا الفيضان الّا بعد ان يحبّه و يرضٰى به قولا و فعلا من اهل الايمان۔ منه

★**हाशिया :-** तू जानता है कि अल्लाह अपनी रहमान की विशेषता के साथ प्रत्येक इन्सान, हैवान, काफ़िर और मोमिन बन्दे पर अपने विभिन्न उपकार और कृपाएं उतारता है, उनके किसी कर्म के बिना जो प्रतिफल के मालिक के दरबार में उन्हें उन का प्रतिभागी बना दे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस ढंग से उपकार करना उपकारी को तुरंत महबूब बना देता है। अत: सिद्ध हुआ कि रहमानियत के तरीके पर 'फैज़ पहुंचाना' फैज़ प्राप्त करने वालों की निगाहों में उसकी महबूबियत की शान प्रकट करती है और जो रहीमियत की विशेषता है तो उसने अपने आप को प्रेमी की शान से अनिवार्य कर लिया है। अत: अल्लाह मोमिनों में से किसी एक पर उस फैज़ान का प्रकटन केवल उस समय करता है जब वह उस से प्रेम करे और कथनी एवं करनी की दृष्टि से उस से राज़ी हो। इसी से।

بحارهما ثم إن ذات الله تعالیٰ كما اقتضت لنفسها أن تكون لنوع الإنسان محبوبة ومُحبّة كذالك اقتضت لعباده الكُمّل أن يكونوا لبنى نوعهم كمثل ذاته خُلُقًا وسيرة۔ ويجعلوا هاتين الصفتين لانفسهم لباسًا وكسوةً ليتخلّق العبودية بأخلاق الربوبية ولا يبقى نقص فى النشأة الإنسانية فخلق النبيين والمرسلين۔ فجعل بعضهم مظهر صفته الرحمان وبعضهم مظهر صفته الرحيم ليكونوا محبوبين ومُحبين ويُعاشروا بالتحابب بفضله العظيم فأعطى بعضهم حظًّا وافرًا من صفة المحبوبية وبعضًا آخر حظًّا كثيرًا من صفة المُحبيّة۔ وكذالك أراد بفضله العميم۔ وجوده القديم ولَمّا جاء زمن خاتم

मानवीय अध्यात्म ज्ञानों का चक्र पूर्ण होता है। अत: इनके अतिरिक्त शेष समस्त विशेषताएं इन्हीं दो विशेषतओं के प्रकाशों में सम्मिलित हैं, और इन्हीं के समुद्रों की बूंद हैं। फिर जैसा कि अल्लाह तआला का अस्तित्व अपने लिए चाहता है कि वह मानव जाति के लिए महबूब हो और प्रेमी भी, इसी प्रकार उसने अपने आज्ञाकारी बन्दों के लिए यह चाहा कि वह मानवता के लिए आचरण और जीवन चरित्र में उसके समान हों और वे इन दोनों विशेषताओं को अपने लिए लिबास बनाएं ताकि उबूदियत (दासता) रबूबियत (प्रतिपालन) के शिष्टाचार अपना ले और इन्सानी विकास में कोई दोष शेष न रह जाए। इसीलिए अल्लाह ने नबियों और मुर्सलों को पैदा किया और उनमें से कुछ को अपनी रहमान की विशेषता का द्योतक बनाया तथा कुछ को अपनी विशेषता 'अर्रहीम' का द्योतक ताकि वह भी प्रियतम और प्रेमी (माशूक़ और आशिक़) बन जाएं और उसकी महान कृपा के साथ एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करें। तो उसने कुछ को प्रियतम की विशेषता से भरपूर हिस्सा प्रदान किया तथा कुछ को प्रेमी होने की विशेषता से बहुत सा हिस्सा प्रदान किया। इसी

النبيين وسيدنا محمد سيد المرسلين أراد هو سبحانه أن يجمع هاتين الصفتين فى نفسٍ واحدةٍ فجمعهما فى نفسه عليه ألف ألف صلوة و تحية فلذالك ذكر تخصيصًا صفة المحبوبية والمحبيّة على رأس هذه السورة ليكون إشارةً إلى هذه الإرادة وسمّى نبينا محمّدًا و أحمد كما سمّى نفسه الرحمان والرحيم فى هذه الآية فهذه إشارة الٰى أنه لا جامع لهما على الطريقة الظلية إلّا وجود سيدنا خير البريّة وقد عرفتَ أن هاتين الصفتين أكبر الصفات من صفات الحضرة الاحدية بل هما لبّ اللباب وحقيقة الحقائق لجميع أسمائه الصفاتية وهما معيار كمال كل من استكمل وتخلّق بالاخلاق الإلهية وما أُعطى نصيبًا

प्रकार ख़ुदा ने अपनी महान कृपा और अनादि दानशीलता से इरादा किया और फिर जब ख़ातमुन्नबिय्यीन और सय्यिदुल मुर्सलीन सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग आया तो अल्लाह तआला ने इरादा किया कि वह इन दोनों विशेषताओं को एक व्यक्ति में जमा कर दे तो उसने इन दोनों विशेषताओं को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्तित्व में इकट्ठा कर दिया। लाखों दरूद और सलाम हों आप पर। इसी कारण अल्लाह ने इस सूरह के प्रारंभ में ही महबूबियत और प्रेमी की विशेषताओं का विशेष तौर पर वर्णन किया है ताकि इस इरादे की ओर संकेत हो जाए। और उसने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद और अहमद रखा जैसा कि उसने अपना नाम इस आयत में अर्रहमान और अर्रहीम रखा है। यह इस ओर संकेत है कि ज़िल्ली (प्रतिरूपी) तौर पर सय्यदिना ख़ैरुल बरिय्य: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व के अतिरिक्त कोई और इन दो विशेषताओं का संग्रहीता नहीं और तू जान चुका है कि ये दो विशेषताएं अल्लाह तआला की समस्त विशेषताओं में से सबसे बड़ी विशेषताएं हैं। अपितु ये दोनों अल्लाह तआला की कुल विशेषताओं

كامـلا منهمـا إلّا نبيّنـا خاتـم سلسـلة النبـوّة فإنّـه أُعطـى اسـمين كمثـل هاتـين الصفتـين اوّلهمـا محمـد و الثـانى احمـد مـن فضـل ربّ الكونـين امـا محمـد فقـد ارتـدى رداء صفـت الرحمٰـن وتجـلّٰى فى حُلـل الجـلال والمحبوبيّـة وحُمِّـد لـبرٍّ منـه والإحسـان وأمّـا أحمـد فتجـلّى فى حـلّة الرحيميـة والْمُحبّيـة والجماليـة فضـلا مـن الله الذى يتـولى المؤمنـين بالعـون والنصـرة فصـار اسـما نبيّنـا بحـذاء صفـتى ربّنـا المنّـان كصـورٍ مُنعكسـةٍ تُظهرهـا مرآتـان متقابلتـان وتفصيـل ذالـك أن حقيقـة صفـة الرحمانيـة عنـد أهـل العرفـان هـى إفاضـة الخير لـكل ذى روح مـن الإنسـان وغـير

का सार और वास्तविकताओं की असलियत हैं। और यह हर उस मनुष्य के चरमोत्कर्ष की कसौटी हैं जो चरम का अभिलाषी है। और ख़ुदा के शिष्टाचार को अपनाना चाहता है और इन दोनों विशेषताओं से पूर्ण हिस्सा केवल और केवल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया है जो नुबुव्वत के सिलसिले के ख़ातम हैं। यही कारण है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन दोनों विशेषताओं के समान दोनों लोकों के रब्ब की कृपा से दो नाम प्रदान किए गए हैं। उन में से पहला नाम "मुहम्मद" है और दूसरा "अहमद"। जहां तक "मुहम्मद" का संबंध है तो यह रहमान की विशेषता की चादर ओढ़े हुए है और प्रताप तथा महबूबियत के रूप में प्रकट हो रहा है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नेकी और उपकार के कारण प्रशंसा की गई और अहमद नाम ने ख़ुदा तआला की कृपा से जो मोमिनों की सहायता का प्रतिपालक है रहीमियत और प्रेम एवं सौन्दर्य के लिबास में तजल्ली फ़रमाई। हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये दोनों नाम (मुहम्मद और अहमद) हमारे रब्ब मन्नान की दो विशेषताएं (अर्रहमान और अर्रहीम) के मुक़ाबले पर हैं जो उन प्रतिबिम्बत रूपों की तरह हैं जिन्हें आमने-सामने लगे दो दर्पण प्रकट करते हैं।

الإنسان من غير عمل سابقٍ بل خالصًا على سبيل الامتنان ولا شك ولا خلاف أن مثل هذه المنّة الخالصة التى ليست جزاء عمل عامل من البريّة هى تجذب قلوب المؤمنين إلى الثناء والمدح والمحمدة فيحمدون المحسنَ ويُثنون عليه بخلوص القلوب وصحة النيّة فيكون الرحمان مُحَمّدًا يقينا من غير وهم يجر إلى الريبة فإن المنعم الذى يُحسن إلى الناس من غير حقٍّ بأنواع النعمة يحمده كل من أُنعم عليه وهذا من خواص النشأة الإنسانية۔ ثم إذا كمل الحمد بكمال الإنعام۔ جذب ذالك إلى الحب التام فيكون المحسن محَمّدًا ومحبوبًا فى أعين

इसका विवरण यह है कि विवेकवानों के निकट रहमानियत की विशेषता की वास्तविकता यह है कि रहमानियत प्रत्येक जीवित इन्सान या ग़ैर इन्सान के लिए भलाई पहुँचाना है जो किसी पूर्व कर्म के बिना पूर्णत: स्वरूप होता है इसमें न तो कोई सन्देह है और न कोई मतभेद है कि इस प्रकार का शुद्ध उपकार जो सृष्टि में से किस काम करने वाले के काम का फल न हो, मोमिनों के दिलों को स्तुति, प्रशंसा और यशोगान की ओर आकर्षित करता है। अत: वे अपने उपकारी की हार्दिक निष्कपटता और सही नीयत से प्रशंसा और स्तुति करते हैं। इस प्रकार बिना किसी भ्रम के जो सन्देह एवं शंका में डाले रहमान निस्सन्देह मुहम्मद हो जाता है। क्योंकि ऐसी उपकार करने वाली हस्ती जो लोगों पर बिना किसी अधिकार के विभिन्न प्रकार के उपकार करे उस हस्ती की हर वह व्यक्ति प्रशंसा करेगा जिस पर उपकार और सम्मान किया जाता है और यह इन्सानी पैदायश की विशिष्टता है। फिर जब नेमत की पूर्णता के अनुसार प्रशंसा जब अपने चरम को पहुंच जाएं तो वह पूर्ण प्रेम को आकर्षित करने वाली बन जाती है। ऐसा उपकारी अपने प्रेमियों की निगाह में मुहम्मद और महबूब बन जाता है और यह रहमानियत की विशेषता का परिणाम है। अत: बुद्धिमानों की तरह सोच-

المحبّين فهذا مآل صفة الرحمان ففكر كالعاقلين وقد ظهر من هذا المقام لكل من له عرفان أن الرحمن محمّدٌ وأن محمدًا رحمان ولا شك أن مآلهما واحدٌ وقد جهل الحق من هو جاحدٌ وأمّا حقيقة صفة الرحيمية وما أُخفى فيها من الكيفية الروحانية فهى إفاضة إنعامٍ و خيرٍ على عملٍ من أهل مسجدٍ لا من أهل دَيّرٍ و تكميل عمل العاملين المخلصين وجبر نقصانهم كالمتلافين والمعينين والناصرين۔ ولا شك أن هذه الإفاضة فى حكم الحمد من الله الرحيم۔ فإنه لا يُنزِل هذه الرحمة على عاملٍ إلّا بعد ما حمده على نهجه القويم

विचार कर। इस स्थान पर प्रत्येक इर्फ़ान वाले पर स्पष्ट हो गया है कि रहमान मुहम्मद है और मुहम्मद रहमान है। निस्सन्देह दोनों (मुहम्मद और रहमान) का परिणाम एक ही है और जिसने इन्कार किया उसका कारण यह है क्योंकि उसने सच को नहीं पहचाना। और जहां तक रहीमियत की सिफ़त (विशेषता) की हक़ीकत और उसमें छुपी हुई रूहानी हालत का सम्बंध है तो वह अहले मस्जिद के कर्मों (अल्लाह वालों) पर उपकार और बरकत का फ़ैज़ है न कि अहले दैर (मन्दिर वालों) पर। और मुख़लिस काम करने वालों के कर्मों की पूर्ति और भरपाई करने वालों, सहयोगियों और सहायकों की तरह उनकी लापरवाहियों का निवारण अभीष्ट है और निस्सन्देह यह लाभ पहुंचाना रहीम ख़ुदा की प्रशंसा करने सम्बन्धित के आदेश में है क्योंकि वह अपनी यह रहमत किसी कर्म करने वाले पर केवल उस समय अवतरित करता है जब वह उचित रूप से उसकी प्रशंसा करता और उसके कर्म पर राज़ी होता है और उसे व्यापक कृपा के योग्य पाता है। क्या तुझे यह नज़र नहीं आता कि वह काफ़िरों, मुश्रिकों, दिखावा करने वालों और अहंकारियों के कर्म को स्वीकार नहीं करता अपितु वह उनके कर्मों को नष्ट कर देता है और उन्हें अपनी ओर हिदायत नहीं देता और न उनकी सहायता

ورضى به عملا ورآه مُستحقًّا للفضل العميم ألا ترى أنه لا يقبل عمل الكافرين والمشركين والمرائين والمتكبّرين بل يُحبط أعمالهم ولا يهديهم إليه ولا ينصرهم بل يتركهم كالمخذولين فلا شك أنّه لا يتوب إلى أحدٍ بالرحيمية ولا يُكمّل عمله بنصرة منه والإعانة إلّا بعد ما رضى به فعلا وحمده حمدًا يستلزم نزول الرحمة ثم إذا كمل الحمد من الله بكمال أعمال المخلصين۔ فيكون الله أحمد و العبد محمّدًا۔ فسبحان الله أوّل المحمّدين والاحمدين وعند ذالك يكون العبد المخلص فى العمل محبوبًا فى الحضرة۔ فإن الله يحمده من

करता है अपितु उन्हें असहाय लोगों के समान छोड़ देता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वह किसी मनुष्य की ओर अपनी रहीमियत की विशेषता के साथ ध्यान नहीं देता और न ही उसके कर्म को अपने सहयोग और सहायता से पूर्ण करता है परन्तु उस समय जब वह उस के काम से राज़ी हो जाए और उसकी पूर्ण प्रशंसा करे जो रहमत के उतरने के लिए अनिवार्य है। फिर जब मुख़लिसों के कर्मों की पूर्णता पर अल्लाह तआला की ओर से प्रशंसा पूर्णता को पहुंच जाए तो अल्लाह अहमद हो जाता है और बन्दा मुहम्मद। वह अल्लाह पवित्र है जो सब से पहला मुहम्मद और सब से पहला अहमद है। उस निष्ठावान समय बन्दा कर्म के कारण ख़ुदा के निकट महबूब हो जाता है क्योंकि अल्लाह अपने अर्श से उसकी प्रशंसा करता है और अल्लाह प्रेम के बाद ही किसी की प्रशंसा करता है। सारांश यह कि रहमानियत का पराकाष्ठा, अल्लाह को मुहम्मद और महबूब बना देती है और बन्दे को अहमद और ऐसा प्रेमी बना देती है जो महबूब की तलाश करने वाला होता है और रहीमियत का पराकाष्ठा अल्लाह को अहमद और प्रेमी बना देता है और बन्दे को मुहम्मद और महबूब। इस स्थान से आप उच्च श्रेणी इमाम, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान मालूम

عرشه وهو لا يحمد أحدًا إلّا بعد المحبّة فحاصل الكلام ان كمال الرحمانية يجعل الله مُحمّدًا ومحبوبًا ويجعل العبد أحمد ومُحِبًّا يستقرى مطلوبًا وكمال الرحيمية يجعل الله أحمد ومُحِبًّا ويجعل العبد مُحمّدًا وحِبًّا وستعرف من هذا المقام شأن نبينا الإمام الهمام فإن الله سمّاه مُحَمّدًا وأحمد وما سمّا بهما عيسٰى ولا كليمًا وأشركه فى صفتيه الرحمان والرحيم بما كان فضله عليه عظيمًا وما ذكر هاتين الصفتين فى البسملة إلّا ليعرف الناس أنهما لله كالاسم الاعظم وللنبى من حضرته كالخلعة فسمّاه الله محمدًا إشارة إلى ما فيه من صفة المحبوبية وسمّاه أحمد إيماءً إلى ما فيه من صفة

कर सकते हैं। निस्सन्देह अल्लाह ने आपका नाम मुहम्मद और अहमद रखा और इन दो नामों से (हज़रत) ईसा और मूसा कलीमुल्लाह को नामित न किया और उसने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ही अपनी दो विशेषताओं रहमान और रहीम में सम्मिलित किया। इसलिए कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह की बड़ी कृपा है और बिस्मिल्लाह में इन दोनों विशेषताओं का वर्णन करना केवल इस कारण है कि सब लोग जान जाएं कि ये दोनों विशेषताएं अल्लाह के लिए बतौर इस्म-ए-आज़म (सबसे बड़े नामों में से) हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ख़ुदा के दरबार से बतौर उपहार हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में जो महबूबियत (प्रियतम) की विशेषता है उसकी ओर संकेत करने के लिए अल्लाह ने आप का नाम मुहम्मद रखा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जो मुहिब्बयत (प्रेमी) की विशेषता है उसकी तरफ़ संकेत करने के लिए अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम अहमद रखा, और मुहम्मद इसलिए कि प्रशंसा करने वाले किसी मनुष्य की बहुत अधिक प्रशंसा उस समय तक नहीं कर सकते जब तक वह मनुष्य महबूब (प्रिय) न हो

الْمُحبّيـة أمّـا محمـد فلأجـل أن رجـلا لا يحمـده الحامـدون حمـدًا كثـيرًا إلّا بعـد أن يكـون ذالـك الرجـل محبوبـا وأمّـا أحمـد فلإجـل أن حامـدًا لا يحمـد أحـدًا بحمـدٍ كاثـر إلّا الذى يُحبّـه ويجعـله مطلوبًـا فـلا شـك أن اسـم محمـد يوجـد فيـه معـنى المحبوبيّـة بـدلالة الالتـزام وكذالـك يوجـد فى اسـم أحمـد معـنى الْمُحبّيـة مـن الله ذى الأفضـال والإنعـام۔ ولا ريـب أن نبيّنـا سُـمّى محمـدًا لمـا أراد الله أن يجعـله محبوبًـا فى أعينـه و أعـين الصالحـين و كذالـك سـمّاه أحمـد لمـا أراد سـبحانه أن يجعـله مُحِـبَّ ذاتِـه ومُحـبَّ المؤمنـين المسـلمين فهـو محمـد بشـأن وأحمـد بشـأن واختـصّ أحـد هذيـن الاسـمين بزمـان والآخـر بزمـان وقـد أشـار اليـه سـبحانه فى

और अहमद इसलिए कि कोई प्रशंसक किसी की बहुत प्रशंसा नहीं कर सकता सिवाए उसके जिस से वह प्रेम करे और उसे अपना अभीष्ट बना ले। अत: कोई सन्देह नहीं कि मुहम्मद के नाम में अनिवार्य महबूबियत (प्रियतम) का अर्थ पाया जाता है और इसी प्रकार समस्त कृपाओं और इनामों के मालिक अल्लाह की ओर से अहमद के नाम में प्रेमी का अर्थ पाया जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे नबी का नाम मुहम्मद इसलिए रखा गया क्योंकि अल्लाह ने इरादा किया कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी दृष्टि में और नेक लोगों की दृष्टि में महबूब बनाए और इसी प्रकार उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अहमद रखा क्योंकि अल्लाह तआला ने इरादा किया कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना प्रेमी और समस्त मोमिन मुसलमानों का प्रेमी बनाए आप एक शान से मुहम्मद हैं और दूसरी शान से अहमद हैं। उसने इन दो नामों में से एक नाम को एक युग के लिए और दूसरे नाम को दूसरे युग के लिए विशिष्ट कर दिया। और उस पवित्र हस्ती ने अपने कलाम دَنَـا فَتَـدَلّٰى अर्थात् वह नज़दीक हुआ फिर वह नीचे उतरा (सूरह अन्नज्म-9) और قَـابَ قَوْسَـيْنِ

قوله دَنَا فَتَدَلّٰى و فى قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۔

ثم لمّا كان يُظَنُّ أن اختصاص هذا النبى المُطاع السَجّاد بهذه المحامد من رَبّ العباد يجرّ إلى الشرك كما عُبِد عيسٰى لهذا الاعتقاد أراد الله أن يورثهما الامّة المرحومة على الطريقة الظلّيّة ليكونا للأمّة كالبركات المتعدّية وليزول وهم اشتراك عبدٍ خاصٍ فى الصفات الإلٰهية فجعل الصحابة ومن تبعهم مظهر اسم محمد بالشؤون الرحمانية الجلالية وجعل لهم غلبة ونصرهم بالعنايات المتوالية وجعل المسيح الموعود مظهر اسم أحمد وبعثه بالشؤون الرحيمية الجمالية و كتب فى قلبه الرحمة والتحنّن وهذّبه بالأخلاق الفاضلة العالية فذالك هو المهدى المعهود الذى

اَوْ اَدْنٰى (अर्थात् वह दो कमानों के मध्य प्रत्यंचा की तरह हो गया या उस से भी निकटतर। अन्नज्म-10) में इसी ओर संकेत किया है।

परन्तु फिर जब यह गुमान पैदा हो सकता था कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो लोगों के अनुकरणीय और अल्लाह के बहुत इबादत करने वाले हैं, संसार के प्रतिपालक द्वारा इन विशेषताओं से विशिष्ट करना लोगों को शिर्क की ओर झुका सकता है जैसा कि ऐसी ही आस्था के आधार पर हज़रत ईसा को उपास्य बना लिया गया तो अल्लाह ने इरादा किया कि वह उम्मते मरहूम: (दयनीय उम्मत) को ज़िल्ली (प्रतिरूप) तौर पर इन दो नामों (मुहम्मद और अहमद) का वारिस बना दे ताकि ये दोनों नाम उम्मत के लिए जारी रहने वाली बरकतों की तरह बन जाएं और ताकि ख़ुदाई गुणों में किसी विशेष बन्दे के भागीदार होने का भ्रम दूर हो जाए। तो उसने सहाबा[रज़ि॰] और उन का अनुसरण करने वालों को रहमानी (सौम्य) और रौद्र रूपी (प्रतापी) शान से मुहम्मद नाम का द्योतक बनाया, उन्हें विजय प्रदान की और अपनी निरन्तर अनुकम्पाओं से उनकी सहायता की। और मसीह मौऊद को अहमद नाम का द्योतक बना दिया और उसे रहीमियत और जमाली (सौम्य) शान से अवतरित किया और उसके दिल में दया और सहानुभूति

فيه يختصمون وقد رأوا الآيات ثم لا يهتدون ويصرّون على الباطل وإلى الحق لا يرجعون وذالك هو المسيح الموعود ولكنهم لا يعرفون وينظرون إليه وهم لا يُبصرون فإن اسم عيسٰى واسم احمد متّحدان فى الهويّة ومتوافقان فى الطبيعة ويدلّان على الجمال وترك القتال من حيث الكيفية وأمّا اسم محمد فهو اسم القهر والجلال و كلاهما للرحمان والرحيم كالاظلال ألا ترىٰ أن اسم الرحمٰن الذى هو منبع للحقيقة المحمدية يقتضى الجلال كما يقتضى شأن المحبوبية ومن رحمانيته تعالى أنه سخّر كل حيوان للإنسان من البقر والمعز والجمال والبغال والضان وإنه أهرق دماءً كثيرة لحفظ نفس الإنسان وما هو إلّا أمرٌ جلالى

रख दी और उसको उच्चकोटि के शिष्टाचार से सजाया। इसलिए यही वह महदी माहूद है जिसके संबंध में वे झगड़ते हैं। हालांकि उन्होंने खुली-खुली आयतें देखीं परन्तु फिर भी हिदायत न पाई, वे झूठ पर अड़े हुए हैं और सच्चाई की ओर नहीं झुकते और यही वह मसीह मौऊद है परन्तु वे नहीं पहचानते। वह उसकी ओर देखते हैं परन्तु विवेक की आंख से नहीं इसलिए कि ईसा का नाम और अहमद का नाम गुणों की दृष्टि से परस्पर एक जैसे हैं और स्वभाव की दृष्टि से परस्पर अनुकूल हैं और कैफ़ियत की दृष्टि से ये दोनों सौम्यता और युद्ध के परित्याग पर दलालत करते हैं। जबकि मुहम्मद नाम रौद्र और प्रतापी नाम है और ये दोनों रहमान और रहीम के प्रतिरूप के समान हैं नाम है क्या तू नहीं देखता कि रहमान का नाम जो हक़ीकत-ए-मुहम्मदिया का उद्गम है उसी प्रकार प्रताप को चाहता है जिस प्रकार शान महबूबियत को। यह अल्लाह तआला की रहमानियत ही तो है कि उस ने समस्त हैवानों को अर्थात् गाय, बकरी, ऊंट, खच्चर और दुंबों को इन्सान की सेवा में लगा दिया है और उसने इन्सानों की सुरक्षा के लिए बहुत खून बहाया। यही तो प्रतापी विषय है और रहमान ख़ुदा की रहमानियत का परिणाम है। अत: इस से यह सिद्ध हुआ कि रहमानियत, प्रकोप और रौद्रता का की माँग करती

ونتیجۃ رحمانیۃ الرحمان فثبت أن الرحمانیۃ یقتضی القھر والجلال ومع ذالك ھو من المحبوب لطف لمن أراد له النوال وكم من دود المیاہ والاھویۃ تُقتل للإنسان وكم من الانعام تُذبح للناس إنعامًا من الرحمان فخلاصۃ الكلام إن الصحابۃ كانوا مظاھر للحقیقۃ المحمّدیۃ الجلالیۃ ولذالك قتلوا قومًا كانوا كالسباع ونعم البادیۃ لیُخلّصوا قومًا آخرین من سجن الضلالۃ والغوایۃ ویجرّوھم إلی الصلاح والھدایۃ وقد عرفتَ أن الحقیقۃ المحمدیۃ ھو مظھر الحقیقۃ الرحمانیۃ ولا منافاۃ بین الجلال وھذہ الصفۃ الإحسانیۃ بل الرحمانیۃ مظھرٌ تامٌّ للجلال والسّطوۃ الربّانیۃ وھل حقیقۃ الرحمانیۃ إلّا قتل الذی

है इन दोनों के अतिरिक्त यह उस महबूब की उस मनुष्य पर अनुकंपा है जिस पर वह कृपा करना चाहे। कितने पानी और हवा में कीड़े हैं जो इन्सान के लिए मार दिए जाते हैं और कितने ही पशु हैं जो रहमान ख़ुदा की ओर से लोगों के लिए बतौर नेमत ज़िब्ह किए जाते हैं। अत: सारांश यह है कि सहाबा[रज़ि०] आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतापी शान के द्योतक थे। यही कारण है कि उन्होंने उस क़ौम को जो दरिन्दों और जंगली जानवरों की तरह थी क़त्ल किया ताकि इस प्रकार वे दूसरे लोगों को पथभ्रष्टता और गुमराही की क़ैद से रिहाई दें और उन्हें सुधार और हिदायत की ओर ले आएं। तू ख़ूब जान चुका है कि हक़ीकत मुहम्मदिया हक़ीक़ते रहमानियत की द्योतक है और इस इहसान (उपकार) और प्रताप (जलाल) की विशेषता में कोई अन्तर नहीं अपितु रहमानियत रब्बानी जलाल और धाक की पूर्ण द्योतक है और रहमानियत की हक़ीकत इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि तुच्छ को सर्वश्रेष्ठ के लिए क़ुर्बान किया जाए। और इन्सान तथा इसके अतिरिक्त दूसरी सृष्टि की पैदायश से रहमान (अर्थात् ख़ुदा) की यही सुन्नत जारी है। क्या तू नहीं देखता कि ऊंटों की जान बचाने के लिए ऊंटों के घावों के कीड़ों को कैसे मारा जाता है और स्वयं ऊंट इसलिए ज़िब्ह कर दिए जाते

هـو أدنى لـلذى هـو أعـلى و كذالـك جـرت عـادة الرحمٰـن مـذ خلـق
الإنسـان ومـا وراءه مـن الـورَى ألا تـرى كيـف تُقتـل دود جُـرح
الإبـل لحفـظ نفـوس الجمـال وتُقتـل الجمـال لينتفـع النـاس مـن
لحومهـا وجلودهـا و يتّخـذوا مـن أوبارهـا ثيـاب الزينـة والجمـال
وهـذه كلهـا مـن الرحمانيـة لحفـظ سلسـلة الإنسـانية والحيوانيـة
فكمـا أن الرحمـان محبـوب كذالـك هـو مظهـر الجـلال و كمثـله
اسـم محمـد فى هـذا الكمـال ثـم لمّـا ورث الاصحـاب اسـم محمـد
مـن الله الوهّـاب وأظهـروا جـلال الله وقتلـوا الظالمـين كالأنعـام
والدواب كذالـك ورث المسـيح الموعـود اسـم أحمـد ان لذى هـو
مظهـر الرحيميـة والجمـال واختـار له الله هـذا الاسـم ولمـن تبعـه

हैं ताकि लोग उनके गोश्त-पोस्त से लाभ उठाएं और उनकी ऊन से आंखों को अच्छा लगने वाले और सुन्दर वस्त्र बनाएं। और यह सब कुछ इन्सानी और हैवानी सिलसिले की सुरक्षा के लिए रहमानियत का करिश्मा है। फिर जिस प्रकार रहमान महबूब है उसी प्रकार वह प्रताप का द्योतक भी है और इस विशिष्टता में ठीक उसी तरह मुहम्मद नाम भी शामिल है। फिर जब वह्हाब (बेइन्तेहा देने वाला) ख़ुदा की ओर से सहाबा किराम[रज़ि॰] 'मुहम्मद' नाम के वारिस हुए और उन्होंने अल्लाह के जलाल (प्रताप) को प्रकट किया और उन्होंने अत्याचारियों को चौपायों और जानवरों की तरह क़त्ल कया। इसी प्रकार मसीह मौऊद 'अहमद' नाम का वारिस हुआ जो रहीमियत और जमाल (सौम्यता) का द्योतक है और अल्लाह ने उसके लिए और उसके अनुयायियों के लिए और उन सब के लिए जो उसकी आल (क़ौम) के समान हैं यह नाम चुना। अत: मसीह मौऊद अपनी जमाअत सहित अल्लाह की रहीमियत और अहमदियत की विशेषता का द्योतक है। ताकि अल्लाह तआला का कथन- वआख़रीन मिन्हुम (अर्थात् और उनके सिवा एक दूसरी क़ौम में भी वह उसको भेजेगा, अलजुम्अ: 4 -अनुवादक) पूरा हो और कोई नहीं जो रब्बानी इरादों को रोक सके ताकि नबवी द्योतकों की वास्तविकता पूरी हो। और

وصار له كالآل فالمسيح الموعود مع جماعته مظهر من الله
لصفة الرحيمية والاحمدية ليتم قوله وَ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ ولا رادّ
للإرادات الربانية وليتم حقيقة المظاهر النبوية وهذا هو
وجه تخصيص صفة الرحمانية والرحيمية بالبسملة ليدل
علٰى اِسْمَيْ محمد و أحمد ومظاهرهما الآتية أعنى الصحابة
ومسيح الله الذى كان آتيًا فى حلل الرحيمية والاحمدية ثم
نكرر خلاصة الكلام فى تفسير: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. فاعلم
أن اسم الله اسم جامد لا يعلم معناه إلّا الخبير العليم وقد أخبر
عزّ اسمه بحقيقة هذا الاسم فى هذه الآية وأشار إلٰى أنه ذاتٌ
مُتّصفةٌ بالرحمانية والرحيمية أى متصفة برحمة الامتنان
و رحمةٌ مقيَّدَةٌ بالحالة الإيمانية وهاتان رحمتان كماءٍ
أصفٰى وغذاءٍ أحلٰى من منبع الربوبية و كل ما هو دونهما

यही बिस्मिल्लाह के साथ रहमानियत और रहीमियत की विशेषता के विशिष्ट होने का कारण है ताकि मुहम्मद और अहमद नाम तथा उनके भविष्य में आने वाले द्योतकों पर मार्ग दर्शन करे। अर्थात् सहाबा तथा अल्लाह का वह मसीह जो रहीमियत और अहमदियत के रूप में आने वाला है। अब हम बिस्मिल्लाह की तफ़्सीर का सारांश पुनः वर्णन करते हैं। अतः जान लो कि अल्लाह का नाम इस्म जामिद है जिसे वास्तविक अर्थ केवल बहुत ख़बर रखने वाला तथा सर्वज्ञ ख़ुदा ही जानता है। प्रशंसनीय अल्लाह ने इस नाम की वास्तविकता इस आयत में बताई और उसने संकेत किया है कि अल्लाह वह हस्ती है जो रहमानियत और रहीमियत की विशेषताओं से विभूषित है अर्थात् इहसान (उपकार) वाली, रहमत और ईमानी अवस्था से सम्बद्ध रहमत से विशिष्ट है और यह दोनों रहमतें रबूबियत के स्रोत से निकलने वाले शुद्ध पानी और स्वादिष्ट भोजन के समान हैं। और इन दो विशेषताओं के अतिरिक्त समस्त अन्य विशेषताएं इन दो विशेषताओं की शाखाएँ हैं। और असल केवल रहमानियत और रहीमियत ही हैं और ये दोनों ख़ुदा के

من صفات فهو كشعب لهذه الصفات والاصل رحمانية و رحيمية و هما مظهر سرّ الذات ثم أعطى منهما نصيبٌ كاملٌ لنبيّنا إمام النهج القويم فجعل اسمه مُحمّدًا ظلّ الرحمان و اسمه أحمد ظلّ الرحيم والسرّ فيه أن الإنسان الكامل لا يكون كاملا إلّا بعد التخلّق بالاخلاق الإلٰهيّة وصفات الربوبيّة وقد علمتَ أن أمر الصفات كلها تؤول إلى الرحمتين اللتين سمّيناهما بالرحمانية والرحيمية وعلمت أن الرحمانية رحمةٌ مطلقةٌ على سبيل الامتنان ويَرِدُ فيضانها على كل مؤمن و كافر بل كل نوع الحيوان۔ وأمّا الرحيمية فهي رحمةٌ وجوبية من الله أحسن الخالقين۔ وجبت للمؤمنين خاصة من دون حيوانات أخرى والكافرين۔ فلزم أن يكون الإنسان الكامل أعنى محمدًا مظهر هاتين

रहस्य के द्योतक हैं। फिर इन दोनों विशेषताओं से हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो सीधे मार्ग के इमाम हैं पूर्ण हिस्सा प्रदान किया गया है। फिर अल्लाह ने आप का नाम मुहम्मद जो रहमान का प्रतिबिम्ब और अहमद जो रहीम का प्रतिबिम्ब है, बनाया और इसमें रहस्य यह है कि पूर्ण मनुष्य उस समय तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह ख़ुदाई शिष्टाचार और रब्बानी विशेषताओं द्वारा विशिष्ट न हो। और यह तुझे भली-भांति ज्ञात है कि समस्त विशेषताओं का योग यही दो रहमतें हैं जिनको हम ने रहमानियत और रहीमियत के नाम दिए हैं। और तू जानता है कि रहमानियत इहसान की दृष्टि से सामान्य रहमत है, जिसका लाभ प्रत्येक मोमिन, काफ़िर अपितु हर प्रकार के जानदार को पहुंचता है। रही रहीमियत तो वह सर्वोत्तम स्रष्टा ख़ुदा की विशिष्ट रहमत (दया) है जो दूसरे हैवानों और काफ़िरों के अतिरिक्त आवश्यकतानुसार केवल मोमिनों के लिए विशिष्ट है। अत: अनिवार्य हुआ कि पूर्ण मनुष्य अर्थात् (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन दोनों विशेषताओं के द्योतक हैं। यही कारण है कि सृष्टि के रब्ब

الصفتين فلذالك سُمّى محمدًا و أحمد من رب الكونين۔ وقال الله فى شأنه لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ فأشار الله فى قوله "عَزِيْزٌ" وفى قوله "حَرِيْصٌ" إلى أنه عليه السلام مظهر صفته الرحمان★ بفضله العظيم۔ لانه رحمة للعالمين كلهم ولنوع الإنسان والحيوان۔ وأهل الكفر والإيمان ثم قال بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ فجعله رحمانًا ورحيمًا كما لا يخفى على الفهيم وحمده وعزا إليه خُلُقًا عظيمًا من التفخيم والتكريم كما جاء فى القرآن الكريم وإن

की ओर से आप का नाम मुहम्मद और अहमद रखा गया है और अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में फ़रमाया कि

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

अनुवाद निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया उसे अत्यन्त कष्टदायक गुज़रता है जो तुम कष्ट उठाते हो (और) वह तुम पर भलाई का अत्यन्त अभिलाषी रहता है। मोमिनों के लिए अत्यन्त मेहरबान (और) बार-बार दया करने वाला है। (अत्तौबः 9/128) अल्लाह ने अपने कथन "अज़ीज़" और कथन "हरीस" में यह संकेत किया है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम उसकी महान कृपा से रहमान★की विशेषता के द्योतक हैं क्योंकि आप मानवजाति, हैवान और अहले कुफ्र-व-ईमान सब के लिए रहमतुल्लिल आलमीन हैं। फिर

★ قال الله تعالىٰ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۔ ولا يستقيم هٰذا المعنى الا فى الرحمانيّة فان الرحيميّة يختص بعالمٍ واحد من المؤمنين۔ منه

★**हाशिया :-** अल्लाह तआला ने फ़रमाया - وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ और हमने तुझे दुनिया के लिए साक्षात रहमत बना कर भेजा है। (अलअम्बिया-21/108) यह अर्थ तो रहमानियत की विशेषता पर ही चरितार्थ होते हैं क्योंकि रहीमियत तो केवल मोमिनों के साथ ही विशिष्ट है। इसी से।

سـألتَ مـا خُلُقُـهُ العظيـم فنقـول إنـه رحمـان ورحيـم ومُنِـحَ
هـو عليـه الصـلاة هذيـن النوريـن وآدم بـين المـاء والطـين
وكان هـو نبيًّـا ومـا كان لآدم أثـر مـن الوجـود ولا مـن
الاديـم وكان الله نـورًا فقضـى أن يخلـق نـورًا فخلـق محمـدَ
نِ الذى هـو كـدُرّ يتيـم وأشـرك اسـميه فى صفتيـه ففـاق كل
مـن أتى الله بقلـب سـليم وإنهمـا يتـلالآن فى تعليـم القـرآن
الحكيـم وإن نبيّنـا مركّـب مـن نـور موسٰى ونـور عيسٰـى
كمـا هـو مُركّـب مـن صفـتى ربّنـا الاعـلٰى فاقتضـى التركيـب
أن يُعطٰـى له هـذا المقـام الغريـب فلاجـل ذالـك سـمّاه الله
محمّـدًا وأحمـد فإنـه ورث نـور الجـلال والجمـال وبـه تفـرّد

بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (सूरह अत्तौबः 128) फ़रमा कर उसने आपको रहमान और रहीम बना दिया जैसा कि किसी बुद्धिमान पर छुपा नहीं। और अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा की और आपकी श्रेष्ठता और सम्मान के कारण आप की ओर उत्तम आचरण सम्बंधित किया जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में आया है कि यदि तुम यह प्रश्न करो कि आप स. का महान आचरण क्या है तो हमारा उत्तर यह है कि आप रहमान और रहीम हैं और आपको ही ये दोनों प्रकाश उस समय ही प्रदान कर दिए गए थे जब आदम अभी पानी और गीली मिट्टी की अवस्था के मध्य था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस समय भी नबी थे जब आदम के अस्तित्व और गोश्त-पोस्त का नामो निशान न था। अल्लाह नूर है और उसने फ़ैसला किया कि वह एक नूर पैदा करे तो उस ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया जो अद्वितीय मोती हैं। अल्लाह ने हुज़ूर के दो नामों मुहम्मद और अहमद को अपनी दो विशेषताओं रहमान और रहीम में सम्मिलित कर लिया। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के समक्ष आज्ञापालन करने वाला हृदय लेकर उपस्थित होने वाले समस्त लोगों पर प्रधानता ले गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु

وإنه أُعطى شأن المحبوبين وجَنَانُ الْمُحِبِّين كما هو من صفتى رب العالمين فهو خير المحمودين و خير الحامدين وأشركه الله فى صفتيه وأعطاه حظًّا كثيرًا من رحمتيه وسقاه من عينيه وخلقه بيديه فصار كقارورة فيها راح أو كمشكوٰة فيها مصباح و كمثل صفتيه أنزل عليه الفرقان وجمع فيه الجلال والجمال وركّب البيان وجعله سلالة التوراة والإنجيل ومرأةً لرؤية وجهه الجليل والجميل ثم أعطى الامّة نصيبًا من كأس هذا الكريم وعلّمهم من أنفاس هذا المتعلّم من العليم فشرب بعضهم من عين اسم محمد التى انفجرت من صفة الرحمانية وبعضهم اغترفوا من ينبوع اسم أحمد

अलैहि वसल्लम के ये दोनों नाम पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा में चमक रहे हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के नूर और ईसा अलैहिस्सलाम के नूर के उसी प्रकार संग्रहीता हैं, जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे उच्चतम रब्ब की दो विशेषताओं के संग्रहीता हैं। इस तरकीब की मांग थी कि आप को यह अछूता पद प्रदान किया जाता। अत: इसी कारण अल्लाह ने आप का नाम मुहम्मद और अहमद रखा और आप अपार रौद्र एवं सौम्यता के वारिस हुए और इस प्रकाश से अद्वितीय हुए और आप को उसी प्रकार महबूबों की शान और प्रेमियों का दिल प्रदान किया गया जिस प्रकार कि यह बात रब्बुल आलिमीन की दो विशेषताओं में से है। अत: आप सब प्रशंसा किए जाने वालों और प्रशंसकों में से उत्तम हैं। अल्लाह ने आप को अपनी इन दोनों विशेषताओं में सम्मिलित किया है और अपनी इन दोनों रहमतों में से आप को बहुत बड़ा भाग प्रदान किया और आप को अपने इन दोनों श्रोतों से तृप्त किया और अपने दोनों हाथों (रौद्र तथा सौम्य) के द्वारा आप को बनाया। अत: आप उस शीशे के समान हो गए जिसमें उत्तम शराब हो और

نـالذى اشـتمل عـلى الحقيقـة الرحيميـة و كان قـدرًا مُقـدّرًا
مـن الابتـداء ووعـدًا موقوتـا جاريًـا عـلى ألسُـن الانبيـاء أن
اسـم أحمـد لا تتجـلّى بتجـلّ تـامٍ فى أحـدٍ مـن الوارثـين إلّا فى
المسـيح الموعـود الذى يـأتى الله بـه عنـد طلـوع يـوم الديـن
وحشـر المؤمنـين ويـرى الله المسـلمين كالضعفـاء والإسـلام
كصبى نُبِـذ بالعـراء فيفعـل لـهم أفعـالا مـن لدنـه وينـزل لـهم
مـن السـماء فهنـاك تكـون له السـلطنة فى الارض كمـا هـى فى
الإفـلاك وتهلـك الاباطيـل مـن غـير ضـرب الاعنـاق و تنقطـع
الاسـباب كلهـا وترجـع الامـور إلى مالـك الاملاك وعـدٌ مـن
الله حـق كمثـل وعـدٍ تـمّ فى آخـر زمـن بـنى إسـرائيل إذ بُعـث
فيـهم عيسـى بـن مريـم فأشـاع الديـن مـن غـير أن يقتـل

उस ताक की तरह जिसमें दीपक हो और उसने अपनी इन दोनों विशेषताओं का प्रतिरूप आप पर पवित्र क़ुर्आन उतारा और उसमें रौद्रता एवं सौम्यता को जमा किया और उसके वर्णन को व्यापक बनाया और उसे तौरात और इंजील का निचोड़ और अपने जलील (प्रतिष्ठित) और जमील (सुन्दर) चेहरे के दर्शन के लिए दर्पण बनाया। फिर उसने इस करीम (कृपालु) के जाम से उम्मत को हिस्सा प्रदान किया और सर्वज्ञ ख़ुदा से इस शिक्षा प्राप्त की पवित्र शिक्षाओं से उन्हें शिक्षा दी तो उनमें से कुछ मुहम्मद नाम के उस श्रोत से जो रहमानियत की विशेषता से जारी हुआ, तृप्त हुए और कुछ ने अहमद नाम के श्रोत से जो रहीमियत की वास्तविकता पर आधारित है, चुल्लू भर-भर कर पिया और यह प्रारंभ से निश्चित प्रारब्ध था और निर्धारित समय पर पूर्ण होने वाला वादा था जो समस्त नबियों की ज़बानों पर जारी रहा क्योंकि अहमद नाम अपनी पूर्ण तजल्ली से वारिसों में से किसी में भी पूर्ण रूप से प्रकट नहीं होगा सिवाए मसीह मौऊद के कि, जिसे अल्लाह يَـوۡمُ الدِّيۡـنِ के प्रकटन और मोमिनों के पुन: व्यापक रूप से इकट्ठा होने के अवसर पर लाएगा और अल्लाह तआला मुसलमानों को

من عصى الرب الجليل و كان فى قدر الله العلىّ العليم أن يجعل آخر هذه السلسلة كآخر خلفاء الكليم فلاجل ذالك جعل خاتمة أمرها مستغنية من نصر الناصرين ومظهرًا لحقيقة مالك يوم الدين كما يأتى تفسيره بعد حين ومن تتمّة هذا الكلام أن نبينا خير الانام لما كان خاتم الانبياء واصفى الاصفياء وأحبّ الناس إلى حضرة الكبرياء أراد الله سبحانه أن يجمع فيه صفتيه العظيمتين على الطريقة الظلية فوهب له اسم محمد واحمد ليكونا كالظلين للرحمانية والرحيمية ولذالك أشار فى قوله اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ إلى أن العابد الكامل يُعطى له

कमज़ोरों की तरह और इस्लाम को उस बच्चे की तरह जिसे जंगल में फेंक दिया गया हो देखेगा। अत: वह अपनी ओर से उनके लिए (अद्भुत) काम दिखाएगा और स्वयं उनके लिए आकाश से उतरेगा। तब उस समय पृथ्वी पर भी वैसे ही उसकी बादशाहत स्थापित हो जाएगी जैसा कि आकाशों पर है। गर्दनें काटे बिना ही शैतान तबाह हो जाएंगे और समस्त साधन विच्छेद हो जाएंगे। और समस्त बातें सर्वशक्तिमान ख़ुदा की ओर लौट जायेंगी। यह अल्लाह का सत्य वादा है उस वादे के समान जो बनी इस्राईल के अंतिम युग में पूरा हुआ जब उन में ईसा इब्ने मरयम अवतरित किए गए और उन्होंने दुष्टों को क़त्ल किए बिना धर्म का प्रसार किया। और यह सर्वव्यापी एवं पवित्र ख़ुदा की तक़दीर में था कि वह इस सिलसिला (मुहम्मदिया) के अन्त को भी मूसा कलीमुल्लाह के ख़लीफ़ाओं के अन्त जैसा बनाए। इसी कारण उसने इस सिलसिला के अंजाम को अन्य सहायकों की सहायता के नि:स्पृह रखा और इसे مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ की वास्तविकता की अभिव्यक्ति बना दिया जैसा कि थोड़े समय पश्चात इसकी तफ़सीर आएगी। इस वर्णन का उपसंहार यह है कि हमारे नबी ख़ैरुल अनाम जबकि ख़ातमन नबिय्यीन सल्लालाहो अलैहि वस्सल्लम विशिष्टों के विशिष्ट और हज़रत किब्रिया (अर्थात्

صفات رب العالمين بعد أن يكون من العابدين الفانين وقد علمتَ أن كل كمال من كمالات الاخلاق الإلهية مُنحصرٌ فی كونه رحمانًا ورحيمًا و لذالك خصّهما الله بالبسملة وعلمتَ أن اسم محمد وأحمد قد أُقيما مقام الرحمان والرحيم و أودعهما كل كمال كان مخفيّا فی هاتين الصفتين من الله العليم الحكيم فلا شك أن الله جعل هذين الاسمين ظلّين لصفتيه ومظهرين لسيرتيه ليُری حقيقة الرحمانية والرحيمية فی مرآة المحمّدية والاحمدية ثم لمّا كان كُمّل أمّته عليه السلام من أجزائه الروحانية وكالجوارح للحقيقة النبوية أراد الله لإبقاء آثار هذا

अल्लाह तआला) को समस्त लोगों से प्रिय हैं तो अल्लाह सुबहानुहू तआला ने इरादा किया कि वह आप सल्लालाहो अलैहि वस्सल्लम में अपनी दो महान विशेषताएं प्रतिरूपी तौर पर इकट्ठी करे। अत: उसने आँहज़रत सल्लालाहो अलैहि वस्सल्लम को मुहम्मद और अहमद नाम प्रदान किए ताकि यह दो नाम रहमानियत और रहीमीयत के लिए बतौर प्रतिरूप हों। इसलिए उसने अपने कथन اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ में इस ओर संकेत किया कि एक पूर्ण इबादत करने वाले को समस्त संसार के रब्ब अल्लाह की विशिष्टता प्रदान की जाती हैं जब वह अल्लाह के लिए लीन होने वालों में सम्मिलित हो जाए और तू जानता है कि इलाही विशेषताओं की पूर्णता में से प्रत्येक पूर्णता उसके रहमान और रहीम होने पर निर्भर है। इसीलए अल्लाह ने इन दोनों को बिस्मिल्लाह के साथ विशिष्ट किया। और तूने जान लिया है कि मुहम्मद और अहमद के नाम रहमान और रहीम के क़ायम मुक़ाम हैं। और अलीम (सर्वज्ञ) और हकीम अल्लाह ने इन दो विशेषताओं में प्रत्येक वह विशिष्टता जो इन (विशेषताओं) में छुपी हुई थी, रख दी। इसलिए नि:संदेह अल्लाह ने इन दोनों नामों को अपनी दोनों विशेषताओं का प्रतिरूप और अपनी दोनों अवस्थाओं का द्योतक बना दिया ताकि मुहम्मदिय्यत और अहमदियत

النبی المعصوم أن یورثهم هذین الاسمین کما جعلهم
وُرثاء العلوم فأدخل الصحابة تحت ظلّ اسم محمد
نالذی هو مظهر الجلال وأدخل المسیح الموعود
تحت اسم أحمد نالذی هو مظهر الجمال وما وجد
هؤلاء هذه الدولة إلّا بالظلیة فإذن ما ثَمَّ شریكٌ علی
الحقیقة وکان غرض الله من تقسیم هذین الاسمین أن
یُفرّق بین الامة ویجعلهم فریقین فجعل فریقًا منهم
کمثل موسٰی مظهر الجلال وهم صحابة النبی الذین
تصدّوا أنفسهم للقتال وجعل فریقًا منهم کمثل
عیسٰی مظهر الجمال وجعل قلوبهم لیّنةً وأودع السلم
صدورهم وأقامهم علی أحسن الخصال وهوالمسیح

के दर्पण में अपनी रहमानियत और रहीमियत की वास्तविकता दिखाए। फिर जबकि आप (स.) की उम्मत के औलिया उल्लाह आप के आध्यात्मिक अंग और हकीक़त-ए-नब्विया के लिए अंग समान हैं तो अल्लाह ने इस मासूम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत शेष रखने के लिए इरादा फ़रमाया कि वह उन्हें इन दो नामों का उसी प्रकार वारिस बनाये जिस प्रकार उसने उन्हें (आप सल्लम के) ज्ञान का वारिस बनाया इसलिए उसने सहाबा को मुहम्मद के नाम का जो ख़ुदा के प्रताप का द्योतक है, के प्रतिरूप के अधीन दाखिल किया। और मसीह मौऊद को अहमद का नाम के अंतगर्त रखा जो सौम्यता का द्योतक है प्रारूप इन सब ने यह दौलत प्रतिरूप के तौर पर प्राप्त की। अत: नि:सन्देह इस स्थान पर कोई साझीदार नहीं है। इन दो नामों को विभाजन से अल्लाह तआला का यह उद्देश्य था कि वह उम्मत को विभाजित करे और उसके दो समूह बना दे। अत: उसने उनमें से एक समूह को मूसा अलैहिस्सलाम के समान प्रताप का द्योतक बनाया और वे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वह सहाबा हैं जिन्होंने अपने आप को जंगों के लिए प्रस्तुत कर दिया। और अल्लाह ने उनमें

الموعــود والذيــن اتّبعــوه مــن النســاء والرجــال فتــمّ مــا قــال مــوسٰى ومــا فــاه بــكلام عيسٰــى وتــمّ وعــد الــربّ الفعّــال فــإن مــوسٰى أخــبر عــن صحــبٍ كانــوا مظهــر اســم محمــد نبينــا المختــار وصــور جــلال الله القهّــار بقــوله أَشِــدَّاءُ عَــلَى الْكُفَّــارِ ۔

وإن عيســى أخــبر عــن "آخَرِيْــنَ مِنْــهُمْ" وعــن إمــام تلــك الابــرار أعــنى المســيح الذى هــو مظهــر أحمــد الراحــم الســتّار ومنبــع جمــال الله الرحيــم الغفّــار بقــوله كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ الذى هــو معجــب الكفــار و كل منهمــا أخــبر بصفــاتٍ تناســب صفاتــه الذاتيــة واختــار جماعــة تشــابه أخلاقــهم أخلاقــه المرضيــة فأشــار مــوسٰى بقــوله أَشِــدَّاءُ عَــلَى الْكُفَّــارِ إلى صحابــةٍ أدركــوا صُحبــة نبيّنــا

से एक समूह को हज़रत ईसा की तरह सौम्यता का द्योतक बनाया और उनके दिलों को नरम बनाया और उनके सीनों में सलामती रख दी। और उन्हें अत्यन्त उच्च शिष्टाचारों पर स्थापित किया और वह मसीह मौऊद और उसका अनुपालन करने वाले मर्द एवं औरतें हैं। इस प्रकार जो (हज़रत) मूसा ने फ़रमाया और जो (हज़रत) ईसा ने फ़रमाया था वह पूर्ण हुआ और क़ादिर रब्ब का वादा पूरा हुआ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन सहाबाओं के संबंध में सूचना दी थी जो हमारे पवित्र नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम के द्योतक और ख़ुदा के कलाम أَشِــدَّاءُ عَــلَى الْكُفَّــارِ☆ के अनुसार कह्हार ख़ुदा के प्रताप के द्योतक थे।

और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सहाबा में से "आख़रीन मिन्हुम" (अर्थात् आख़रीन के समूह) और उन नेक लोगों के इमाम अर्थात उस मसीह के संबंध में जो रहम करने वाले, सत्तार 'अहमद' का द्योतक और रहीम और अपार ख़ुदा के जमाल का स्रोत है अपने वचन كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ अर्थात् खेती के समान है जो अपनी कोंपल निकाले (सूरह फ़तह 30) में भविष्यवाणी की थी कि वह

☆अनुवाद - वे काफ़िरों के मुक़ाबले पर बहुत सख़्त है। (सूरह फ़तह - 30)

المختـار وأَروا شـدّةً وغلظـةً فی المضمـار۔ وأظهـروا جـلال اللّٰہ بالسـیف البتّـار وصـاروا ظـلّ اسـم محمّـد رسـول اللّٰہ القهّـار علیـه صلـوات اللّٰہ وأهـل السـماء وأهـل الارض مـن الابـرار والاخیـار وأشـار عیسـی بقـوله كَـزَرْعٍ اَخْـرَجَ شَطْـَٔهٗ★ إلی قومٍ آخَرِیْـنَ مِنْـهُمْ وإمامـهم المسـیح بـل ذكـر اسـمه أحمـد بالتصریـح وأشـار بهـذا المثـل الذی جـاء فی القـرآن المجیـد

ऐसी खेती के समान है जो किसानों को ख़ुश करती है। इन दोनों नबियों ने उन विशेषताओं की भविष्यवाणी की जो उनकी अपनी निजी विशेषता से संबंध रखती है और ऐसी जमाअत का चयन किया जिनके शिष्टाचार उनके अपने प्रिय शिष्टाचारों के समरूप थे। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने वचन أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ में उन सहाबा की ओर संकेत किया जिन्होंने हमारे पवित्र रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साहचर्य प्राप्त किया और उन्होंने रण भूमि में दृढ़ता और बहादुरी का प्रदर्शन किया और अल्लाह के तेज को तेज़ तलवार द्वारा प्रकट किया और अति शक्तिशाली ख़ुदा के रसूल मुहम्मद के नाम के प्रतिरूप बन गए। दरूद सलाम हो आप पर अल्लाह का, आसमान वालों का और ज़मीन के नेक एवं अच्छों का। और हज़रत ईसा ने अपने कथन كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ★ में सहाबा के एक अन्य समूह और उनके इमाम मसीह मौऊद की ओर इशारा किया है

★اعلـم یـا طالـب العرفـان انـه مـا جـاء فی كتـاب اللّٰہ الفرقـان ان الصحابـة كانـوا رحمـاء علٰی اهـل البغـی والعـدوان۔ وامـا رُحَـم بعضـهم عـلی بعـضٍ فـلا یخرجـهم مـن الجـلالیّـة۔ بـل تزیـد قـوّة الجـلال كونـهم فی صـورة الوحـدةِ فانّـهم كشـخص واحـدٍ عنـداللّٰہ وكالجـوارح لحضـرة الرسـالة۔

★हाशिया :- हे इरफान के अभिलाषी! यह अच्छी तरह से जान ले कि अल्लाह तआला की पुस्तक फुरकान हमीद में यह कहीं नहीं आया कि (आदरणीय) सहाबा बाग़ियों और सरकशों पर रहम करने वाले थे। शेष रहा सहाबा का एक दूसरे से रहमत एवं शफ़कत का सलूक तो वह उन्हें जलालियत के दायरे से बाहर नहीं करता बल्कि उनका एक लड़ी में पिरोया होना जलाल की शक्ति में बढ़ोतरी करता है। क्योंकि वे अल्लाह के

إلى أن المسيح الموعود لا يظهر إلّا كنبات ليّنٍ لا كالشيء الغليظ الشديد ثم من عجائب القرآن الكريم أنه ذكر اسم أحمد حكايتًا عن عيسٰى وذكر اسم محمد حكايتًا عن موسٰى ليعلم القارء أن النبي الجلالي أعني موسى اختار

बल्कि उसके नाम अहमद का व्याख्यात्मक रूप से वर्णन किया है और पवित्र क़ुर्आन में आने वाले इस उदाहरण में उसने इशारा किया है कि मसीह मौऊद नरम हरियाली के समान प्रकट होगा न कि किसी कठोर और सख़्त वस्तु के समान। फिर यह भी पवित्र क़ुर्आन के चमत्कारों में से है कि उसने अहमद नाम का ईसा (अलैहिस्सलाम) से हिकायत के तौर पर वर्णन किया और मुहम्मद नाम का वर्णन

ولا يختلج في قلب انّ مثل الزرع مشترکٌ في التوراة والانجيل فانّ هٰذا المثل قد خُصّ بکتاب عيسٰی في التنزيل۔ ثم لا نجده في التوراة ونجده في الانجيل بالتفصيل ومن المعلوم انّ القرّاء الکبار يقفون علٰی قوله تعالٰی مثلهم في التوراةِ ولا يلحقون به هٰذا المثل عندقراءة هٰذه الاٰيات۔ بل يخصونه بالانجيل يقينًا من غير الشبهات ولاجل ذالك کتب الوقف الجائز عليه في جميع المصاحف المتداولة وان کنت في شك فانظر اليهالزيادةالمعرفة۔منه

निकट एक व्यक्ति के समान और हज़रत रिसालत मआब (सल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लिए बतौर अंगों के थे और यह बात किसी के दिल में न खटके कि खेती का उदाहरण तौरात और इंजील में साझा है। कदापि नहीं। क्योंकि यह उदाहरण क़ुर्आन करीम में ईसा की पुस्तक (इंजील) से विशिष्ट की गई। फिर हम उसे तौरात में नहीं पाते। और विस्तार सहित इंजील में पाते हैं और यह प्रसिद्ध है कि बड़े-बड़े क़ारी पवित्र क़ुर्आन की आयत مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ पर ठहराव करते हैं और इन आयतों को पढ़ते समय इस उदाहरण को तौरात शब्द के साथ मिलाकर नहीं पड़ते बल्कि नि:संदेह वास्तविक तौर पर उसे केवल इंजील के साथ विशिष्ट करते हैं। यही कारण है कि समस्त प्रचलित सहीफ़ों में तौरात के शब्द पर ठहराव अनिवार्य लिखा हुआ है। यदि आपको इस विषय में संदेह हो तो ज्ञान की वृद्धि के लिए वहां अध्ययन करें। इसी से।

اسمًا يُشابه شأنه أعني محمد نالذى هو اسم الجلال و كذالك اختار عيسى اسم أحمد نالذى هو اسم الجمال بما كان نبيّا جماليًا وما اعطى له شيء من القهر والقتال فحاصل الكلام أن كُلًّا منهما أشار إلى مثيله التام فاحفظ هذه النكتة فإنها تُنجيك من الاوهام وتكشف عن ساقى الجلال والجمال وتُرى الحقيقة بعد رفع الفدام وإذا قبلتَ هذا فدخلتَ فى حِفظ الله و كلاءه من كل دجّال۔ و نجوتَ من كل ضلال۔

मूसा (अलैहिस्सलाम) से हिकायत के तौर पर किया ताकि पढ़ने वाले को यह ज्ञात हो जाए कि प्रतापी नबी अर्थात हज़रत मूसा ने वह नाम निर्वाचित किया जो उनकी अपनी शान के अनुसार है अर्थात मुहम्मद जो प्रतापी नाम है और इसी प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने जमाली (सौम्य) नबी होने के नाते अहमद नाम चुना जो जमाली (सौम्य) नाम है और उसे क़हर एवं युद्ध से कोई संबंध नहीं। अत: सारांश यह कि उन दोनों (मूसा और ईसा) में से हर एक ने अपने-अपने पूर्ण प्रतिरूप की ओर संकेत किया है। अत: तू इस बिंदु को दिमाग में बिठा ले क्योंकि यह तुझे अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाएगा और जलाल और जमाल दोनों पहलुओं को प्रकट करेगा और पर्दा उठाने के बाद सत्यता को स्पष्ट करेगा और जब तू यह स्वीकार कर लेगा तो प्रत्येक दज्जाल से अल्लाह की सुरक्षा और उसकी शरण में आ जाएगा और प्रत्येक गुमराही से मुक्ति प्राप्त कर लेगा।

الباب الرابع
فی تفسیر
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ

اعلم أن الحمد ثناءٌ على الفعل الجميل لمن يستحق الثناء ومدحٌ لِمُنعمٍ أنعم من الإرادة وأحسن كيف شاء ولا يتحقّق حقيقة الحمد كما هو حقّها إلّا للذی هو مبدءٌ لجميع الفيوض والانوار ومُحسنٌ علی وجه البصيرة لا من غير الشعور ولا من الاضطرار فلا يوجد هذاالمعنی إلّا فی الله الخبير البصير وإنه هو المحسن ومنه المنن كلّها فی الاوّل والاٰخر وله الحمد فی هذه الدار وتلك الدار وإليه

चौथा अध्याय
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ
की व्याख्या

स्पष्ट हो कि स्तुति वह प्रशंसा है जो किसी व्यक्ति के अच्छे कार्य पर की जाती है जो उस प्रशंसा योग्य हो और शब्द मद: उस उपकार करने वाले के लिए है जो इरादे के साथ उपकार करता और जैसे चाहे एहसान करता है और वास्तव में स्तुति पूर्णत: उसी हस्ती के लिए विशिष्ट होती है जो समस्त फैज़ों और नूरों का स्त्रोत हो और समझ बूझ कर एहसान करे, न कि बेध्यानी में और न किसी विवशता से, और यह अर्थ केवल और केवल ख़बर रखने वाले और देखने वाले (ख़ुदा) में पाया जाता है। वही एहसान करने वाला है कि प्रथम और अंतिम समस्त उपकार उसी की ओर से प्रकटन में आते हैं। इस संसार और उस संसार में वास्तविक स्तुति उसी को शोभनीय है और जो भी प्रशंसा दूसरों की ओर संबंधित की जाती है वह वास्तव में उसी हस्ती की है। इस आयत में शब्द

يرجع كل حمد يُنسب إلى الاغيار ثم إن لفظ الحمد مصدرٌ مبنيٌّ على المعلوم والمجهول وللفاعل والمفعول من الله ذى الجلال ومعناه أن الله هو محمّدٌ وهو أحمد على وجه الكمال والقرينة الدالة على هذا البيان أنه تعالى ذكر بعد الحمد صفاتا تستلزم هذا المعنى عند أهل العرفان والله سبحانه أومأ فى لفظ الحمد إلى صفات توجد فى نوره القديم ثم فسّر الحمد وجعله مخدّرة سَفَرَتْ عن وجهها عند ذكر الرحمان والرحيم فإن الرحمان يدل على أن الحمد مبنى على المعلوم والرحيم يدل على المجهول كما لا يخفٰى على أهل العلوم وأشار الله سبحانه فى قوله "رَبِّ الْعَالَمِينَ" إلى

'हम्द' (अर्थात स्तुति) प्रतापवान ख़ुदा की ओर से मसदर (धातु) है जो मारूफ़ और मजहूल दोनों पर आधारित है और कर्ता और कर्म दोनों के लिए प्रयोगात्मक है। अभिप्राय इसका यह है कि अल्लाह ही मुहम्मद और अहमद का चर्मोत्कर्ष है और इस बयान पर दलालत करने वाला बिन्दु यह है कि अल्लाह तआला ने 'हम्द' के पश्चात उन विशेषताओं का वर्णन किया है जो आध्यात्मिक ज्ञान रखने वालों के निकट इस अर्थ के लिए अनिवार्य हैं। पवित्र अल्लाह ने हम्द के शब्द में उन विशेषताओं की ओर संकेत किया है जो उसके शश्वत नूर में पाई जाती हैं। फिर उसने शब्द हम्द की व्याख्या की और उसे एक ऐसी पर्दा की हुई दुल्हन के चेहरे के रूप में प्रस्तुत किया जो रहमान और रहीम के वर्णन के अवसर पर अपने चेहरे से नकाब उठाती है क्योंकि रहमान का शब्द इस विषय पर संकेत करता है कि शब्द हम्द "मसदर मारुफ़" है और इसी प्रकार रहीम का शब्द हम्द के "मसदर मजहूल" होने पर संकेत करता है जैसा कि विद्वानों पर छुपा नहीं। और अल्लाह सुबहानुहू तआला ने अपने वचन रब्बुल आलमीन में इस ओर इशारा किया है कि वही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और

أنــه هــو خالــق كل شيء ومنــه كُلَّمَــا فى السّــمٰوات والارضــين ومــن العالمــين مــا يوجــد فى الارض مــن زمــر المهتديــن وطوائــف الغاويــن والضالــين فقــد يزيــد عالــم الضــلال والكفــر والفســق وتــرك الاعتــدال حــتى يمــلاء الارض ظلمًــا وجــورًا ويــترك النــاس طــرقَ اللهِ ذاالجــلال لا يفهمــون حقيقــة العبوديــة ولا يــؤدّون حــق الربوبيــة فيصــير الزمــان كالليــلة الليــلاء ويُــداسُ الديــن تحــت هــذه الــلاوَاء ثــم يــأتى الله بعالــم آخــر فتُبَــدّل الارضُ غــير الارض و ينــزل القضــاء مُبــدّلا مــن الســماء ويُعطَــى للنــاس قلــبٌ عــارفٌ ولســانٌ ناطــقٌ لشــكر النعمــاء فيجعلــون نفوســهم كمــورٍ مُعَبَّــدٍ لحضــرة الكبريــاء ويأتونــه خوفًــا ورجــاءً بطــرف مغضــوضٍ مــن

जो आसमानों में और जो ज़मीनों में है वह सब उसी की ओर से है और ज़मीन में जो सन्मार्ग प्राप्त लोगों के समूह और भटके हुए और गुमराहों के समूह पाए जाते हैं वह सब 'आलमीन' में शामिल हैं। कभी ऐसा होता है कि गुमराही, कुफ्र और फ़िस्क और अन्याय की अवस्था इतनी बढ़ जाती है कि ज़मीन ज़ुल्म एवं अत्याचार से भर जाती है, लोग प्रतापवान ख़ुदा के रास्तों को छोड़ देते हैं और बन्दगी की वास्तविकता को नहीं समझ पाते और उधर ख़ुदा तआला का अधिकार भी पूर्ण नहीं कर पाते। अत: ज़माना एक अन्धेरी रात के समान हो जाता है और धर्म उस सख़्ती के नीचे दबाया जाता है। फिर उसके पश्चात अल्लाह एक और संसार को प्रकट करता है जिसके परिणाम स्वरूप ज़मीन एक और ज़मीन में परिवर्तित कर दी जाती है और आसमान में एक नई तक़दीर अवतरित होती है और लोगों को सच्चाई को पहचानने वाला दिल और नेमतों पर शुक्रगुज़ारी करने वाली ज़बान प्रदान की जाती है जिस पर वह अपने दिलों को ख़ुदा तआला के दरबार में एक पैरों तले कुचले हुए मार्ग के समान बना लेते हैं और भय तथा आशा की अवस्था में उसके समक्ष शर्म से झुकी हुई आँख और ऐसे

الحياء و وجه مقبل نحو قبلة الاستجداء وهمّة فی العبودية قارعة ذُروَة العلاء ويشتد الحاجة إليهم إذا انتهى الامر إلى كمال الضلالة وصار الناس كسباع أو نَعَمٍ من تغيّر الحالة فعند ذالك تقتضى الرّحمة الإلٰهية والعناية الازلية أن يُخلق فی السماء ما يدفع الظلام ويهدم ما عمّر إبليسُ و أقام من الابنية والخيام فينزل إمامٌ من الرحمٰن ليذُبّ جنود الشيطان ولم يزل هذه الجنود و تلك الجنود يتحاربان ولا يراهم إلّا من اعطى له عينان حتى غُلّ أعناق الاباطيل وانعدم ما يُرى لها نوع سراب من الدليل فما زال الإمام ظاهرًا على العِدا ناصرًا لمن اهتدى معليا معالم الهدى

चेहरे के साथ प्रस्तुत होते हैं कि जो दान-दक्षिणा के केंद्र की ओर देख रहा हो। और बन्दगी में ऐसी हिम्मत के साथ जो बुलंदी की चोटी को दस्तक दे रही होती है। और जब मामला अत्यंत गुमराही की सीमा तक पहुंच जाए और हालत के परिवर्तन के कारण लोग दरिंदों और जानवरों जैसे बन जाएँ तो उन (पवित्र लोगों) की आवश्यकता अत्यंत बढ़ जाती है और फिर उस वक्त रहमत-ए-इलाही और शाश्वत दयालुता इस बात की मांग करती है कि आसमान में वह वजूद पैदा करे जो इन समस्त अंधकारों को दूर करे। उन इमारतों को जिनका इब्लीस ने निर्माण किया और उन तम्बुओं को जो उसने ने खड़े किए ध्वस्त कर दे। तब इन शैतानी लश्करों को रोकने करने के लिए ख़ुदा-ए-रहमान की ओर से एक इमाम अवतरित होता है और यह दोनों लश्कर जिनको वही व्यक्ति देखता है जिसकी दो आंखें हों, हमेशा लड़ते रहते हैं। यहां तक कि झूठे की गर्दनों में बेड़ियाँ डाल दी जाती हैं और झूठ की मृगतृष्णा समान दलील विलुप्त हो जाती है। और वह इमाम सदैव शत्रुओं पर विजयी रहता है। वह हिदायत पाने वालों का सहायक और हिदायत के निशानों को बुलंद करने वाला और तक्वा

مُحييًا مواسم التُّقٰى حتى يعلم الناس أنه أَسَر طواغيت الكفر وشدّ وثاقها وأخذ سباع الاكاذيب وغلّ أعناقها وهدم عمارة البدعات وقوّض قبابها وجمع كلمة الإيمان ونظم أسبابها وقوّى السلطنة السماوية وسدّ الثغور وأصلح شأنها وسدّد الامور وسكّن القلوب الراجفة وبكّت الالسنة المرجفة وأنار الخواطر المظلمة وجدّد الدولة المخلقة و كذالك يفعل الله الفعّال حتى يذهب الظلام والضلال فهناك ينكص العدا على أعقابهم ويُنكّسون ما ضربوا من خيامهم ويحلّون ما اربوا من آرابهم ومن أشرف العالمين وأعجب المخلوقين وجود الانبياء والمرسلين وعباد

के मौसमों को जिंदगी प्रदान करने वाला है। यहां तक कि लोग यह जानने लगते हैं कि उस (इमाम) ने कुफ्र के शैतानों को क़ैद कर दिया और उनके मटको को बांध दी हैं और झूठ के दरिंदों को काबू कर लिया है और उनकी गर्दनों में बेड़ियाँ डाल दी हैं और अंधविश्वासों की इमारत गिरा दी है और उसके गुंबद तोड़ दिए हैं। और ईमान के कलमे को एकत्रित किया और उसके स्रोतों को मज़बूत कर दिया है। और आसमानी सल्तनत को सुदृढ़ और उसकी सरहदों को मज़बूत कर दिया है और उसका सुधार कर दिया है और समस्त मामलों को ठीक कर दिया है। कांपते दिलों को संतुष्टि दी और झूठ बोलने वाली ज़बानों को खामोश कर दिया है। अंधकारमय दिलों को रौशन और अंधकारमय सल्तनत को ताज़ा कर दिया है। और अत्यन्त सक्रिया अल्लाह तआला ऐसा ही करता है यहां तक कि अंधकार और गुमराहियाँ दूर हो जाती हैं। तब दुश्मन अपनी एड़ियों के बल फिर जाता है और अपने लगाए हुए तंबुओं को ध्वस्त कर देता है। और जो गांठें उन्होंने लगाई होती हैं उन्हें खोल देते हैं। समस्त संसार से श्रेष्ठ और समस्त प्राणियों से प्रिय वजूद नबियों, अवतारों भेजे हुए और

الله الصالحين الصدّيقين فإنهم فاقوا غيرهم فی بث المکارم
و كشفِ المظالم وتهذيبِ الاخلاق و إرادةِ الخير للانفس
والآفاق ونشرِ الصلاح والخير و إجاحةِ الطلاح والضير وأمرِ
المعروف والنهيِ عن الذمائم وسوقِ الشهوات كالبهائم
والتوجّهِ إلى رب العبيد وقطعِ التعلّق من الطريف والتليد
والقيامِ على طاعة الله بالقوة الجامعة والعُدّة الكاملة والصولِ
على ذرارى الشيطان بالحشود المجموعة والجموع المحشودة
وتركِ الدنيا للحبيب والتباعُدِ عن مغناها الخصيب وتركِ
مائها ومرعاها كالهجرة وإلقاء الجران فی الحضرة إنهم
قومٌ لا يتمضمض مقلتهم بالنوم إلّا فی حبّ الله والدعاء

अल्लाह के नेक और सच्चे बन्दों का होता है। क्योंकि यह समूह अन्यों की अपेक्षा उच्च विचार फैलाने, अंधकार को दूर करने, आचरण को सरल बनाने, अपनों और क्षितिज में बसने वालों की खैर ख़वाही का इरादा करने, मैत्रीयता एवं भलाई का प्रचार-प्रसार, उपद्रव एवं बुराई को जड़ से उखेड़ने, नेकी का आदेश देने और बुराइयों और जानवरों के समान गन्दी इच्छाओं के मनोवेग को रोकने, विश्वव्यापी ख़ुदा की ओर सचेत करने, नए और पुराने धन दौलत से संबंध तोड़ने, अल्लाह की आज्ञाकारिता पर पूर्ण सामर्थ्य और परिपूर्ण तैयारी से जुट जाने, और अपने एकत्रित किए हुए लश्करों और इकट्ठी की हुई जमाअतों के साथ शैतान की नस्लों पर हमला करने और महबूब के लिए संसार त्याग देने और उसके सुन्दर स्थानों से अलग होने और उसके पानियों तथा चरागाह से वतन त्यागने देश छोड़ने के समान अलग हो जाने और ख़ुदा के समक्ष अपना सर झुका देने में प्राथमिकता रखता है। वह ऐसी क़ौम हैं जिसे सिर्फ इस अवस्था में नींद आती है कि वह ख़ुदा की मोहब्बत में लिप्त और क़ौम के लिए दुआ कर रहे होते हैं। दुनियादारों की दृष्टि में यह दुनिया बड़ी खूबसूरत है किन्तु इन

للقوم وإن الدنيا فى أعين أهلها لطيف البُنية مليح الحِلية
وأمّا فى أعينهم فهى أخبث من العذرة وأنتن عن المَيّتة
أقبلوا على الله كل الاقبال ومالوا إليه كل الميل بصدق البال
وكما أن قواعد البيت مقدّمة على طاقٍ يُعقد ورواق يُمهّد
كذالك هؤلاء الكرام مقدّمون فى هذه الدار على كل طبقة
من طبقات الإخيار وأُرِيتُ أن أكملهم وأفضلهم وأعرفهم
وأعلمهم نبينا المصطفٰى عليه التحية والصلاة والسلام فى
الارض والسماوات العُلى وإن أشقى الناس قومٌ أطالوا الالسنة
وصالوا عليه بالهمز وتجسس العيب غير مطّلعين على سرّ
الغيب وكم من ملعونٍ فى الأرض يحمده الله فى السماء وكم

(अल्लाह के बन्दों) की नज़र में गंदगी से भी अधिक गंदी और मुर्दे से भी अधिक बदबूदार होती है। वह अल्लाह की ओर पूर्णत: ध्यान देते और साफ़ दिल से उसकी ओर पूर्णत: तरह झुकते हैं और जिस प्रकार घर की बुनियादों को उसके मेहराब और निर्माण किए हुए बरामदों पर श्रेष्ठता प्राप्त होती है उसी प्रकार यह बुज़ुर्ग हस्तियाँ इस संसार में अच्छे एवं पवित्र लोगों की श्रेणियों में से प्रत्येक श्रेणी पर श्रेष्ठ होते हैं। और मुझे तन्द्रावस्था में दिखाया गया है कि इन नबियों में सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम और ज्ञान तथा मारिफ़त में दूसरों से बढ़कर हमारे नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप पर इस ज़मीन और बुलंद आसमानों में प्रत्येक प्रकार की बरकत, रहमत और सलामती हो। नि:संदेह सबसे अधिक दुष्ट वे लोग हैं जिन्होंने छुपे हुए रहस्यों को जाने बग़ैर आप सल्लल्लाहु वसल्लम पर धृष्टता की और नुक्ता चीनी की और आलोचना करते हुए आप पर हमला किया और कितने ही ऐसे हैं जिन पर ज़मीन में लानत की जाती है किन्तु आसमान पर अल्लाह उनकी प्रशंसा करता है। और कितने ही ऐसे हैं जिनका इस संसार में बड़ा आदर किया जाता है किंतु निर्णय दिवस

مــن مُعظّــمٍ فی هــذه الدار یُهــان فی یــوم الجــزاء ثــم هــو ســبحانه
أشــار فی قــوله رَبِّ الْعَالَمِــیْنَ إلی أنــه خالــق کل شــیئٍ و أنــه یُحمــد
فی الســماء و الارضــین و أن الحامدیــن کانــوا عــلی حمــده دائمــین
وعــلی ذکرهــم عاکفــین و إن مــن شــیئٍ إلّا یُسَــبّحه و یحمــده فی
کل حــین و إن العبــد إذا انســلخ عــن إراداتــه و تجــرّد عــن جذباتــه
و فــنی فی اللّٰه و فی طرقــه و عباداتــه و عــرف ربّــه الذی ربّــاه بعنایاتــه
حمــده فی ســائر أوقاتــه و أحبّــه بجمیــع قلبــه بــل بجمیــع ذرّاتــه
فعنــد ذالــك هــو عالــمٌ مــن العالمــین

و لذالــك سُــمّی إبراهیــم أمّــة فی کتــاب أعلــم العالمــین و مــن
العالمــین زمــان أُرسِــلَ فیــهم خاتــم النبیــین و عالــم آخــر فیــه یــأتی

पर वे ज़लील किए जाएंगे। फिर अल्लाह सुबहानुहू ने अपने वचन 'रब्बुल आलमीन' में इस ओर संकेत किया है कि वह प्रत्येक वस्तु का निर्माणकर्ता है और उसकी आसमानों और ज़मीनों में प्रशंसा की जाती है। और उसकी प्रशंसा करने वाले उसकी प्रशंसा पर निरंतरता करते हैं और उसकी याद में धूनी रमाए बैठे हैं। प्रत्येक वस्तु प्रत्येक समय उसकी स्तुति और हम्द करती है और जब कोई ख़ुदा का बंदा अपनी इच्छाओं को त्याग देता है और अपने जज़्बात से खाली होकर अल्लाह और उसके मार्गों और उसकी इबादतों में फ़ना हो जाता है इसी प्रकार अपने उस रब्ब को पहचान लेता है जिसने अपनी दयालुता से उसका पालन पोषण किया तो वह उसकी हर समय प्रशंसा करता और सारे दिल बल्कि तन के एक-एक कण के साथ उस से प्रेम करता है। तब उस समय वह समस्त संसारों में से एक संसार हो जाता है।

इसीलिए हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को सर्वज्ञानी ख़ुदा की पुस्तक में उम्मत का नाम दिया गया और फिर समस्त संसार (आलमीन) का एक ज़माना वह था जिसमें उन लोगों में ख़ातमुन्नब्बियीन भेजे गए। और एक

الله بآخرين من المؤمنين فى آخر الزمان رحمة على الطالبين وإليه أشار فى قوله تعالى لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولٰى وَ الْاٰخِرَةِ فأومأ فيه إلى أحمدين وجعلهما من نعمائه الكاثرة فالأوّل منهما أحمد نالمصطفٰى ورسولنا المجتبٰى والثانى أحمد آخر الزمان الذى سُمّى مسيحا ومهديّا من الله المنّان وقد استنبطت هذه النكتة من قوله اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ فليتدبّر من كان من المتدبرين وعرفتَ أن العالمين عبارة عن كل موجود سوى الله خالق الأنام سواء كان من عالم الأرواح أو من عالم الأجسام وسواء كان من مخلوق الأرض أو كالشمس والقمر وغيرهما من الأجرام فكلٌّ من العالمين داخلٌ تحت ربوبية الحضرة ثم إن

दूसरा संसार वह है जिसमें अल्लाह तआला सत्य की तलाश करने वालों पर रहम फ़रमाते हुए अंतिम युग में मोमिनीन में आख़रीन को लाएगा इसी ओर अल्लाह तआला के कथन-

لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولٰى وَ الْاٰخِرَةِ ☆

में संकेत है। इसमें दो अहमदों की ओर इशारा किया है। और इन दोनों अहमदों को अपनी अनन्त नेमतों में सम्मिलित किया है। इन दोनों में प्रथम हमारे रसूल अहमद मुस्तफ़ा और मुज्तबा हैं और दूसरे **अहमद** अंतिम युग वाले हैं जिसका ख़ुदा-ए-मन्नान ने मसीह और महदी नाम रखा और यह बिंदु मैंने ख़ुदा के वचन اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ से वर्णन किया है। अत: प्रत्येक सोच विचार करने वाले को चिन्तन करना चाहिए। तुम्हें ज्ञात है कि आलमीन से अभिप्राय सृष्टि के पैदा करने वाले ख़ुदा के अतिरिक्त समस्त सांसारिक चीज़ें हैं चाहे वह रूहों का संसार हो या शारीरिक संसार से। चाहे वह ज़मीनी सृष्टि से हों या ब्रह्मांड में से जैसे सूरज चाँद इत्यादि। अत: समस्त संसार ख़ुदा तआला की रबूबिय्यत (प्रतिपालन की विशेषता) के अधीन आते हैं। फिर रबूबिय्यत

☆ अनुवाद - आरम्भ और अन्त दोनों में प्रशंसा उसी की है (सूरह अलक़सस-28/71)

فیض الربوبیّة أعمّ وأکمل وأتمّ من کل فیض یُتَصَوّرُ فی الافئدة أو یجری ذکره علی الإلسنة ثم بعده فیض عام وقد خُصّ بالنفوس الحیوانیّة والإنسانیّة وهو فیض صفة الرحمانیّة وذکره الله بقوله الرَّحْمٰنِ وخصه بذوی الروح من دون الاجسام الجمادیة والنباتیة ثم بعد ذالك فیضٌ خاصٌّ وهو فیضُ صفة الرحیمیّة ولا ینزل هذا الفیض إلّا علی النفس التی سعَی سعیها لکسب الفیوض المترقّبة ولذالك یختص بالذین آمنوا وأطاعوا ربًّا کریمًا کما صُرّح فی قوله تعالیٰ وَکَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا ۔فثبت بنص القرآن أن الرحیمیة مخصوصة بأهل الإیمان وأمّا الرحمانیة فقد وسعت کل حیوان من

की लाभ हर उस लाभ से जिसका दिलों में विचार किया जा सके या जिसका वर्णन ज़बानों पर जारी हो अधिक व्यापक और अधिक पूर्ण और अधिक विस्तृत है। फिर उसके पश्चात सामान्य लाभ है जो हैवानी और इंसानी लोगों के साथ विशिष्ट है और वह विशेषता रहमानियत का लाभ है। अल्लाह तआला ने उसका वर्णन अपने वचन "अर्रहमान (दयालुता)" में किया है और उसे जड़ पदार्थों और वनस्पतियों को छोड़कर केवल जानदार वस्तुओं से संबंधित किया है। उसके पश्चात एक विशेष लाभ है और यह लाभ केवल उस नफ़्स पर अवतरित होती है जो उपेक्षित उदारता के लिए पूरा प्रयास करता है। इसलिए यह उदारता उन लोगों से विशिष्ट है जो ईमान लाते और रब्बे करीम की आज्ञा का पालन करते हैं जैसा कि अल्लाह तआला के वचन

وَ کَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا ☆ (सूरह अलअहज़ाब-33/44)

में शेष रूप से वर्णन किया गया है। अत: क़ुर्आन के तर्कों द्वारा प्रमाणित हो गया कि रहीमियत ईमान रखने वालों के साथ विशेष है किंतु रहमानियत का दायरा जीवितों में से प्रत्येक जीवित पर विस्तृत है। यहाँ तक कि शैतान ने भी ब्रह्माण्ड के रब्ब के आदेश से इस में हिस्सा पाया। सारांश यह कि रहीमियत

☆ और वह मोमिनों के हक़ में बार-बार रहम करने वाला है- अनुवादक

الحیوانات حتی ان الشیطان نال نصیبًا منها بأمر حضرة ربّ الکائنات وحاصل الکلام ان الرحیمیة تتعلق بفیوضٍ تترتب علی الاعمال و یختص بالمؤمنین من دون الکافرین وأهل الضلال ثم بعد الرحیمیّة فیضٌ آخر وهو فیض الجزاء الاتمّ والمکافات وإیصال الصالحین إلی نتیجة الصالحات والحسنات وإلیه أشار عزّ اسمه بقوله مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ و إنه آخر الفیوض من رب العالمین وما ذُکر فیضٌ بعده فی کتاب اللّٰه أعلم العالمین والفرق فی هذا الفیض وفیض الرحیمیة أن الرحیمیة تُبلّغ السالك إلی مقام هو وسیلة النعمة وأمّا فیض المالکیة بالمجازات فهو یُبلّغ السالك إلی نفس النعمة وإلی منتهی

का संबंध उन लाभों से है जो कर्मों पर लागू होते हैं और यह काफ़िरों और पथभ्रष्टों को छोड़कर केवल मोमिनों से विशेष है। फिर रहीमियत के पश्चात एक और लाभ भी है जो कर्मों के पूर्ण कर्मफल और उनको लौटाना और नेक लोगों को उनकी नेकियों और अच्छे कर्मों के परिणाम तक पहुंचाने की लाभ है। और इसकी ओर प्रतापवान ख़ुदा ने अपने वचन مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ में इशारा किया है। यह रब्बुल आलमीन की ओर से अंतिम लाभ है। इसके पश्चात आलम उल आलमीन अल्लाह की पुस्तक में किसी और लाभ का वर्णन नहीं किया गया। इस लाभ और रहीमियत के लाभ में यह अंतर है कि रहीमियत एक साधक को उस स्थान तक पहुंचाती है जो नेमत का मार्ग है। शेष रहा न्याय अन्याय के संबंध में मालकियत की विशेषता के अनुसार फैज़। अतः वह एक साधक को नेमत की वास्तविकता, अंतिम कर्मफल, मुरादों की पराकाष्ठा और मकसदों की अंतिम सीमा तक पहुंचाता है। अतः स्पष्ट है कि यह फैज़ ख़ुदा की ओर से अंतिम फैज़ है और इंसानी पैदाइश के लिए बतौर परम उद्देश्य है। और इसी (मालिकियत) की विशेषता पर समस्त नेमतों की पूर्णता होती है

الثمرات وغاية المرادات وأقصى المقصودات فلا خفاء أن هذا الفيض هو آخر الفيوض من الحضرة الاحدية وللنشأة الإنسانية كالعلّة الغائية وعليه يتم النعم كلها وتستكمل به دائرة المعرفة ودائرة السلسلة ألا ترى أن سلسلة خلفاء موسٰى انتهت إلى نُكتة مالك يوم الدين فظهر عيسى فى آخرها وبُدِّلَ الجور والظلم بالعدل والإحسان من غير حرب ومُحاربين كما يُفهم من لفظ الدين فإنه جاء بمعنى الحلم والرفق فى لغة العرب وعندأدبائهم أجمعين فاقتضت مماثلة نبيّنا بموسى الكليم ومشابهة خلفاء موسٰى بخلفاء نبينا الكريم أن يظهر فى آخر هذه السلسلة رجلٌ يُشابه المسيح

तथा पहचान और सिलसिले का घेराव पूर्ण होता है। क्या तूने नहीं देखा कि मूसा के खलीफ़ाओं का सिलसिला مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ के बिंदु पर समाप्त हो गया। अत: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस सिलसिले के अंत में प्रकट हुए। युद्ध और योद्धाओं के बिना ही क्रूरता एवं अत्याचार, न्याय एवं एहसान में परिवर्तित कर दिया गया जैसा कि दीन के शब्द से यह अर्थ निकलता है। क्योंकि यह शब्द अरबी भाषा के शब्दकोश और अरब के समस्त लेखकों के निकट नरमी और मित्रता के अर्थों में आया है। जिसका यह तकाज़ा हुआ कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की समानता मूसा कलीमुल्लाह से और मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफाओं की समानता हमारे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ाओं से हो। और वह यह कि इस सिलसिले के अंत में एक ऐसा व्यक्ति प्रकट हो जो मसीह से समान हो और नरमी के साथ अल्लाह की ओर बुलाए और जंग की समाप्ति करे और काटने वाली तलवार को म्यान में रखे और तलवार और भाले के अतिरिक्त ख़ुदा-ए-रहमान के चमकते हुए निशानों से लोगों को एकत्रित करे। इस प्रकार उसका युग क़यामत के युग और निर्णय दिवस तथा हश्र नश्र के दिन के

ويدعو إلى الله بالحلم ويضع الحرب ويُقرِبُ السيف المُجِيح
فيحشر الناس بالآيات من الرحمان لا بالسيف والسنان
فيُشابه زمانه زمان القيامة ويوم الدين والنشور ويملأ الارض
نورًا كما مُلئت بالجور والزور وقد كتب الله أنه يُرِى
نموذج يوم الدين قبل يوم الدين ويحشر الناس بعد موت
التقوىٰ وذالك وقت المسيح الموعود وهو زمان هذا المسكين
وإليه أشار فى آية يوم الدين فليتدبّر من كان من المتدبّرين
وحاصل الكلام ان فى هذه الصفات التى خُصّت بالله ذى الفضل
والإحسان حقيقة مخفيّة ونبَأً مكتومًا من الله المنّان وهو
أنه تعالى أراد بذكرها أن يُنبيءَ رسوله بحقيقة هذه الصفات

समान हो जाएगा और ज़मीन नूर से भर दी जाएगी जिस प्रकार अंधकार और झूठ से भरी हुई थी। अल्लाह ने यह निर्णय कर दिया था कि वह निर्णय दिवस से पूर्व ही निर्णय दिवस का नमूना दिखाएगा। और तक्वा के मर जाने के पश्चात लोगों को जीवित करेगा। और यही मसीह मौऊद का समय है और यही इस विनीत का युग है। और इसी की ओर इस आयत 'यौमुद्दीन' में संकेत किया है। अत: सोच-विचार करने वाले इस पर सोच-विचार करें। निष्कर्ष यह कि इन विशेषताओं में जो कृपा और उपकार के मालिक ख़ुदा के साथ विशेष हैं, ख़ुदा-ए-मन्नान की ओर से एक रहस्यात्मक वास्तविकता और छुपी हुई भविष्यवाणी है। और वह यह है कि अल्लाह तआला ने इन विशेषताओं का वर्णन करके यह चाहा कि वह अपने रसूल को इन विशेषताओं की वास्तविकता से परिचित करे। अत: उसने भिन्न-भिन्न प्रकार के समर्थनों के साथ इन विशेषताओं की वास्तविकता प्रकट की। अत: उसने अपने नबी एवं सहाबा की स्वयं तरबियत की और इस से सिद्ध किया कि वह रब्बुल आलमीन है। फिर उसने केवल अपनी रहमानियत की विशेषता के द्वारा बिना कर्ता के कर्म के उन पर अपनी नेमतें पूर्ण कीं। और उससे

فأرَى حقيقتها بأنواع التأييدات فربّى نبيّه وصحابته فأثبت بها أنه رب العالمين ثم أتمّ عليهم نعماءه برحمانيته من غير عمل العاملين فأثبت بها أنه أرحم الراحمين ثم أراهم عند عملهم برحمة منه أيادی حمايته وأيّدهم بروح منه بعنايته ووهب لهم نفوسًا مطمئنة وأنزل عليهم سكينة دائمة ثم أراد أن يريهم نموذج مالِكِ يوم الدين فوهب لهم الملك والخلافة وأَلْحَقَ أعداءهم بالهالكين وأهلك الكافرين وأزعجهم إزعاجًا ثم أرى نموذج النشور فأخرج من القبور إخراجًا فدخلوا فی دين الله أفواجًا وبدروا إليه فرادی وأزواجًا فرأى الصحابة أمواتًا يلفون حياة ورأوا بعد المحل ماءً

यह सिद्ध किया कि वो अर्हमुर्राहिमीन है। फिर उसने अपनी रहमत से उनके कर्मों के अवसर पर अपने एहसानात दिखाए और अपनी इनायत से फ़रिश्ते के द्वारा उनका समर्थन किया और उन्हें सात्विक वृत्ति प्रदान की। और उन पर हमेशा रहने वाली शांति अवतरित की। फिर उसने निश्चय किया कि उन्हें मालिक योमिद्दीन (कर्मफल दिवस का मालिक) का नमूना दिखाए तो उसने उन्हें बादशाहत और खिलाफ़त प्रदान की और उनके शत्रुओं को विनाश होने वालों से मिला दिया। काफिरों का विनाश किया और उनका उन्मूलन किया। फिर क़यामत का नमूना दिखाया और उन्हें क़बरों से बाहर निकाला और वे अल्लाह के दीन में फ़ौज के समान सम्मिलित हो गए। अकेले-अकेले और समूह के समूह इसकी ओर दौड़े। अत: सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम ने मुर्दों को जीवन प्राप्त करते और सूखे के पश्चात मूसलाधार बारिश होते देखा और उस युग का नाम योमिद्दीन रखा गया क्योंकि इसमें सत्य प्रकट हो गया और काफिरों की फौजें दीन में सम्मिलित हो गईं। फिर उसने इरादा किया कि वह उम्मत के अंत में भी इन विशेषताओं का नमूना दिखाए ताकि धर्म का अंतिम भी बराबरी में

ثجّاجًا وسمّى ذالك الزمان يوم الدين لان الحق حصحص فيه
ودخل فى الدين أفواج من الكافرين ثم أراد أن يُرى نموذج
هذه الصفات فى آخرين من الامّة ليكون آخر المِلّة كمثل
أوّلها فى الكيفية و ليتمّ أمر المشابهة بالامم السابقة، كما
أُشير إليه فى هذه السورة أعنى قوله صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
فتدبّر ألفاظ هذه الآية وسمّى زمان المسيح الموعود يوم
الدين لانه زمان يحيٰى فيه الدّين وتحشر الناسُ ليقبلوا
باليقين ولا شك ولا خلاف أنه رَبَّى زماننا هذا بأنواع التربية
وأرانا كثيرًا من فيوض الرحمانية والرحيمية كما أرى
السابقين من الانبياء والرسل وأرباب الولاية والخلّة وبَقِيَت

उसके सामान हो जाए और ताकि पिछली उम्मतों के साथ उनकी समानता पूर्ण हो जाए। जैसा कि इस सूरह में इस ओर संकेत किया गया है अर्थात उसके वचन صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ में। अत: इस आयत के शब्दों पर विचार कर। मसीह मौऊद के युग को यौमिद्दीन का नाम दिया गया क्योंकि उस युग में दीन जीवित किया जाएगा और लोगों को एकत्रित किया जाएगा ताकि वे विश्वास के साथ स्वीकार करें। इसमें कोई संदेह नहीं और न कोई मतभेद कि उसने प्रत्येक प्रकार की तर्बियत से हमारे इस युग की परवरिश की। और हमें रहमानियत और रहीमियत के फ़ैज़ (लाभ) उसी प्रकार प्रचुरता से दिखाए जिस प्रकार उसने पिछले नबियों, रसूलों और औलियाओं और मित्रों को दिखाए। शेष रही इन विशेषताओं में से चौथी विशेषता तो इससे अभिप्राय ख़ुदा तआला का वह चमकार है जिसका प्रकटन बादशाह या मालिक के रूप में कर्मफ़ल देने के लिए निर्णय दिवस में होगा। और उसने इस चमकार को मसीह मौऊद के लिए चमत्कार की तरह बनाया और उसे (अर्थात् मसीह मौऊद को) छुपे हुए समर्थनों और निशानों के साथ **फ़ैसला करने वाला** और आसमानी बादशाहत का द्योतक

الصفة الرابعة من هذه الصفات أعنى التجلّى الذى يُظهر فى حُلّة ملك أو مالك فى يوم الدين للمجازات فجعله للمسيح الموعود كالمعجزات وجعله حَكَمًا ومَظهرًا للحكومة السماوية بتأييد من الغيب والآيات وستعلم عند تفسير " أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ" هذه الحقيقة وما قلتُ من عند نفسى بل أُعطِيتُ من لدن ربى هذه النكات الدقيقة ومن تدبرها حق التدبر وفكّر فى هذه الآيات علم أن الله أخبر فيها عن المسيح ومن زمنه الذى هو زمن البركات ثم اعلم أن هذه الآيات قد وقعت كحدٍّ مُعَرِّفٍ لله خالق الكائنات وإن كان الله تَعَالٰى ذاته عن التحديدات ومن هذا التعليم والإفادة يتضح معنى كلمة

बनाया। اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ की व्याख्या के समय तू इस वास्तविकता को जान लेगा कि यह जो कुछ मैंने कहा है स्वयं से नहीं बल्कि यह रहस्यात्मक बिंदु मुझे मेरे रब्ब की ओर से प्रदान किए गए हैं। जो मनुष्य इन बिन्दुओं पर पूरा सोच विचार करेगा और इन निशानों पर चिंतन करेगा तो वह जान जाएगा कि अल्लाह तआला ने इसमें मसीह मौऊद और उसके युग के बारे में सूचना दी है जो बरकतों का युग है। फिर तू जान ले कि यह आयतें सृष्टि के पैदा कर्ता अल्लाह की पहचान दिलाने वाली सीमा की तरह अवतरित हुई हैं। यद्यपि अल्लाह तआला का अस्तित्व प्रत्येक सीमा से ऊपर है। इस शिक्षा एवं लाभ से कलिमा शहादत का भाव स्पष्ट हो जाता है जो ईमान और सौभाग्य का आधार है। इन विशेषताओं के कारण अल्लाह अनुकरण का पात्र एवं अराधना के लिए विशिष्ट हो जाता है। क्योंकि वही इन विशेषताओं को अपनी इच्छा से अवतरित करता है। क्योंकि जब आप **ला इलाहा इल्लल्लाह** कहें तो बुद्धिजीवियों के निकट इसके यह अर्थ होंगे कि नर एवं मादा में से किसी भी हस्ती की उपासना वैध नहीं सिवाए उस सच्चे ख़ुदा के, जिसकी गहराई को समझना संभव नहीं और जो इन

الشــهادة الــتى هــى منــاط الإيمــان والســعادة وبهــذه الصفــات اســتحق اللّٰه الطاعــة وخُــصّ بالعبــادة فإنــه ينــزل هــذه الفيــوض بــالإرادة فإنــك إذا قلــتَ لا إله إلّا اللّٰه فمعنــاه عنــد ذوى الحصــات أن العبــادة لا يجــوز لأحــدٍ مــن المعبوديــن أو المعبــودات إلّا لذاتٍ غير مُدركــة مُســتجمعة لهــذه الصفــات أعــنى الرحمانيــة والرحيميــة اللتــين همــا أوّل شــرط لموجــود مســتحق للعبــادات ثــم اعلــم أن اللّٰه اســم جامــد لا تُــدرَك حقيقتــه لانــه اســم الذات والذات ليــس مــن المــدركات وكل مــا يُقــال فى معنــاه فهــو مــن قبيــل الاباطيــل والخزعبيــلات فــإن كُنــهَ البــارىء أرفــع مــن الخيــالات وأبعــد مــن القياســات وإذا قلــتَ محمــدٌ رســول اللّٰه فمعنــاه أن محمّــدًا مظهــر

विशेषताओं अर्थात रहमानियत और रहीमियत की विशेषताओं का संग्रहीता है। यह दोनों विशेषताएं उपासना के पात्र हस्ती की पहली शर्तें हैं। फिर तुम यह भी जान लो कि अल्लाह अपरिवर्तनशील संज्ञा है उसकी गहराई का ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिए कि यह व्यक्तिगत संज्ञा है और वह व्यक्तिगत नाम अनुभुतियों में से नहीं। और "अल्लाह" शब्द को व्युत्पत्ति संज्ञा ठहराकर जो कुछ भी कहा जाता है वह केवल झूठ और ख़ुराफ़ात है। क्योंकि ख़ुदा तआला की गहराई को समझ लेना विचारों और कल्पनाओं से दूर है। और जब आप **मुहम्मद रसूलुल्लाह** कहते हैं तो उसके यह अर्थ होते हैं कि **मुहम्मद** सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस ज़ात-ए-बारी तआला की विशेषताओं का द्योतक और श्रेष्ठताओं में उसके उत्तराधिकारी और प्रतिरूपता की हद को पूर्ण करने वाले और रिसालत की मुहर हैं। मेरी दूरदर्शिता और अवलोकन का सार यह है कि हमारे नबी खैरुल वरा, हमारे महान ख़ुदा की इन दोनों विशेषताओं (रहमान और रहीम) के वारिस हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जैसा कि मेरे पिछले वर्णन से आप जान चुके हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा मुहम्मदी प्रताप की वास्तविकता के वारिस हुए और उनकी तलवार मुश्रिकों

صفات هذه الذات وخليفتها فى الكمالات ومُتمّمدائرة الظلّية وخاتم الرسالات فحاصل ما أُبصر وأرى أن نبينا خير الورَى قد ورث صفتى ربّنا الاعلٰى ثم ورث الصحابة الحقيقة المحمدية الجلالية كما عرفتَ فيما مضى وقد سُلم سيفهم فى قطع دابر المشركين ولهم ذكر لا يُنسى عند عبدة المخلوقين وإنهم أدّوا حق صفة المحمّدية وأذاقوا كثيرا من الايدى الحربية وبقيت بعد ذالك صفة الاحمدية التى مُصَبّغة بالالوان الجمالية محرقة بالنيران الْمُحِبّية۔ فورثها المسيح الذى بُعث فى زمن انقطاع الأسباب وتكسر الْمِلَّة من الأنياب وفقدان الانصار والاحباب وغلبة الاعداء وصول الاحزاب ليُرِى الله نموذج

का विनाश करने के लिए सक्षम और सर्वमान्य है। उनकी याद, मुश्रिक भुला नहीं सकते। उन्होंने मुहम्मदी विशेषता का हक़ अदा कर दिया और अपने जंगी कारनामों से बहुतों को खूब मज़ा चखाया। इसके पश्चात शेष रही अहमदियत विशेषता जो सौम्यता के रंगो में रंगीन और प्रेम की अग्नि में भस्म (संतप्त) है। इसलिए मसीह मौऊद इस विशेषता (अहमदियत) का वारिस हुआ जो इस्लाम की तरक़्क़ी के साधनों की छिन्न-भिन्नता, शत्रुओं की कुचलियों से मिल्लत की बर्बादी, इस्लाम के प्रेमियों और मददगारों के समाप्त होने, दुश्मनों के प्रभुत्व और विरोधी संगठनों के हमले के समय अवतरित किया गया। ताकि अल्लाह तआला घोर अन्धकार के बाद इस्लाम की ताक़त और (मुसलमान) बादशाहों के रौब मिटने के पश्चात और मिल्लत-ए-मुहम्मदिया के विकलांगों जैसा हो जाने के पश्चात अपने कर्मफ़ल दिवस का मालिक होने का नमूना दिखाए। अत: आज हमारा दीन परदेसियों (मुसाफ़िरों) की तरह हो गया उसका शासन सिवाए आसमान के कहीं और शेष नहीं रहा (इस समय के) लोगों ने उसको नहीं पहचाना और उसके विरुद्ध दुश्मनों की तरह उठ खड़े हुए हैं। अत: इस पतन और वैभव के अन्त के समय (ख़ुदा

مالك يوم الدين بعد ليالى الظلام وبعد انهدام قوّة الإسلام وسطوة السلاطين وبعد كون المِلّة كالمستضعفين فاليوم صار ديننا كالغرباء وما بقيت له سلطنة إلّا فى السماء وما عرفه أهل الارض فقاموا عليه كالاعداء فأُرسل عند هذا الضعف وذهاب الشوكة عبدٌ من العباد ليتعهّد زمانًا ماحِلا تعهّد العِهاد و ذالك هو المسيح الموعود الذى جاء عند ضعف الإسلام لِيُرِى الله نموذج الحشر والبعث والقيام ونموذج يوم الدين إنعامًا منه بعد موت الناس كالانعام۔ فاعلم أن هذا اليوم يوم الدين وستعرف صدقنا ولو بعد حين۔ وههنا نكتة كشفية ليست من المسموع فاسمع مُصغيًا و عليك

तआला के) सेवकों में से एक सेवक अवतरित किया गया। ताकि वह इस अकाल ग्रस्त ज़माने को रूहानी बारिश से तृप्त करे। अत: यह वही मसीह मौऊद है जो इस्लाम के पतन के समय आया है। ताकि अल्लाह तआला केवल अपनी कृपा से लोगों को जब वे (आध्यात्मिक) मृत्यु के पश्चात जानवरों के समान हो गए थे हश्र व नश्र, पुनरुत्थान, क़यामत और कर्मफल दिवस के दिन का नमूना दिखाए। अत: जान लो कि यही युग यौमिद्दीन है और तुम निस्संदेह हमारी सच्चाई को जान लोगे यद्यपि कुछ समय के पश्चात ही सही। यहां एक आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ज्ञात बिंदु है जो पहले कभी नहीं सुना गया। इसलिए गंभीरता से कान धरो और सुनो। वह यह है कि अल्लाह तआला ने यहां अपने बारे में केवल चार विशेषताओं को इसलिए चुना है ताकि लोगों की मृत्यु से पहले इसी दुनिया में वह इन (विशेषताओं) के नमूने दिखाए। यही कारण है कि उसने अपने कलाम

لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ ☆ (सूरह अल क़सस- 28/71)

में इस ओर संकेत किया है कि यह नमूना इस्लाम के प्रारम्भ के लोगों

☆ अर्थात् आरम्भ और अन्त में प्रशंसा उसी की है - अनुवादक

بالمـودوع وهـو أنـه تعـالیٰ مـا اختـار لنفسـه ههنـا أربعـة مـن الصفـات إلّا لِيُرِى نموذجهـا فى هـذه الدنيـا قبـل الممـات فأشـار فى قـوله لَهُ الْحَمْـدُ فِى الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِـرَةِ إلى أن هـذا النمـوذج يُعطـى لصـدر الإسـلام ثـم للآخريـن مـن الامـة الداخـرة و كذالـك قـال فى مقـام آخـر وهـو أصدق القائلـين ثُـلَّةٌ مِّـنَ الْاَوَّلِـيْنَ وَ ثُـلَّةٌ مِّـنَ الْاٰخِـرِيْـنَ فقسّـم زمـان الهدايـة والعـون والنصـرة إلى زمـان نبيناصـلى الله عليـه وسـلم و إلى الزمـان الآخـر الذى هـو زمـان مسـيح هـذه المـلّة و كذالـك قـال- وَّ اٰخَـرِيْـنَ مِنْـهُمْ لَمَّـا يَلْحَقُـوْا بِـهِمْ فاشـار إلى المسـيح الموعـود وجماعتـه والذيـن اتّبعوهـم فثبـت بنصـوصٍ بيّنـة مـن القـرآن ان هـذه الصفـات قـد ظهـرت فى

के लिए और फिर उम्मत के आख़रीन लोगों में से विनम्र लोगों को भी प्रदान किया जाएगा। इसी प्रकार उसने दूसरे स्थान पर भी फ़रमाया और वह सबसे अधिक सत्य कहने वाला है।

★ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ (सूर: अल-वाक़िय:56/40-41)

अत: इस प्रकार उसने हिदायत, सहायता एवं समर्थन के युग को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग पर और इस अंतिम युग पर जो इस उम्मत के मसीह का युग है विभाजित कर दिया है। और इसी प्रकार फ़रमाया

☆ وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूरह जुमअ-62/4)

इसमें मसीह मौऊद और उसकी जमाअत और उनके अनुयायियों की ओर इशारा है। अत: पवित्र क़ुरआन के इन स्पष्ट आयतों से सिद्ध हुआ कि यह विशेषताएं पहले हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में भी प्रकट हुईं और फिर यह अंतिम युग में भी प्रकट होंगी। और यह वह युग है जिसमें दुराचार एवं उपद्रव अधिकता से होगा। और नेकी और सच्चाई बहुत ही कम होगी और इस्लाम का ऐसा उन्मूलन होगा जैसा कि वृक्ष को जड़ से उखाड़

★ अर्थात् पहलों में से एक बड़ी जमाअत है और बाद वालों में से एक बड़ी जमाअत है।

☆ अर्थात् इन्ही में से दूसरों की ओर भी उसे अवतरित किया है जो अभी उनसे नहीं मिले।

زمن نبيّنا ثم تظهر فی آخر الزمان و هو زمانٌ يكثر فيه الفسق والفساد و يقل الصلاح والسداد و يُجاح الإسلام كما تُجاح الدوحة و يصير الإسلام كسليم لدغته الحيّة و يصير المسلمون كأنهم الميّتة و يُداس الدين تحت الدوائر الهائلة والنوازل النازلة السائلة و كذالك ترون فی هذا الزمان وتشاهدون أنواع الفسق والكفر والشرك والطغيان وترون كيف كثر المفسدون وقلّ المصلحون المواسون وحان للشريعة أن تُعدَم و آن للمِلّة أن تُكتَم و هذا بلاءٌ قد دهم وعناءٌ قد هجم وشرٌّ قد نجم ونارٌ أحرقت العرب والعجم و مع ذالك ليس وقتنا وقت الجهاد ولا زمن المرهفات الحداد

दिया जाता है। और इस्लाम की हालत एक सर्प-दंशित व्यक्ति के समान होगी और मुसलमान ऐसे हो जाएंगे जैसे कि मुर्दे और उनका धर्म भयानक हादसों एवं अन्य अनवरत आने वाली मुश्किलों के नीचे कुचला जाएगा। और यही हालत तुम इस युग में देख रहे हो और तरह तरह के दुराचार, कुफ्र, शिर्क, और उपद्रवों को देख रहे हो। और तुम देख रहे हो कि किस प्रकार उपद्रवी अधिक हो गए हैं और सुधारक और चिंतक कम हो गए हैं। वह समय निकट आ गया था कि शरीयत विलुप्त हो जाती और इस्लाम मिट जाता। यह मुसीबत है जो अचानक आ पड़ी और ऐसी विपदा है जो टूट पड़ी, ऐसा उपद्रव है जो अचानक फूट पड़ा, ऐसी अग्नि थी कि जिसने अरब एवं गैर अरब को जला डाला। तथापि हमारा यह समय जिहाद का समय नहीं और न तेज़ तलवारों का युग है और न यह गर्दनें काटने और ज़ंजीरों में जकड़ने का समय है और न ही गुमराहों को ज़ंजीरों और फ़न्दों में घसीटने और उन पर क़त्ल और विनाश के आदेश जारी करने का युग है। यह समय तो अधर्मियों के प्रभुत्व और उन्नति का समय है। मुसलमानों पर उनके कर्मों के कारण अपमान थोप दिया गया है। बताओ जिहाद कैसा? जबकि किसी रोज़ा, नमाज़, हज,

ولا أوان ضرب الاعناق والتقرين فی الاصفاد ولا زمان قَوْد أهل
الضلال فی السلاسل والاغلال وإجراء أحکام القتل والاغتیال
فإن الوقت وقت غلبة الکافرین وإقبالهم وضُرِبت الذلّة علی
المسلمین بأعمالهم وکیف الجهاد ولا یُمنع أحدٌ من الصوم
والصلٰوة ولا الحج والزکٰوة ولا من العفة والتقاة وما سَلّ
کافرٌ سیفًا علی المسلمین لیرتدّوا أو یجعلهم عضین فمن
العدل أن یُسَلَّ الحسام بالحسام والاقلام بالاقلام وإنّا لا
نبکی علی جراحات السیف والسنان وإنما نبکی علی
أکاذیب اللسان فبالاکاذیب کُذّبت صحف اللّٰه واخفی أسرارُها
وصیل علی عمارة المِلّة وهُدّمَ دارها فصارت کمدینة نُقِض

ज़कात और पवित्रता और संयम (तक़वा) धारण करने से रोका नहीं जाता और न ही किसी काफ़िर ने मुसलमानों पर उन्हें मुर्तद करने या उन्हें टुकड़े-टुकड़े करने के लिए तलवार उठाई है। और इंसाफ यह है कि तलवार के मुक़ाबले में ही तलवार उठाई जाए और कलमों के मुक़ाबले में क़लमें। हम तलवार और तीरों के ज़ख्मों पर नहीं रोते, हम तो ज़बानों के झूठ पर रोते हैं। झूठ और मनगढ़त बातों से अल्लाह की पुस्तकों को झुठलाया गया और उनके रहस्यों को छुपाया गया। इस्लाम पर हमला किया गया और इसके घर को तोड़ा गया। अत: यह एक ऐसे शहर की तरह हो गया जिसकी दीवारें तोड़ दी गई हों या उस बाग़ के समान हो गया जिसके वृक्षों को जला दिया गया हो या उस उद्यान की तरह हो गया जिस के फूल और फल बिल्कुल नष्ट कर दिए गए हों और उसकी कलियों को तोड़ दिया गया हो। या उस पवित्र ज़मीन की तरह हो गया जिसकी नहरों का पानी सूख जाए या उन मज़बूत महलों के समान हो गया जिनके निशान तक मिटा दिए गए हों और तबाह करने वालों ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो। और यह कहा गया कि (इस्लाम धर्म) मर गया और मौत की सूचना लाने वाले उसकी मौत की

أسـوارها أو حديقـة أُحـرِق أشـجارُها أو بُسـتان أُتلِـفَ زهـرهـا وثمارُها وسُـقط أنوارها أو بلـدةٍ طيّـبةٍ غيض أنهارها أو قصـورٍ مشيّــدةٍ عُفّـىَ آثارُهــا ومزّقهـا الممزّقـون وقيـل ماتـت ونعَـى الناعـون وطُبعـت أخبارُهـا وأشـاعتها المشـيّعون ولـكل كمـال زوال ولـكل ترعـرع اضمحـلال كمـا تـرى أن السـيل إذا وصـل إلى الجبـل الـراسى وقـف و الليـل إذا بلـغ الى الصبـح المسـفر انكشـف كمـا قـال الله تعـالىٰ وَ الَّيۡـلِ اِذَا عَسۡـعَسَ ۙ﴿۱۸﴾ وَ الصُّبۡـحِ اِذَا تَنَفَّـسَ فجعـل تنفّـس الصبـح كأمـر لازمٍ بعـد كمـال ظلمـات الليـل و كذالـك فى قـوله يٰۤـاَرۡضُ ابۡلَعِـیۡ جُعِـلَ كمـال السـيل دليـل زوال السـيل فـاراد الله أن يـردّ إلى المؤمنـين أيّامـهم الاولىٰ وأن يريـهم أنـه ربّـهم وأنـه

सूचना ले आए। उसकी मौत की ख़बरें प्रकाशित हो गईं और प्रकाशित करने वालों ने उन्हें अच्छे प्रकार से फैला दिया। प्रत्येक उत्थान के लिए पतन है और प्रत्येक जवानी के लिए ढलना निश्चित है और जैसा कि तुमने देखा है कि जब बाढ़ का पानी अडिग पहाड़ तक पहुंच जाए तो वह ठहर जाता है और रात जब रोशन सुबह तक पहुंच जाए तो अंधकार समाप्त हो जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया

وَ الَّيۡلِ اِذَا عَسۡعَسَ ۙ﴿۱۸﴾ وَ الصُّبۡحِ اِذَا تَنَفَّسَ ☆ (सूरह अत्तकवीर-81/18-19)

अत: उसने रात के घोर अन्धकारों के बाद सुबह के प्रकटन को अनिवार्य कर दिया। इसी प्रकार अल्लाह तआला के कथन يٰۤـاَرۡضُ ابۡلَعِـیۡ (सूरह हूद-11/45) में बाढ़ की चरम सीमा को बाढ़ के पतन का चिन्ह ठहराया है। अत: अल्लाह तआला ने इरादा किया कि वह मोमिनों की ओर उनके पहले दिन लौटा दे और उनको दिखाए कि वह उनका रब्ब है और वह रहमान और रहीम और उस दिन का मालिक है जिस दिन कर्मफल दिया जाएगा और जिसमें मुर्दों को (आध्यात्मिक रूप से) जीवित किया जाएगा और तुम

☆ अर्थात् क़सम है रात की जब वह आएगी और पीठ फेर जाएगी और क़सम है सुबह की जब वह सांस लेने लगेगी।

الرّحمٰن والرحيم ومالك يوم فيه يُجْزىٰ ويُبعث فيه الموتٰى
وإنكم ترون فى هذا الزمان ربوبية الله المنّان ورحمانيّته
للإنسان والحيوان التى تتعلّق بالابدان وترون أنه كيف خلق
أسبابًا جديدة ووسائل مفيدة وصنائع لم يُر مثلها فيما
مضٰى وعجائب لم يوجد مثلها فى القرون الاولى وترون تجدّدًا
فى كلما يتعلق بالمسافر والنزيل والمقيم وابن السبيل و
الصحيح والعليل والمحارب والمُصالح المقيل والإقامة
والرحيل وجميع أنواع النعماء والعراقيل كأن الدنيا بُدّلت
كل التبديل فلا شك أنها ربوبية عظمٰى ورحمانية كبرى
وكذالك ترى الربوبية والرحمانية والرحيمية فى الامور
الدينية وقد يُسّر كل أمرٍ لطلباء العلوم الإلهية ويُسّرَ أمر

इस युग में उपकारी ख़ुदा की रबूबियत और इंसानों तथा हैवानों के लिए उसकी ऐसी रहमानियत जिसका संबंध शरीरों के साथ है देख रहे हो। तुम देखते हो कि उसने किस प्रकार नए-नए साधन और लाभदायक माध्यम पैदा किए हैं। ऐसे उपकरण जिनके उदाहरण पिछले युगों में नहीं देखे गए और ऐसी आश्चर्यजनक बातें जिनका उदाहरण पहले युगों में नहीं मिलता और तुम्हें समस्त चीज़ों में चाहे मुसाफ़िर या मुक़ीम, निवासी हो या परदेसी, तंदुरुस्त हो या रोगी, योद्धा हो या शान्ति प्रिय, यात्रा की हालत हो या पड़ाव की और चाहे समस्त प्रकार की नेमतों और कठिनाइयों से संबंध रखती हो उन सब में नयापन नज़र आएगा। मानो दुनिया पूर्ण रूप से बदल चुकी है और इसमें कोई शक नहीं कि यह सब कुछ रबूबियत-ए-उज़्मा और रहमानियत-ए-कुबरा है। इसी प्रकार आपको समस्त धार्मिक मामलों में रबूबियत, रहमानियत और रहीमियत नज़र आएगी। प्रत्येक विषय को ब्रह्म विद्या के विद्यार्थियों के लिए सरल कर दिया गया है। तब्लीग़ का काम और आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाशन का काम सरल कर दिया गया है। और हर उस व्यक्ति के लिए निशान उतार दिए गए हैं जो अल्लाह की इबादत करता और उसकी ओर से शांति का

التبليغ وأمر إشاعة العلوم الروحانية وأُنزِلت الآيات لكل
من يعبد الله ويبتغى السكينة من الحضرة وانكسف القمر
والشمس فى رمضان وعُطّلت العشار فلا يُسْعَى عليها إلّا
بالندرة وسوف ترى المركب الجديد فى سبيل مكة والمدينة
وأُيّد العالمون والطالبون بكثرة الكتب وأنواع أسباب
المعرفة وعُمّر المساجد وحُفِظ الساجد وفتح أبواب الامن
والتبليغ والدعوة وما هو إلّا فيض الرحيمية فوجب علينا
أن نشهد أنها وسائل لا يوجد نظيرها فى القرون الاولى وإنه
توفيق وتيسير ما سمع نظيره أذنٌ وما رأى مثله بصرٌ فانظر
إلى رحيمية ربنا الأعلىٰ ومن رحيميته أنّا قدرنا على أن نطبع
كتب ديننا فى أيام ما كان من قبل فى وسع الاوّلين أن يكتبوها

इच्छुक है। चांद और सूरज को रमज़ान में ग्रहण लग चुका, ऊँटनियाँ बेकार कर दी गईं। अब उन्हें यका-कदा ही प्रयोग किया जाता है। और तुम निकट ही मक्का और मदीना के मार्ग में नई सवारी को चलते देखोगे। विद्वानों और विद्यार्थियों के लिए प्रचुरता के साथ पुस्तकों एवं हर प्रकार के ज्ञान सम्बन्धी साधनों को उपलब्ध करा दिया गया है । मस्जिदें आबाद हो गई हैं और इबादत करने वाले की सुरक्षा की गई है। अमन एवं अमान और प्रचार-प्रसार के दरवाज़े खोल दिए गए हैं और यह सब कुछ रहीमियत की अनुग्रहता है। अतः हम पर अनिवार्य है कि हम गवाही दें कि यह ऐसे साधन हैं जिनका उदाहरण पहली शताब्दियों में नहीं पाया जाता था। और यह एक सहूलत और आसानी है जिसका उदाहरण न किसी कान ने सुना और जिसका उदाहरण न किसी आँख ने देखा। अतः तुम हमारे रब्ब-ए-आला की रहीमियत देखो। यह उसी की रहीमियत है कि हमारे लिए संभव हो गया है कि कुछ ही दिनों में अपने धर्म की इतनी पुस्तकें प्रकाशित कर दें जो हमारे पूर्वज सालों में भी लिखने की क्षमता नहीं रखते थे। आज हम ज़मीन के दूरदराज़ इलाकों

فی أعوام و إنّا نقدر علی أن نطّلع علی أخبار أقصی الأرض فی ساعات★ وما قدر علیه السابقون إلّا لشق الانفس وبذل الجهد إلی سنوات۔ وقد فُتِحَ علینا فی کل خیر أبواب الربوبیة والرحمانیة والرحیمیة و کثرت طرقها حتی خرج إحصاء ها من الطاقة البشریة و أین تیسّر هذا للسابقین من أهل التبلیغ والدعوة و إن الارض زُلزلت لنا زلزالا۔ فأخرجت أثقالا۔ و فُجّرت الانهار۔ وسُجّرت البحار۔ وجُدّدت المراکب وعُطّلت العشار۔ و إن السابقین ما رأوا کمثل ما رأینا من النعماء وفی کل قدم نعمة وقد خرجت من الإحصاء ومع ذالک کثرت موت القلوب وقساوة الافئدة کأنّ الناس کلهم

की खबरें कुछ ही पलों में ज्ञात कर सकते हैं जिन्हें★ पहले लोग अपनी जानों को कठिनाइयों में डाल कर और वर्षों परिश्रम करके प्राप्त करते थे। उसने प्रत्येक भलाई के लिए हम पर रुबूबियत रहमानियत और रहीमियत के दरवाज़े खोल दिए हैं और उनके इतने अधिक मार्ग हैं कि जिन की गणना इंसानी शक्ति से बाहर है। और यह सहूलतें पहले प्रचार व प्रसार करने वालों को कहां प्राप्त थीं। हमारे लिए धरती ज़ोर से हिला दी गई। अत: उसने बोझ को बाहर निकाल दिया और नहरें जारी कर दी गईं और नदियाँ सूख गईं। नई नई सवारियों का अविष्कार हो गया ऊँटनियाँ बेकार कर दी गईं पहले लोगों ने ऐसी नेमतें नहीं देखी थीं जो हमने देखीं। हर कदम पर एक नेमत है और यह नेमतें गणना से बाहर हैं। लेकिन इसके साथ ही दिलों की मौत और कठोर हृदयता भी बढ़ गई। मानो सब लोग मर गए और उनमें अध्यात्मज्ञान की रूह न रही सिवाए कुछ एक के जो

★ کماقال تعالٰی یَوۡمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخۡبَارَهَا منه

★हाशिया :- जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान- یَوۡمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخۡبَارَهَا (सूरह अलज़िल्ज़ाल-99/5) अर्थात उस दिन वह अपनी ख़बरें बयान करेगी।

ماتــوا ولــم يبــق فيــهم روح المعرفــة إلّا قليــل نــالذى هــو
كالمعــدوم مــن النــدرة وإنّــا فهمنــا ممّــا ذكرنــا مــن ظهــور
الصفــات وتجــلّى الربوبيــة والرحمانيــة والرحيميــة كمثــل
الآيــات ثـم مـن كثـرة الامـوات ومـوت النـاس من سمّ الضلالات
ان يــوم الحشــر والنشــر قريــب بــل عــلى البــاب كمــا هــو ظاهــر
مــن ظهــور العلامــات والاســباب فــإن الربوبيــة والرحمانيــة
والرحيميــة تموّجــت كتمــوّج البحــار وظهــرت وتواتــرت
وجــرت كالانهــار فــلا شــك أن وقــت الحشــر والنشــور قــد أتى
وقــد مضــت هــذه السُــنّة فى صحابــة خــير الــوَرىٰ ولا شــك أن هــذا
اليــوم يــوم الديــن ويــوم الحشــر و يــوم مالكيّــة ربّ السّــماء

अत्यन्त कम होने के कारण न होने के बराबर हैं। अत: इन विशेषताओं के प्रकटन से जिनका वर्णन हम पहले कर चुके हैं रुबूबियत, रहमानियत और रहीमियत के रोशन निशानों की तरह प्रकटन से और फिर मृत्यु की प्रचुरता और अंधकार के विष के कारण लोगों के मरने से हमने जान लिया है कि कर्म फल दिवस निकट है बल्कि दरवाज़े पर है। जैसा कि इन निशानियों और साधनों के प्रकटन से स्पष्ट है क्योंकि रुबूबियत रहमानियत और रहीमियत समुद्रों की लहरों की तरह उफ़ान पर हैं और प्रकट हो चुकी हैं और एक के बाद एक अवतरित हो रही हैं और नदियों के समान जारी हैं। अत: नि:संदेह अब कर्मफ़ल का समय आ गया है और यह सुन्नत हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में गुज़र चुकी है और नि:संदेह यही युग कर्मफल दिवस है। और क़यामत में सब को इकट्ठा किए जाने का दिन और रब्बुस्समाए के स्वामित्व का दिन और ज़मीन के वासियों के दिलों पर उन विशेषताओं के चिन्हों के प्रकटन का दिन है और नि:संदेह यह युग सबसे सही निर्णय करने वाले अल्लाह की ओर से निर्णायक मसीह का युग है और यह लोगों के विनाश के

وظهـور آثارهـا عـلى قلـوب أهــل الارضــين. ولا شــك أن اليــوم يــوم المســيح الحَكَم مـن الله أحكـم الحاكمـين وإنـه حشـرٌ بعـد هــلاك النــاس وقـد مضـى نموذجـه فى زمـن عيسٰــى وزمـن خاتــم النبيين. فتدبّر ولا تكن من الغافلين.

बाद एक क़यामत है और इसका नमूना (हज़रत) ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युग में गुज़र चुका है। अत: विचार करो और लापरवाहों में से न हो।

الباب الخامِس

فی تفسیر

اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ۵

اعلم أن حقیقة العبادة التی یقبلها المولٰی بامتنانه هی التذلّل التام برؤیة عظمته وعلوّ شانه والثناء علیه بمشاهدة مننه وأنواع احسانه وإیثاره علی کل شیء بمحبّة حضرته وتصوّر محامده وجماله ولمعانه وتطهیر الجنان من وساوس الجنّة نظرًا إلٰی جنانه ومن أفضل العبادات أن یکون الإنسان مُحافظًا علی الصلوات الخمس فی أوائل أوقاتها وأن یجهد للحضور و الذوق والشوق وتحصیل برکاتها مواظبًا

पांचवा अध्याय

اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ۵

की व्याख्या

स्पष्ट हो कि वह उपासना जिसे अल्लाह तआला अपने एहसान से स्वीकार करता है उसकी वास्तविकता अल्लाह तआला की महानता एवं बुलंद शान को देख कर पूर्ण रूप से विनम्रता ग्रहण करना है और उसकी मेहरबानियां और प्रत्येक प्रकार के एहसान देखकर उसकी प्रशंसा एवं स्तुति करना और उसके अस्तित्व से मोहब्बत रखते हुए और उसकी ख़ूबियों और सौन्दर्य और नूर की कल्पना करते हुए उसे प्रत्येक वस्तु पर श्रेष्ठता देना और उसकी जन्नतों को ध्यान में रखते हुए अपने हृदय को शैतानी विचारों से पवित्र करना है। और उपासनाओं में सबसे उत्तम यह है कि इंसान पाँचों समय की नमाज़ों को प्रथम समय में पूर्ण करने का प्रयास करे और फ़र्ज़ (अनिवार्य) तथा सुन्नतों को पूर्ण करने हेतु लगन के साथ प्रयास करते हुए ध्यान पूर्वक, शौक और नमाज़ों की बरकतों की प्राप्ति हेतु पूर्ण रूप से प्रयासरत रहे। क्योंकि नमाज़ वह सवारी है जो बंदे को सर्वव्यापी ख़ुदा तक पहुंचाती है। इन नमाज़ों

علی أداء مفروضاتها و مسنوناتها فإن الصلاة مرکبٌ یوصل العبد إلی رب العباد فیصل بها إلی مقام لا یصل إلیه علی صهوات الجیاد وصیدها لا یُصاد بالسهام۔ وسرّها لا یظهر بالاقلام ومن التزم هذه الطریقة فقد بلغ الحق والحقیقة وأَلْفَی الحِبَّ الذی هو فی حُجُب الغیب ونجا من الشك والریب فتریٰ أیامه غُرَرًا و کلامه دُرَرًا ووجهه بدرًا ومقامه صدرًا ومن ذلّ للّٰہ فی صلواته أذلّ اللّٰه له الملوك و یجعل مالكًا هذا المملوك ثم اعلم أنّ اللّٰه حمد ذاته أولا فی قوله اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ثم حث الناس علی العبادة بقوله اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ففی هذه إشارة إلی أن العابد فی الحقیقة

के द्वारा बंदा उस स्थान तक पहुंच जाता है जहां वह अच्छे और तेज़ रफ्तार घोड़ों की पीठ पर सवार होकर भी नहीं पहुंच सकता। इन नमाज़ों का शिकार (अर्थात् फल) तीरों से नहीं किया जा सकता और उनकी वास्तविकता कलमों द्वारा वर्णित नहीं होती। जिस व्यक्ति ने उस मार्ग को पूर्ण रूप से अपनाया उसने सत्य एवं वास्तविकता को प्राप्त कर लिया और उसने महबूब को जो रहस्यों के पर्दों में है, प्राप्त कर लिया और संदेह और नि:शंकता से मुक्ति प्राप्त कर ली। अत: तू देखेगा कि उसके दिन रोशन और उसका वर्णन मोती और उसका चेहरा चौदहवीं का चांद है और उसका स्थान 'मुख्य स्थान' है। और जो अल्लाह की ख़ातिर अपनी नमाज़ों में एकाग्रता दिखाए अल्लाह उसके समक्ष बादशाहों को झुका देता है और उस ग़ुलाम को मालिक बना देता है। फिर यह भी जान लो कि अल्लाह ने अपने कथन 'अल्हम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन' में सर्वप्रथम अपने अस्तित्व की स्तुति एवं प्रशंसा वर्णन की है। फिर उसने अपने कथन اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ के साथ लोगों को उपासना की प्रेरणा दिलाई है। और इसमें इस ओर संकेत है कि वास्तव में वही व्यक्ति उपासना करने वाला होता है जो उसकी यथायोग्य स्तुति करता है। अत: इस

هو الذى يحمده حق الحمدة فحاصل هذا الدعاء والمسألة أن يجعل اللّٰه أحمد كل من تصدّى للعبادة وعلى هذا كان من الواجبات أن يكون أحمد فى آخر هذه الامّة على قدم أحمد نالاول الذى هو سيد الكائنات ليُفهم أنّ الدعاء استُجيب من حضرة مستجيب الدعوات وليكون ظهوره للاستجابة كالعلامات فهذا هو المسيح الذى كان وُعِد ظهوره فى آخر الزمان مكتوبًا فى الفاتحة وفى القرآن ثم فى هذه الآية إشارة إلى أن العبد لا يمكنه الإتيان بالعبودية إلّا بتوفيق من الحضرة الاحدية ومن فروع العبادة أن تحب من يُعاديك كما تحب نفسك وبنيك وأن تكون مُقيلا للعثرات

दुआ एवं विनती का परिणाम यह है कि अल्लाह हर उस व्यक्ति को **अहमद** बना देता है जो उपासना में लगा रहे। इसलिये यह अनिवार्य था कि इस उम्मत के अंत में **प्रथम अहमद** सय्यदुल कौनैन☆ सल्लल्लाहु वसल्लम के पद्-चिन्हों पर एक **अहमद** पैदा हो ताकि यह समझा जाए कि ऊपर वर्णित दुआ (जो सूरह फ़ातिहा) में की गई है वह ख़ुदा तआला के दरबार में स्वीकृत हो गई है और ताकि इस प्रकार **अहमद** का प्रकटन दुआ की स्वीकृति के लिए निशान के तौर पर हो। अत: यही वह मसीह है जिसका अंतिम युग में प्रकटन का वादा किया गया था जो सूरह फ़ातिहा और क़ुर्आन में लिखा है। फिर इस आयत में यह भी इशारा है कि किसी बंदे का उपासना करना ख़ुदा तआला से सामर्थ्य के बिना संभव ही नहीं। इबादत की शाखाओं में से यह है कि तू उस व्यक्ति से जो तुझ से दुश्मनी रखता है, मोहब्बत करे जिस प्रकार तू अपने आप से और अपने बेटों से मुहब्बत करता है और यह कि तू लोगों की ग़लतियों को क्षमा करने वाला और उनके दोषों को क्षमा करने वाला हो और पवित्र एवं निष्कपट हृदय तथा आन्तरिक पवित्रता और वफ़ादारी और पवित्रता

☆सय्यदुल कौनेन - लोक-परलोक के सरदार (अनुवादक)

مُتجاوزًا عن الهفوات وتعيش تقيًّا نقيًّا سليم القلب طيب الذات ووفيًّا صفيًّا مُنزّهًا عن ذمائم العادات وأن تكون وجودًا نافعًا لخلق الله بخاصية الفطرة كبعض النباتات من غير التكلفات والتصنّعات وأن لا تؤذی اخیك بكبرٍ منك ولا تجرحه بكلمة من الكلمات بل علیك أن تجیب الاخ المغضب بتواضعٍ ولا تُحَقّره فی المخاطبات وتموت قبل أن تموت وتحسب نفسك من الاموات وتُعظّم كلّ من جاءك ولو جاءك فی الاطمار لا فی الحلل والكسوات۔ وتُسلّم علٰی من تعرفه وعلٰی من لا تعرفه۔ وتقوم متصدّیًا للمواسات۔

एवं सत्यता के साथ और समस्त बुरी आदतों से दूर जीवन व्यतीत करे। और तू दिखावे तथा बनावट के बिना कुछ पौधों के समान स्वाभाविक विशेषता के साथ अल्लाह की सृष्टि के लिए लाभदायक अस्तित्व बन जाए। और यह कि तू अहंकार से अपने भाई को दु:ख न दे और न ही किसी बात से उसे घायल करे। बल्कि तुझ पर यह अनिवार्य है कि अपने नाराज़ भाई की बात का उत्तर विनम्रतापूर्वक दे और बातचीत में उसको ज़लील न करे और मृत्यु से पहले मर जाए और अपने आपको मुर्दा समझे। और जो भी तेरे पास आए उसकी इज़्ज़त करे चाहे वह फटे-पुराने कपड़ों में आए और उच्चतम वस्त्र धारण किए हुए न हो और तू प्रत्येक को अस्स्लामो अलैकुम कहे चाहे तुम उसे पहचानते हो या नहीं पहचानते और तू हमदर्दी एवं अन्यों का दु:ख दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

الباب السادس
فی تفسیر قوله تعالیٰ
اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ★

اعلمْ أن هذه الآيات خزينة مملوّة من النكات وحجّة باهرة على المخالفين والمخالفات وسنذكرها بالتصريحات ونُرِيك ما أرانا الله من الدلائل والبينات فاسمعْ منى تفسيرها لعلّ الله ينجيك من الخزعبيلات أما قوله تعالى اِهۡدِ

छठा अध्याय
اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ★
की व्याख्या

जान लो कि यह आयतें गूढ़ रहस्यों से भरा खज़ाना और विरोध करने वाले मर्द और औरतों के लिए एक प्रकाशमय तर्क हैं। हम इनका व्याख्यात्मक रूप से वर्णन करेंगे और जो प्रमाण एवं तर्क अल्लाह ने हमें दिखाए हैं वह तुझ पर भी प्रकट करेंगे। अत: इन आयतों की व्याख्या मुझ से ध्यानपूर्वक सुनो ताकि अल्लाह तुझे झूठे विचारों से बचाए। जहां तक अल्लाह तआला के कथन اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ का संबंध है तो इस के अर्थ यह हैं

★الحاشية: - اعلم ان فی آیة انعمت علیهم تبشیر للمؤمنین و اشارة الی ان الله اعدلهم کلما اعطی للانبیاء السابقین ولذالك علم هذاالدعاء لیکون بشارة للطالبین فلزم من ذالك ان یختتم سلسلة الخلفاء المحمدیة علیٰ مثیل عیسٰی لیتم المماثلة بالسلسلة الموسویة والکریم اذا وعد وفا. منه

★**हाशिया :-** याद रहे कि आयत اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ में मोमिनों के लिए ख़ुशख़बरी है और यह इशारा है कि अल्लाह ने पिछले नबियों को जो कुछ भी प्रदान किया है वह सब कुछ इनके लिए भी तैयार कर रखा है। इसीलिए उसने हमें यह दुआ सिखाई है ताकि अभिलाषियों के लिए ख़ुशख़बरी हो। अत: इससे अनिवार्य हुआ कि मुहम्मदी ख़लीफ़ाओं का सिलसिला ईसा के प्रतिरूप पर समाप्त हो ताकि सिलसिला-ए-मूसविया के साथ समानता पूर्ण हो। और कृपालु जब वादा करता है तो उसे पूरा भी करता है। इसी से।

نَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ فمعنـاه أَرِنـا النهـجَ القويـم وثَبِّتْنـا عـلى طريـق يوصـل إلى حضرتـك وينـجى مـن عقوبتـك ثـم اعلـم أن لتحصيـل الهدايـة طرقًـا عنـد الصوفيـة مسـتخرَجةً مـن الكتـاب والسـنّة أحدهـا طلـبُ المعرفـة بالدليـل والحجـة والثـانى تصفيـةُ الباطــن بأنــواع الرياضــة والثالــث الانقطــاعُ إلى الله وصفــاءُ المحبـة وطلـبُ المـدد مـن الحضـرة بالموافقـة التامـة وبنفـيِ التفرقـة وبالتوبـة إلى الله والابتهـال والدعـاء وعقـدِ الهمـة ثـم لمـا كان طريـقُ طلـب الهدايـة والتصفيـة لا يكفـى للوصـول مِـن غـير توسُّـل الائمّـة والمهديّـين مـن الامّـة مـا رضِـى الله سـبحانه عـلى هـذا القـدر مـن تعليـم الدعـاء اِهْـدِ نَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ بـل

- हे अल्लाह हमें सीधा मार्ग दिखा और हमें उस मार्ग पर दृढ़ता प्रदान कर जो तेरी ओर पहुंचाता हो और तेरी सज़ा से बचाता हो। जान ले कि सूफ़ियों के निकट हिदायत प्राप्त करने के कुछ उपाय हैं जो क़ुर्आन और सुन्नत से उद्धरित हैं। उनमें से पहला उपाय तर्क एवं प्रमाण के द्वारा अध्यात्म ज्ञान की इच्छा है। दूसरा उपाय विभिन्न आत्मसंयमों द्वारा आंतरिक पवित्रता है। और तीसरा उपाय अल्लाह तआला के लिए सब कुछ त्याग देना और केवल मोहब्बत में पूर्ण होना है। और सामंजस्य और मतभेदों का खण्डन और अल्लाह की ओर लौटना और गिड़गिड़ाना और दुआ और हिम्मत करके अल्लाह तआला से सहायता प्राप्त करना है। चूँकि हिदायत की तलाश और नफ़्स की पवित्रता का मार्ग, उम्मत के हिदायत प्राप्त लोगों के अनुसरण के बिना अल्लाह तक पहुंचने के लिए पर्याप्त नहीं इसलिए ख़ुदा तआला केवल इस कदर अर्थात् اِهْـدِ نَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ तक दुआ सिखाने पर राज़ी नहीं हुआ बल्कि उसने صِـرَاطَ الَّذِيْـنَ اَنْعَمْـتَ عَلَيْـهِمْ फ़रमा कर पवित्र और मज्तहिद मुर्शिदों और हिदायत देने वालों की तलाश की ओर तवज्जो दिलाई अर्थात नबियों और रसूलों की। क्योंकि यह समूह ऐसा है जिन्होंने झूठ

حث بقوله "صِرَاطَ الَّذِينَ" على تحسُّس المرشدين والهادين من أهل الاجتهاد والاصطفاء من المرسلين والانبياء فإنهم قوم آثروا دار الحق على دار الزور والغرور وجُذبوا بحبال المحبّة إلى الله بحرِ النور وأُخرجوا بوحيٍ من الله وجذبٍ منه مِن أرض الباطل و كانوا قبل النبوّة كالجميلة العاطل لا ينطقون إلّا بإنطاق المولٰى ولا يؤْثرون إلاّ الذى هو عنده الاولٰى يسعون كلَّ السعى ليجعلوا الناس أهلا للشريعة الربّانية ويقومون على ولدها كالحانية ويُعطَى لهم بيان يُسمِع الصُمَّ ويُنزِل العُصَمَ وجنانٌ يجذِب بعَقْدِ الهمّة الامَمَ إذا تكلّموا فلا يرمون إلّا صائبا وإذا توجّهوا فيُحيون مَيّتًا خائبا يسعون أن

और छल के स्थान पर सत्यता के स्थान को प्राथमिकता दी। और अल्लाह तआला की ओर जो नूर का समुद्र है, मोहब्बत की तारों से खींचे गए। और अल्लाह की वह्यी और उसके आकर्षण से झूठ की ज़मीन से निकाले गए। वे नबुव्वत से पूर्व आभूषणों से वंचित हसीना के समान थे। वे अल्लाह के बुलाए बग़ैर नहीं बोलते और वह केवल और केवल उस चीज़ को अपनाते हैं जो उसके निकट उच्चतम हो। वह लोगों को ख़ुदा की शरीयत के योग्य बनाने में पूरा प्रयास करते हैं। वह शरीयत (विधान) के बेटों की इस प्रकार परवरिश करते हैं जैसे एक विधवा अपने बेटों की। उन्हें ऐसी वर्णन शक्ति प्रदान की जाती है जो बहरों को श्रवण शक्ति प्रदान करती है और सफ़ेद हिरणों को उतार लाती है। और उन्हें ऐसा दिल प्रदान किया जाता है जो अपने दृढ़ संकल्प से उम्मतों को खींच लेता है। जब वे बात करते हैं तो उनका तीर व्यर्थ नहीं जाता और जब ध्यान लगाते हैं तो नामुराद मुर्दों को भी जीवित कर देते हैं। उनका पूरा प्रयास होता है कि वे लोगों को बुराइयों से निकाल कर नेकियों की ओर और निषिद्ध बातों से अच्छाइयों की ओर स्थानांतरित करें। और उनका मुख अज्ञानताओं से हटाकर मर्यादाओं, स्थायित्व

ينقلوا الناس من الخطيّات إلى الحسنات ومن المنهيّات إلى الصالحات ومن الجهلات إلى الرزانة والحَصات ومن الفسق والمعصية إلى العفّة والتقات ومَن أنكرَهم فقد ضيَّع نعمة عُرِضتْ عليه وبعُد مِن عين الخير وعن نورِ عينَيْه وإن هذا القطع أكبر من قطع الرحم والعشيرة وإنهم ثمرات الجنة فويل للذى تركهم ومالَ إلى المِيرة وإنهم نور الله و يُعطَى بهم نورٌ للقلوب وترياق لسمِّ الذنوب وسكينةٌ عند الاحتضار والغرغرة وثباتٌ عند الرحلة وتركِ الدنيا الدنيّة أتظنُّ أن يكون الغير كمثل هذه الفئة الكريمة كلّا والذى أخرجَ العذق من الجريمة ولذالك علّم اللهُ هذا الدعاء مِن

और अकलमंदी की ओर तथा अवज्ञा और गुनाह से पवित्रता और संयम की ओर फेर दें। जो व्यक्ति भी उनका इंकार करे तो नि:संदेह उसने एक ऐसी बड़ी नेमत को व्यर्थ कर दिया जो उसके समक्ष प्रस्तुत की गई थी। और वह भलाई के चश्मे और अपनी आंखों के नूर से दूर चला गया। और यह रक्त संबंधों और ख़ानदानी संबंधों को तोड़ने से भी बड़ा है। भेजे हुए यह समूह तो जन्नत के फल होते हैं। अत: अफ़सोस और खेद है उस व्यक्ति पर जो उन्हें त्यागता है और खाने पीने की वस्तुओं की ओर प्रेरित होता है। वे अल्लाह का नूर हैं और उनके द्वारा (लोगों के) दिलों को नूर और गुनाहों के ज़हर के लिए विष नाशक दिया जाता है। और जान निकलने तथा अंतिम आवाज़ के समय राहत और मृत्यु तथा इस तुच्छ दुनिया को त्यागने के समय स्थिरता प्रदान की जाती है। क्या तू गुमान करता है कि कोई अन्य भी इस प्रतिष्ठित समूह जैसा हो सकता है? कदापि नहीं। क़सम है उस ज़ात की जिसने गुठली से खजूर पैदा किया। यही कारण है कि अल्लाह ने अपनी अत्यंत रहमत से यह दुआ सिखाई और मुसलमानों को आदेश दिया कि वे इन लोगों के मार्ग का अनुसरण करें जिन को हज़रत अहदियत (एक ख़ुदा)

غاية الرحمة وأمَر المسلمين أن يطلبوا "صراط الذين انعم عليهم" مِن النبيّين والمرسلين من الحضرة وقد ظهر من هذه الآية على كل مَن له حظٌّ من الدِراية أن هذه الامّة قد بُعثتْ على قدم الانبياء وإنّ مِن نبى إلّا له مثيل فى هؤلاء ولولا هذه المضاهاة والسواء۔ لبطُل طلبُ كمال السابقين وبطُل الدعاء۔ فالله الذى أمَرنا أجمعين أن نقول "اهْدِنَا الصِّراطَ الْمُستَقِيمَ" مصلّين ومُمسِين ومصبحين وأن نطلب صراط الذين أنعمَ عليهم من النبيين والمرسلين أشار إلى أنه قد قدّر من الابتداء أن يبعث فى هذه الإمّة بعضَ الصلحاء على قدم الانبياء۔ وأن يستخلفهم كما استخلفَ الذين مِن قبلُ

की ओर से पुरस्कृत किया गया नबियों और रसूलों में से। इस आयत से प्रत्येक उस व्यक्ति पर जिसे अक़्ल एवं विवेक से कुछ भी अंश मिला हो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह उम्मत नबियों के (पद) चिन्हों पर खड़ी की गयी है और कोई नबी नहीं परन्तु उसका समरूप इस उम्मत में पाया जाता है। यदि यह समानता एवं समरूपता न होती तो (पिछले नबियों) के कमाल की चाहत व्यर्थ होती और यह दुआ झूठी ठहरती। अत: अल्लाह, जिसने हम सबको यह आदेश दिया है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ कहें और नमाज़ें पढ़ते और दुआएं करते हुए शाम और सुबह के समय में मुनअम अलैहि समूह अर्थात नबियों एवं भेजे हुओं का मार्ग तलाश करें। उसने इस ओर संकेत किया है कि उसने प्रारम्भ से ही यह निश्चित कर रखा था कि वह इस उम्मत में कुछ सुल्हा (पवित्र) लोगों को नबियों के क़दमों पर अवतरित करेगा और उन्हें उसी प्रकार ख़लीफ़ा बनाएगा जिस प्रकार पहले उसने बनी इस्राईल में से ख़लीफ़ा बनाये थे नि:संदेह यही सत्य है इसलिए व्यर्थ बहस और तू-तू मैं-मैं छोड़। अल्लाह तआला का उद्देश्य यह था कि वह इस उम्मत में विभिन्न गुण एवं विविध शिष्टाचारों को एकत्रित करे। अत:

مِـن بـنى إسـرائيل و إنّ هـذا لهـو الحـق فاتـرُك الجـدل الفضـول والاقاويـل و كان غـرض الله أن يجمـع فى هـذه الامّـة كمـالاتٍ متفرقـة و أخلاقًـا متبـدّدة فاقتضـتْ سـنّتُه القديمـة أن يعلّـم هـذا الدعـاء ثـم يفعـل مـا شـاء وقـد سـمّى هـذه الامّـة خـيرَ الامـم فى القـرآن ولا يحصـل خـيرٌ إلّا بزيـادة العمـل والإيمـان والعلـم والعرفـان وابتغـاءٍ مرضـات الله الرحمٰـن و كذالـك وعَـد الذيـن آمنـوا وعملـوا الصالحـات ليسـتخلفنّهم فى الارض بالفضـل والعنايـات كمـا اسـتخلف الذيـن مـن قبلـهم مـن أهـل الصـلاح والتقـاة فثبـت مـن القـرآن أن الخلفـاء مـن المسـلمين إلى يـوم القيامـة وانـه لـن يـأتى أحـد مـن السـماء بـل يُبعَثـون مـن هـذه

उसकी पुरानी सुन्नत ने मांग की कि वह यह दुआ सिखाये फिर जो चाहे करे। इस उम्मत का नाम पवित्र क़ुर्आन में खैरुल उमम (सर्वश्रेष्ठ उम्मत) रखा गया है। और यह खैर (भलाई) उसी समय प्राप्त हो सकती है जबकि कर्म एवं ईमान और ज्ञान एवं इरफ़ान में वृद्धि हो और ख़ुदा-ए-रहमान की प्रसन्नता माँगी जाए। और इसी प्रकार उसने मोमिनों और शुभ कर्म करने वालों से यह वादा किया है कि वह अपनी कृपा एवं दया से उन्हें इस ज़मीन में उसी प्रकार ख़लीफ़ा बनाएगा जिस प्रकार उसने उन से पहले पवित्र कर्म करने वाले और संयम धारण करने वालों को ख़लीफ़ा बनाया था। अतः क़ुर्आन से यह प्रमाणित हो गया कि क़यामत के दिन तक मुसलमानों में ख़लीफा आते रहेंगे और यह कि आसमान से कदापि कोई नहीं आएगा बल्कि इसी उम्मत से अवतरित होंगे। तुझे क्या हो गया है कि पवित्र क़ुर्आन के वर्णन पर ईमान नहीं लाता। क्या तूने अल्लाह की पुस्तक को त्याग दिया है या फिर तुम में ज्ञान का कोई अंश शेष नहीं रहा। अल्लाह ने "मिन्कुम" (अर्थात् तुम में से) फ़रमाया है "मिन बनी इस्राईला" (अर्थात् बनी इस्राईल में से) नहीं फ़रमाया। यदि तू सच्चाई की खोज करने वाला और तर्कों की इच्छा करने वाला है तो

الامة وما لك لا تؤمن ببيان الفرقان أتَرَكْتَ كتاب الله أم ما
بقِى فيك ذرة من العرفان وقد قال الله "مِنْكُمْ" وما قال "مِن
بنى إسرائيل" و كفاك هذا إن كنت تبغى الحق وتطلب الدليل
أيها المسكين اقرء القرآن ولا تمشِ كالمغرور ولا تبعُدْ مِن
نور الحق لئلّا يشكو منك إلى الحضرة سورةُ الفاتحة وسورةُ
النور اتّق الله ثم اتّق الله ولا تكنْ أوّلَ كافر بآيات النور
والفاتحة لكيلا يقوم عليك شاهدان فى الحضرة وأنت تقرأ
قوله وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وتقرأ قوله لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ ففكّرْ
فى قوله مِنْكُمْ فى سورة النور واترُك الظالمين وظنّهم ألم يأنِ
لك أن تعلم عند قراءة هذه الآيات أن الله قد جعل الخلفاء

तेरे लिए यही पर्याप्त है। हे असहाय! (गोलडवी) क़ुर्आन पढ़ और अहंकारी के समान न चल, सच्चाई के नूर से दूर न हो ताकि सूरह फ़ातिहा और सूरह नूर अल्लाह के समक्ष तेरी शिकायत न करें। अल्लाह से डर और फिर अल्लाह से डर और सूरह नूर और फ़ातिहा की आयतों का प्रथम विरोधी न बन ताकि तेरे विरुद्ध अल्लाह तआला के दरबार में दो गवाह न खड़े हो जाएं। और उस के कथन لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ और उसके कथन وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ तुम पढ़ते हो। अत: सूरह नूर में जो 'मिनकुम' आया है उस पर विचार कर और अत्याचारियों और उनकी कल्पना एवं विचारों को छोड़। क्या तेरे लिए वह समय नहीं आ गया कि इन आयतों को पढ़ते समय यह जान सके कि अल्लाह ने अपनी अनन्त कृपा से समस्त ख़लीफ़ाओं को इसी उम्मत में से बनाया है। अत: मसीह मौऊद आसमानों से कैसे आएगा। क्या तेरे निकट मसीह मौऊद ख़लीफ़ाओं में से नहीं? फिर तू कैसे विचार करता है कि वह बनी इस्राईल में से और उनके नबियों में से होगा। क्या तू पवित्र क़ुर्आन को त्यागता है जबकि हर प्रकार की भलाई पवित्र क़ुर्आन में है या तेरा दुर्भाग्य तुझ पर इतना प्रबल हो चुका है कि तू जानबूझ कर हिदायत के मार्ग को त्याग

كلهم من هذه الامّة بالعنايات فكيف يأتى المسيح الموعود
من السماوات۔ أليس المسيح الموعود عندك من الخلفاء
فكيف تحسبه من بنى إسرائيل و من تلك الانبياء۔ أتترك
القرآن وفى القرآن كل الشفاء أو تغلّبت عليك شِقْوتك فتترك
متعمدًا طريقَ الاهتداء۔ ألا ترىٰ قوله تعالى: كَمَا اسْتَخْلَفَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ في هذه السورة فوجب أن يكون المسيح
الآتى من هذه الامّة لا مِن غيرهم بالضرورة فإن لفظ "كما" يأتى
للمشابهة والمماثلة والمشابهةُ تقتضى قليلا من المغايرة
ولا يكون شيءٌ مُشابِهَ نفسِه كما هو من البديهيات فثبت
بنصٍّ قطعىّ أن عيسى المنتظَر من هذه الامة و هذا يقينىٌّ

रहा है। क्या तू इस सूरह में अल्लाह तआला के कथन

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ☆ (सूरह नूर-24/56)

पर विचार नहीं करता। अत: अनिवार्य है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत से हो न कि अवश्य उम्मत के बाहर से। क्योंकि शब्द "कमा" समानता एवं प्रारुपता के लिए आता है। समानता अंतर की माँग करती है। जैसा कि यह निश्चित है कि कोई वस्तु स्वयं अपने समान नहीं हुआ करती। इसलिए अकाट्य प्रमाणों से सिद्ध हो गया कि जिस ईसा की प्रतीक्षा की जा रही है वह इसी उम्मत से होगा और यह बात निश्चित और संशय से पवित्र है। पवित्र क़ुर्आन ने यही कहा है और विद्वान (मौलवी) इसे जानते हैं। फिर तुम इस (स्पष्ट बात) के पश्चात किस बात पर ईमान लाओगे। पवित्र क़ुर्आन ने तो कह दिया है कि अल्लाह के नबी ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं। अत: अल्लाह के कथन ★ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ (सूरह अलमाइदा-5/118)

पर विचार कर और मुर्दों को जीवित न कर। झूठे वर्णनों एवं व्यर्थ की कहानियों से ईसाईयों की सहायता न कर। उनके उपद्रव कम नहीं। अत: अपनी अज्ञानताओं से उनमें वृद्धि न कर। यदि तुझे किसी नबी का जीवन

ومنــزّهٌ عــن الشــبهات هــذا مــا قــال القــرآن ويعلمــه العالمــون فبــأى حديــث بعــده تؤمنــون وقــد قــال القــرآن إن عيســى نــبى الله قــد مــات ففكّــرْ فى قــولـه: فَلَمَّــا تَوَفَّيْتَــنِىْ ولا تُــحْيِ الامــواتَ ولا تنصُــر النصــارى بالاباطيــل والخزعبيــلات وفِتَنُــهم ليســت بقليــلة فــلا تزِدْهــا بالجهــلات وإن كنــت تحــبّ حيــاةَ نــبيٍّ فآمِــنْ بحيــاةِ نبيّنــا خــيرِ الكائنــات ومــا لــك أنــك تحســب مَيْتًــا مَــن كان رحمــةً للعالمــين وتعتقــد أن ابــن مريــم مــن الاحيــاء بــل مــن المُحْيِــين انظُــرْ إلى"النــور" ثــم انظــر إلى"الفاتحــة" ثــم ارجِــع البصــرَ ليرجــع البصــر بالدلائــل القاطعــة ألســتَ تقــرأ صِــرَاطَ الَّذِيْــنَ اَنْعَمْــتَ عَلَيْــهِمْ فى هــذه الســورة فــأَنَّى تُؤفَــك بعــد هــذا

पसंद करना है तो फिर खैरुल कायनात हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जीवन पर ईमान ला। तुझे क्या हो गया है कि वह जो रहमतुल्लिल आलमीन है उसे तू मृत समझता है और इब्ने मरयम के विषय में यह आस्था रखता है कि वह जीवितों में से बल्कि जीवित करने वालों में से है। सूरह नूर पर दृष्टि डाल और फिर सूरह फ़ातिहा पर दृष्टि डाल फिर दृष्टि को फेर ताकि दृष्टि, अकाट्य तर्कों के साथ लौटे। क्या तू इस सूरह में صِــرَاطَ الَّذِيْــنَ اَنْعَمْــتَ عَلَيْــهِمْ (सूरह फ़ातिहा-1/7) नहीं पढ़ता। उसके पश्चात तू कहां बहक रहा है क्या तू अपनी दुआ को भूल जाता है या उसे लापरवाही से पढ़ता है? क्योंकि तूने अपने रब्ब से इस दुआ और विनती में यह मांग की थी कि बनी इस्राईल के नबियों में से ऐसा कोई नबी न रहने दे परन्तु उसका समरूप इस उम्मत में से अवतरित फ़रमाए। तुझ पर अफसोस! क्या तू अपनी दुआ को इतनी जल्दी भूल गया। बावजूद इसके कि तू उसे (दिन में) पांच समय पढ़ता है। मुझे तुझ पर अत्यंत हैरानी है। क्या यह है तेरी दुआ? और यह हैं तेरे विचार? पवित्र क़ुर्आन में से सूरह फ़ातिहा और सूरह नूर पर विचार कर। क़ुर्आनी गवाही के पश्चात किस गवाह की

أتنسى دعاءك أو تقرأ بالغفلة فإنك سألت عن ربك في هذا الدعاء والمسألة أن لا يغادر نبيًّا من بنى إسرائيل إلّا ويبعث مثيله في هذه الامّة وَيْحَك أنَسِيتَ دعاءَك بهذه السرعة مع أنك تقرأه في الاوقات الخمسة عجبتُ منك كلَّ العجب أهذا دعاؤك وتلك آراؤك انظرْ إلى الفاتحة وانظرْ إلى سورة النور من الفرقان وأىّ شاهد يُقبَل بعد شهادة القرآن فلا تكنْ كالذى سرىٰ إيجاسَ خوفِ الله واستشعاره وتَسَرْبَلَ لباسَ الوقاحة وشِعارَه أ تَترُكُ كتاب الله لقوم تركوا الطريق وما كمّلوا التحقيق والتعميق وإنّ طريقهم لا يوصل إلى المطلوب وقد خالفَ التوحيدَ وسُبُلَ الله المحبوب فلا تحسبْ وَعْرًا

गवाही स्वीकार की जाएगी। तू उस व्यक्ति के समान मत बन जिसने ख़ुदा के भय का बाहरी एवं भीतरी अहसास त्याग दिया बल्कि बेहयाई को अपना वस्त्र और अपनी आदत बनाया। क्या तू उन लोगों के लिए अल्लाह तआला की पुस्तक को त्याग देगा जिन्होंने सत्य का मार्ग त्यागा हुआ है और शोध एवं गहरे चिंतन को पूर्ण नहीं किया। उनका मार्ग उद्देश्य तक नहीं पहुंचाता और तौहीद और प्यारे अल्लाह के मार्गों के विरुद्ध है। अत: तू कठिन मार्ग को नर्म विचार न कर यद्यपि कदमों की अधिकता ने उसे बिल्कुल समतल कर दिया है और चाहे भट्ट तीतरों के झुंड के झुंड उस ओर गए हों क्योंकि वास्तविक हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है। पवित्र क़ुर्आन ने तो मसीह की मृत्यु पर गवाही दे दी है और स्पष्ट वर्णनों से उसे मृत्यु प्राप्तों लोगों में सम्मिलित किया है। तुझे क्या हो गया है कि तू ख़ुदा के कथन -

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ (सूरह अलमाइदा-5/118)

और قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान-3/145)

उस पर विचार नहीं करता। तुझे क्या हो गया है कि क़ुर्आन के मार्ग को स्वीकृत नहीं करता और दूसरे मार्ग तुझे प्रसन्न करते हैं जबकि उसने तो

دَمِثًا و إنّ دمَّثه كثيرٌ من الخُطا و إن اهتدتْ إليها أبابيل من القطا فإنّ هُدى الله هو الهدى و إن القرآن شهد على موت المسيح و أدخلَه في الأموات بالبيان الصريح ما لك ما تفكّر في قوله فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ و في قوله قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ و ما لك لا تختار سبيل الفرقان و سَرَّك السُّبُلُ و قد قال فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ فما لكم لا تفكّرون و قال لكم فيها مستقرٌّ و متاع إلى حين فكيف صار مستقرُّ عيسى في السماء أو عرشَ رب العالمين إنّ هذا إلّا كذب مبين و قال سبحانه: اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ فكيف تحسبون عيسى من الأحياء. الحياء الحياء. يا عباد الرحمٰن القرآن القرآن. فاتقوا الله و لا تتركوا الفرقان

फ़रमाया है कि فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (सूरह अलआराफ़-7/26) फिर तुम्हें क्या हो गया है कि विचार-विमर्श नहीं करते। इसके अतिरिक्त उसने फ़रमाया है कि तुम्हारे लिए ज़मीन में एक तय सीमा तक रहना एवं लाभ प्राप्त करना निर्धारित है। फिर ईसा अलैहिस्सलाम का ठिकाना आसमान में या समस्त संसार के रब्ब का अर्श कैसे हो गया? यह तो स्पष्ट झूठ है। अल्लाह सुबहानहु तआला ने फ़रमाया है कि

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ☆ (सूरह अन्नहल-16/22)

फिर तुम ईसा अ. को जीवितों में किस लिए समझते हो। शर्म! शर्म! हे ख़ुदा के बंदो! क़ुर्आन को पकड़ो, अल्लाह से डरो और क़ुर्आन को न छोड़ो। यह वह पुस्तक है जिस के विषय में इंसानों एवं जिन्नों से पूछताछ होगी। तुम नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ते हो! अत: हे ज्ञान रखने वालों! तुम इसमें विचार विमर्श करो। क्या तुम इस में आयत

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (सूरह फ़ातिहा-1/7)

नहीं देखते। अत: तुम उन लोगों के समान मत हो जाओ जिन्होंने अपनी

☆ वे सब मुर्दे हैं न कि जीवित- अनुवादक

إنـه كتـاب يُسـأَل عنـه إنسٌ وجـانٌّ وإنكـم تقـرء ون الفاتحـة فى الصـلاة ففكِّـروا فيهـا يـا ذوى الحصـاة ألا تجـدون فيهـا آيـة صِـرَاطَ الَّذِيۡـنَ اَنۡعَمۡـتَ عَلَيۡـهِمۡ فـلا تكونـوا كالذيـن فقـدوا نـورَ عينَيْـهم وذهـب بمـا لديـهم وَيْحَكـم وهـل بعـد الفرقـان دليـل أو بقِـى إلى مفـرٍّ مـن سـبيل أيقبَـل عقلكـم أن يبشّـر ربُّنـا فى هـذا الدعـاء بأنـه يبعـث الائمّـةَ مِـن هـذه الامّـة لمـن يريـد طريـق الاهتـداء الذيـن يكونـون كمثـل أنبيـاء بـنى إسـرائيل فى الاجتبـاء والاصطفـاء ويأمرنـا أن ندعـو أن نكـون كأنبيـاء بـنى إسـرائيل ولا نكـون كأشـقياء بـنى إسـرائيل ثـم بعـد هـذا يدُعُّنـا ويُلقينـا فى وِهـاد الحرمـان ويرسـل إلينـا رسـولا مـن بـنى

आंखों का प्रकाश खो दिया और जो उनके पास था वह जाता रहा। तुम पर अफ़सोस! क्या पवित्र क़ुर्आन के पश्चात भी कोई और तर्क है या कोई और भागने का मार्ग शेष रह जाता है। क्या तुम्हारी बुद्धि इस बात को स्वीकार करती है कि हमारा रब्ब हमें इस दुआ में तो यह ख़ुशख़बरी दे कि वह इस उम्मत में उन लोगों के लिए जो हिदायत का मार्ग चाहते हैं इमाम (मार्ग दर्शक) अवतरित करेगा जो पवित्र और विशिष्ट होने के कारण बनी इस्राईल के नबियों के समान होंगे। और वह हमें तो यह आदेश दे कि हम बनी इस्राईल के नबियों जैसे बनने की दुआ करें और बनी इस्राईल के दुष्टों के समान न बनें। फिर उसके पश्चात वह ख़ुदा हमें धक्के देकर हताशा के गड्ढों में डाल दे और बनी इस्राईल का एक रसूल हमारी ओर भेज दे और अपने वादे को बिल्कुल भूल जाए। यह ऐसा खुला-खुला छल है जिसे मन्नान (बिना मांगे देने वाला) ख़ुदा की ओर सम्बद्ध नहीं किया जा सकता। अल्लाह ने इस सूरह में तीन समूहों का वर्णन किया है। 'मुनअम अलैहिम' का, और यहूदियों का और ईसाइयों का समूह। और हमें निर्देश दिया कि इनमें से पहले समूह में सम्मिलित हों और दूसरे अन्य समूहों से मना किया

إسـرائيل وينسـى وعـده كل النسـيان وهـل هـذا إلّا المكيـدة الـتى لا يُنسَـب إلى الله المنـان وإن الله قـد ذكـر فى هـذه السـورة ثلاثـةَ أحـزاب مـن الذيـن أنعمَ عليـهم واليهـود والنصرانيـين ورَغَّبَنـا فى الحـزب الاوّل منهـا ونهـى عـن الآخريـن بـل حَثَّنـا عـلى الدعـاء والتضـرع والابتهـال لنكـون مـن المنعَـم عليـهم لا مـن المغضـوب عليـهم وأهـل الضـلال ووالذى أنـزل المطـرَ مـن الغمـام وأخـرج الثمـرَ مـن الاكمـام لقـد ظهـر الحـق مـن هـذه الآيـة ولا يشـكّ فيـه مَـن أُعطـىَ له ذرة مـن الدرايـة وإنّ الله قـد مـنَّ علينـا بالتصريـح والإظهـار وأمـاطَ عنّـا وَعْثـاءَ الافتـكار فوجـب عـلى الذيـن يُنَضْنِضـون نضنضـةَ الصِـلِّ ويُحَمْلِقـون

बल्कि हमें दुआ और गिड़गिड़ाने आंसुओं के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रेरणा दिलाई ताकि हम 'मुनअम अलैहिम' (जिन पर इनाम किया गया) बन जाएँ और उनमें से न बनें जिन पर प्रकोप हुआ एवं पथ भ्रष्ट हुए । क़सम है उस ज़ात (ख़ुदा) की जिसने बादलों से बारिश अवतरित की और शाखों से फल पैदा किए नि:संदेह इस आयत (صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ☆) से सच्चाई सिद्ध हो गई। और कोई भी व्यक्ति जिसे तनिक भी बुद्धि प्रदान की गई हो इस में संदेह नहीं करेगा। अल्लाह तआला ने विस्तृ रूप से इन विषयों का वर्णन करके हम पर बहुत एहसान किया है और हमसे विचार विमर्श की कठिनाई को दूर कर दिया है। इसलिए उन लोगों पर जो सांप की तरह अपनी ज़बान हिला रहे हैं और शिकार को ताकने वाले बाज़ के समान आंखें फाड़कर देखते हैं, उन पर अनिवार्य है कि वे इस ख़ुदाई ईनाम से मुँह न मोड़ें और जानवरों के समान न बनें। यह बात मेरे दिल में बैठ गई है कि सूरह फ़ातिहा उनके ज़ख़्मों का इलाज करती है और उनके बाज़ुओं को पर प्रदान करती है और पवित्र क़ुर्आन की प्रत्येक सूरह ही इस आस्था (मसीह

☆ उन लोगों का मार्ग जिन पर इनाम किया गया...(सूरह फ़ातिहा-1/7)

حملقةَ البازی المطل ان لا يُعرِضوا عن هذا الإنعام ولا يكونوا كالانعام وقد عَلِقَ بقلبی أن الفاتحة تأسُوا جِراحَهم وتريش جناحَهم وما مِن سورة فی القرآن إلّا هی تكذّبهم فی هذا الاعتقاد فاقرئْ مِمّا شئتَ من كتاب الله يُريك طريق الصدق والسداد۔ ألا ترىٰ أن سورة "بنی إسرائيل" يمنع المسيح أن يرقی فی السماء وأن"آل عمران" تعِده أن الله مُتوَفِّيه وناقِلُه إلى الأموات من الأحياء۔ ثم إن"المائدة" تبسُط له مائدة الوفاة فاقرأ: فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ إنْ كنت فی الشبهات ثم إن "الزُمَر" يجعله مِن زُمَرٍ لا يعودون إلى الدنيا الدنيّة وإنْ شئتَ فاقرأ: فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ واعلم أن الرجوع

का आसमान पर जीवित होने) में उनको झूठा ठहराती है। इसलिए अल्लाह की पुस्तक में से जहां से चाहो पढ़ लो वह तुम्हें सच्चाई का और सीधा मार्ग दिखाएगी। क्या तू नहीं देखता सूरह बनी इस्राईल मसीह को आसमान पर चढ़ने से रोक रही है और सूरह आल-ए-इमरान उनसे वादा करती है कि अल्लाह उन्हें स्वभाविक मृत्यु देगा और जीवितों से मुर्दों की ओर स्थानांतरित करेगा। फिर सूरह माइदा उनके लिए मौत का बिछौना बिछा रही है। यदि तू संशय में लिप्त है तो

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (सूरह अलमाइदा-5/118)

पढ़। फिर सूरह ज़ुमर उन्हें इस श्रेणी में सम्मिलित करती है जो इस तुच्छ संसार की ओर लौटते नहीं। यदि चाहो तो आयत

فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ (सूरह अज़्ज़ुमर-39/43)

अर्थात फिर वह जिसकी मृत्यु का आदेश पारित कर चुका होता है उसकी रूह को रोके रखता है, को पढ़ लो और जान लो कि मृत्यु के पश्चात वापसी हराम है। और जिस बस्ती को अल्लाह ने नष्ट कर दिया हो उस पर निश्चित रूप से हराम है कि वह कर्मफल दिवस से पहले

حـرام بعـد المنيّـة وحـرام عـلى قريـة أهلكهَـا الله أن تُبعَـث قبـل يـوم النشـور وأمـا الإحيـاء بطريـق المعجـزة فليس فيـه الرجـوع إلى الدنيـا الـتى هـى مقـام الظلـم والـزور ثـم إذا ثبـت مـوت المسـيح بالنـصّ الصريـح فـأزال الله وَهْـمَ نـزولِه مـن السّـماء بالبيـان الفصيـح وأشـار فى سـورة النـور والفاتحـة أن هـذه الإمّـة يـرث أنبيـاء بـنى إسـرائيل عـلى الطريقـة الظليـة فوجـب أن يـأتى فى آخـر الزمـان مسـيح مـن هـذه الامـة كمـا أتى عيسـى ابـن مريـم فى آخـر السلسـلة الموسـوية فـإن مـوسىٰ ومحمـدًا عليهمـا صلـوات الرحمٰـن متماثـلان بنـصّ الفرقـان وإن سلسـلة هـذه الخلافـة تشـابهُ سلسـلةَ تلـك الخلافـة كمـا هـى

जीवित की जाए। सिवाए चमत्कारिक रूप से जीवित होने में। संसार जो कि अत्याचार एवं झूठ का स्थान है उसकी ओर वापसी नहीं होती। अत: जब मसीह की मृत्यु क़ुर्आनी आयतों से सिद्ध हो गई तो अल्लाह ने सरल एवं सुबोध वर्णन के साथ उसके आसमान से अवतरण के संशय का निवारण कर दिया। और सूरह नूर और फ़ातिहा में इशारा कर दिया कि यह उम्मत प्रतिरूप ते तौर पर बनी इस्राईल के नबियों की वारिस होगी। अत: आवश्यक है कि अंतिम युग में इस उम्मत में भी मसीह आए जिस प्रकार सिलसिला-ए-मूस्विया के अंतिम में ईसा इब्ने मरयम आए। अत: मूसा और मुहम्मद (दयालु ख़ुदा इन दोनों पर अपनी रहमतों का अवतरण करे) अत: क़ुर्आन की आयत अनुसार एक दूसरे के प्रारूप हैं। और यह सिलसिला खिलाफ़त-ए- मुहम्मदिया उस सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त-ए-मूस्विया के समान है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है और इसमें किसी दो का मतभेद नहीं। खुलफ़ा-ए-मूसा के सिलसिले की सदियाँ चौदहवीं के चाँद की गणना अनुसार हज़रत ईसा पर समाप्त हो गईं इसलिए आवश्यक था कि इस उम्मत का मसीह भी उतनी ही निर्धारित सीमा में प्रकट हो। पवित्र क़ुर्आन ने आयत-

مذکورة فی القرآن وفیها لا یختلف اثنان وقد اختتمت مئاتُ سلسلةِ خلفاء موسٰی علی عیسٰی کمثل عِدّة أیام البدر فکان من الواجب أن یظهَر مسیحُ هذه الامّة فی مدّة هی کمثل هذا القدر وقد أشار إلیه القرآن فی قوله: لَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّ اَنۡتُمۡ اَذِلَّۃ و إن القرآن ذو الوجوه کما لا یخفی علی العلماء الاجلّة فالمعنی الثانی لهذه الآیة فی هذا المقام ان الله ینصر المؤمنین بظهور المسیح إلی مِیِینَ تُشابهُ عِدّتُها أیامَ البدر التامّ والمؤمنون أذلّةٌ فی تلك الایام فانظرْ إلیٰ هذه الآیة کیف تشیر إلی ضعف الإسلام ثم تشیر إلی کون هلاله بدرًا فی أجلٍ مسمّی من الله العلّام کما هو مفهوم

لَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّ اَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ ☆ (सूरह आल-ए-इमरान-3/124)

में इसी ओर संकेत किया है और जैसा कि अज्ल्ला विद्वानों पर यह बात छुपी हुई नहीं कि पवित्र क़ुर्आन ज़ुलवजुह है (अर्थात् अपने भीतर कई अर्थ रखता है) अत: इस स्थान पर इस आयत के दूसरे अर्थ यह हैं कि अल्लाह तआला इन शताब्दियों के अंत में जिनकी गणना पूर्ण चाँद की गणना के दिनों के समान है मसीह मौऊद के प्रकटन से मोमिनों की सहायता करेगा और मोमिन उस युग में तुच्छ होंगे। अत: इस आयत पर विचार करो कि किस प्रकार इस्लाम की निर्बलता की ओर इशारा कर रही है। फिर यह आयत सर्वज्ञानी ख़ुदा की निर्धारित समय सीमा के भीतर पहली रात्रि के चाँद को पूर्ण चाँद बनने की ओर भी इशारा करती है जैसा कि बद्र शब्द का यही अर्थ है। अत: इस फ़ज़ल और ईनाम पर अल्लाह के लिए ही सब प्रशंसा है। अत: इस अध्याय में हमारे वर्णन का निष्कर्ष यह है कि सूरह फ़ातिहा रब्बुल अरबाब के फ़ज़ल से मसीह के इस उम्मत में से होने की ख़ुशख़बरी देती है। अत: सूरह फ़ातिहा के

☆ अनुवाद - अर्थात अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर थे।

من لفظ البدر فالحمد لله على هذا الافضال والإنعام وحاصل ما قلنا فى هذا الباب أن الفاتحة تبشّر بكون المسيح من هذه الامّة فضلا من رب الارباب فقد بُشِّرْنا مِن الفاتحة بأئمّةٍ منّا هم كأنبياء بنى إسرائيل وما بُشِّرْنا بنزول نبىّ من السماء فتَدبَّرْ هذا الدليل وقد سمعتَ من قبل أن سورة النور قد بشّرتْنا بسلسلة خلفاء تشابهُ سلسلةَ خلفاء الكليم وكيف تتمّ المشابهة من دون أن يظهر مسيح كمسيحِ سلسلة الكليم فى آخر سلسلة النبى الكريم وإنّا آمنّا بهذا الوعد فإنه من رب العباد وإن الله لا يخلف الميعاد والعجب من القوم أنهم ما نظروا إلى وعد حضرة الكبرياء وهل يُوفّى ويُنجز

द्वारा हमें यह खुशख़बरी दी गई है कि बनी इस्राईल के नबियों के समान हम में इमाम (नेक लोग) तो होंगे किंतु आसमान से किसी नबी के अवतरित होने की हमें खुशख़बरी नहीं दी गई। अत: इस तर्क पर विचार कर। तू इससे पहले सुन चुका है कि सुरह नूर ने हमें उन ख़लीफ़ाओं के सिलसिले की ख़ुशख़बरी दी है जो (मूसा) कलीमुल्लाह के ख़लीफ़ाओं के सिलसिले के साथ समानता रखेंगे। और यह समानता कलीमुल्लाह के सिलसिले के मसीह के समान नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिलसिले के अंत में एक मसीह के प्रकटन के बिना किस प्रकार पूरी हो सकती है। हमारा इस वादे पर ईमान है क्योंकि यह वादा लोगों के रब्ब की ओर से है और अल्लाह वचन-भंग नहीं किया करता। इस क़ौम पर आश्चर्य है कि उन्होंने महान ख़ुदा के वचन की ओर ध्यान ही नहीं दिया और ख़ुदाई वचन तो अटल होता है और अवश्य पूरा होता है। अत: उन्हें सयंम और लज्जा के साथ विचार करना चाहिए। क्या यह निर्णय का ढ़ंग है कि आसमान से मसीह को अवतरित किया जाए और ख़लीफ़ाओं के सिलसिले की समानता के वादे का वचन-भंग किया जाए।

إلَّا الوعد فلينظروا بالتقویٰ والحیاء وهل فی شِرعة الإنصاف أن ینزل المسیح من السماء ویُخلَف وعدُ مماثلةِ سلسلة الاستخلاف۔ وإنّ تشابُهَ السلسلتین قد وجب بحُکم اللّٰہ الغیور کما هو مفهوم من لفظ ''کَمَا'' فی سورۃ النور۔

नि:संदेह स्वाभिमानी ख़ुदा के आदेश से इस दोनों सिलसिलों की समानता निश्चित है जैसा कि सूरह नूर में "कमा" (जैसे) के शब्द से यही भावार्थ प्रकट होता है।

الباب السابع
فی تفسیر
غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ

اعلم أسعدك الله أنّ الله قسّم اليهود والنصارٰى فی هذه السورة على ثلاثة أقسام فرغّبنا فی قسم منهم وبشّر بهٖ بفضل وإكرام وعلّمنا دعاءً النكون كمثل تلك الكرام من الانبياء والرسل العظام وبقى القسمان الآخران وهما المغضوب عليهم من اليهود والضالون من أهل الصلبان فأمرنا أن نعوذ به من أن نلحق بهم من الشقاوة والطغيان فظهر من هذه السورة أنّ أمرنا قد تُرك بين خوف ورجاء ونعمة وبلاء إمّا مشابهة بالانبياء وإما شُربُ

सातवाँ अध्याय
غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ
की व्याख्या

अल्लाह तआला तुझे सौभाग्य प्रदान करे, जान ले कि अल्लाह तआला ने इस सूरह में यहूदियों और ईसाईयों को तीन प्रकार से विभाजित किया है। उनमें से एक प्रकार की ओर उसने हमें प्रेरणा दिलाई और अपनी दया दृष्टि से उसकी प्राप्ति की ख़ुशख़बरी भी दी। और हमें एक दुआ सिखाई ताकि हम भी इन बुज़ुर्ग नबियों और सर्वश्रेष्ठ अवतारों के समान बन जाएँ। शेष जो दो प्रकार हैं वह यहूद की जिन पर प्रकोप हुआ और ईसाइयों की जो पथभ्रष्ट हुए उनकी हैं। अत: उसने हमें आदेश दिया है कि हम उसकी शरण मांगें कि हम दुर्भाग्य और पथभ्रष्टता के कारण उनके साथ सम्मिलित न हो जाएँ। अत: इस सूरह से यह स्पष्ट हो गया कि हमारा मामला भय और आशा, नेमत और आज़माइश के मध्य छोड़ दिया गया अर्थात या तो नबियों के साथ समानता पैदा करनी

مـن كأس الأشـقياء فاتقـوا الله الذى عظُـم وعيـده وجلّـت مواعيـده
ومـن لـم يكـن عـلى هـدى الانبيـاء مـن فضـل الله الـودود فقـد خيـف
عليـه أن يكـون كالنصـارى او اليهـود فاشـتدت الحاجـة إلى نمـوذج
النبيـين والمرسـلين ليدفـع نورهـم ظلمـات المغضـوب عليـهم
وشـبهات الضالـين ولذالـك وجـب ظهـور المسـيح الموعـود فى هـذا
الزمـان مـن هـذه الأمّـة لأنّ الضالـين قـد كثـروا فاقتضـت المسـيحَ
ضـرورةُ المقابـلة وإنكـم تـرون أفواجًـا مـن القسيسـين الذيـن هـم
الضالـون فأيـن المسـيح الذى يذبّـهم إن كنتـم تعلمـون أمـا ظهـر أثـر
الدعـاء أو تُر كتـم فى الليـلة الليـلاء أم عُلّمتـم دعـاء صـراط الذيـن
ليزيـد الحسـرة وتكونـوا كالمحرومـين فالحـق والحـق أقـول إن الله مـا

होगी और या फिर अभागों के प्याले से पीना होगा। अत: उस अल्लाह से डरो जिसकी चेतावनी बड़ी और वादे महान हैं। और जो व्यक्ति दयालु ख़ुदा की दया से नबियों के हिदायत के मार्ग पर नहीं चलेगा तो उसके संबंध में यह शंका है कि वह ईसाइयों या यहूदियों जैसा हो जाएगा। अत: नबियों और अवतारों के आदर्श की अत्यंत आवश्यकता है ताकि उनका प्रकाश मग्ज़ूब अलैहिम (जिन पर प्रकोप हुआ) समूह के अंधकार को और जो पथभ्रष्ट हुए उनके संदेह को दूर कर दे। इसलिए इस युग में इस उम्मत से मसीह मौऊद का प्रकटन आवश्यक हुआ क्योंकि पथभ्रष्टों की अधिकता हो गई थी इसलिए मुक़ाबले की आवश्यकता ने मसीह की माँग की और पादरियों की फौजें जो पथभ्रष्ट हैं, को तो तुम देख ही रहे हो। अत: यदि तुम जानते हो तो वह मसीह कहां है जिसने उनका मुकाबला करना था। क्या दुआ का कोई असर प्रकट नहीं हुआ या तुम्हें अंधकारमय रात में छोड़ दिया गया है। क्या तुम्हें صـراط الذيـن (सही मार्ग की दुआ) इसलिए सिखाई गई थी कि उससे तुम्हारी कामनाओं में वृद्धि हो और तुम अभागों जैसे हो जाओ। सच्चाई यह है

قسّم الفِرق على ثلاثة أقسام فى هذه السورة إلّا بعد أن أعدّ كل نموذج منهم فى هذه الامّة و إنكم ترون كثرة المغضوب عليهم و كثرة الضالين فأين الذى جاء على نموذج النبيين و المرسلين من السابقين ما لكم لا تُفكرون فى هذا و تمرّون غافلين ثم اعلم أن هذه السورة قد أخبرت عن المبدء و المعاد و أشارت إلى قوم هم آخر الأقوام و منتهى الفساد فإنها اختتمت على الضالين و فيه إشارة للمتدبّرين فإن الله ذكر هاتين الفرقتين فى آخر السورة و ما ذكر الدجّال المعهود تصريحًا و لا بالإشارة مع أن المقام كان يقتضى ذكر الدجّال فإن السورة أشارت فى قولها "الضَّالِّينَ" إلى آخر الفتن و أكبر الأهوال فلو كانت فتنة الدجّال

और मैं सत्य ही कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने इस सूरह में तीन समूहों में विभाजन, इस उम्मत में उनमें से प्रत्येक का नमूना निर्धारित करने के पश्चात ही किया और तुम "مغضوب علیھم" की अधिकता और ضالین गुमराहों की प्रचुरता को तो देख ही रहे हो। अत: कहां है वह जो पिछले नबियों और भेजे हुए रसूलों के आदर्श पर आया है? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम इस बात पर विचार नहीं करते और लापरवाहों के समान गुज़र जाते हो। फिर जान लो कि इस सूरह ने प्रारम्भ और लौटने के विषय में भी सूचना दी है और उस क़ौम की ओर भी संकेत किया है जो सबसे अंतिम क़ौम और उपद्रव की चरम सीमा है। यह सूरह الضَّآلِّيْنَ पर समाप्त हो जाती है और इसमें विचार करने वालों के लिए इशारा है। क्योंकि अल्लाह तआला ने इस सूरह के अंत में इन दोनों समूहों का वर्णन किया है। किंतु दज्जाल, जिस का वादा किया गया था, का वर्णन न स्पष्ट रूप से किया और न सांकेतिक रूप से। बावजूद इसके कि यह स्थान दज्जाल के वर्णन की माँग करता था। अत: इस सूरह ने अपने कथन जो الضَّآلِّيْنَ से, उपद्रवों में से अंतिम

فی علم اللّٰہ أکبر من ھذہ الفتنۃ لختم السورۃ علیھا لا علٰی ھذہ
الفرقۃ ففکروا فی أنفسکم۔ أنسی أصل الامر ربّنا ذو الجلال
وذکر الضالین فی مقامٍ کان واجبًا فیہ ذکر الدجّال وإن کان الامر
کما ھو زعم الجھّال لقال اللّٰہ فی ھذا المقام غیر المغضوب
علیھم ولا الدجّال وأنت تعلم أن اللّٰہ أراد فی ھذہ السورۃ أن یحث
الامّۃ علٰی طرق النبیّین ویحذرھم من طرق الکفرۃ الفجرۃ
فذکر قومًا أکمل لھم عطاءہ وأتمّ نعماءہ ووعد أنہ باعث من
ھذہ الامۃ من ھو یُشابہ النبیّین ویُضاھی المرسلین ثم ذکر
قومًا آخر تُرکوا فی الظلمات وجعل فتنتھم آخر الفتن وأعظم
الآفات وأمر أن یعوذ الناس کلھم بہ من ھذہ الفتن إلی یوم

उपद्रव और बड़ी-बड़ी तबाहियों की ओर इशारा किया है। यदि अल्लाह के ज्ञान में दज्जाल का उपद्रव इस उपद्रव से बड़ा था तो वह इस सूरह को दज्जाल के उपद्रव पर समाप्त करता न कि इस समूह الضَّآلِّيْنَ पर। अत: अपने दिलों में सोचो कि क्या हमारा प्रतापवान रब्ब असल बात को भूल गया और जहां दज्जाल का वर्णन ज़रूरी था वहां الضَّآلِّيْنَ का वर्णन कर दिया। यदि मामला इसी तरह है जैसा कि मूर्खों का विचार है तो फिर अल्लाह तआला को इस स्थान में غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَاالدَّجَّال अवश्य कहना चाहिए था। और तू जानता है कि इस सूरह में अल्लाह ने यह इरादा फ़रमाया कि वह उम्मत को नबियों के मार्गों के अनुसरण करने की प्रेरणा दिलाए और उनको काफिरों, पापियों के मार्गों से डराए। अत: उसने ऐसी क़ौम का वर्णन किया जिस पर उसने अपनी उदारता पूर्ण की और अपनी उदारताओं को चरम तक पहुंचाया। और यह वादा किया कि वह इस उम्मत से एक ऐसे व्यक्ति को अवतरित करेगा जो नबियों और मुरसलों से समानता रखता हो। फिर एक और क़ौम का वर्णन किया जिन्हें अंधेरों में छोड़ा गया और उनके उपद्रव को अंतिम उपद्रव और सबसे बड़ी आफत क़रार दिया और आदेश दिया कि सब लोग क़यामत के दिन तक इन उपद्रवों

القيامة و يتضرّعوا لدفعها فی الصلوات فی أوقاتها الخمسة و ما أشار فی هذا إلی الدجّال و فتنته العظیمة فأیّ دلیل أکبر من هذا علی إبطال هذه العقیدة ثم من مؤیّدات هذا البرهان أن اللّٰہ ذکر النصاری فی آخر القرآن کما ذکر فی أوّل الفرقان ففکر فی وفی وما هم إلّا النصاریٰ فعذ من علمائهم برب الناس و إن اللّٰہ کما ختم الفاتحة علی الضالین کذالك ختم القرآن علی النصرانیّین۔ و إن الضالین هم النصرانیون کما رُویَ عن نبیّنا فی الدر المنثور۔ وفی فتح الباری فلا تُعرض عن القول الثابت المشهور و مُسلّم الجمهور۔

से बचने के लिए अल्लाह की पनाह तलाश करें। और अपनी पाँचों समय की नमाज़ों में इस भयंकर उपद्रव को दूर करने के लिए अत्यंत विनम्रता से दुआएं करें। अल्लाह ने इस स्थान पर दज्जाल और उसके भयंकर उपद्रव की ओर इशारा नहीं किया। अत: इस आस्था के झूठे होने का इससे बढ़कर और क्या तर्क हो सकता है। इस तर्क के समर्थन में से एक बात यह भी है कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन के अंत में ईसाइयों का उसी प्रकार वर्णन किया है जिस प्रकार उसने पवित्र क़ुर्आन के आरम्भ में किया था। इसलिए तुम لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ (सूरह इख़लास) और الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (सूरह अन्नास) के शब्दों पर विचार करो। और यह ईसाई ही हैं। अत: इन पादरियों से رَبُّ النَّاسِ की शरण मांगों। जिस प्रकार अल्लाह ने सूरह फ़ातिहा को ضَآلِّيْنَ पर समाप्त किया है। उसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन को ईसाइयों पर समाप्त किया। वास्तव में ضَآلِّيْنَ (पथ भ्रष्ट) ही ईसाई हैं जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा दुर्रे मनसूर और फ़तहुल बारी में वर्णित है। अत: तू प्रमाणित, प्रख्यात और मुसलमानों के सर्वसम्मत्ति वाले कथन से मुंह न फेर।

الباب الثامن

فی تفسیر الفاتحة بقول کلّی

اعلم أن اللّٰہ تعالیٰ افتتح کتابہ بالحمد لا بالشّکر ولا بالثناء لأن الحمد أتمّ وأکمل منھما وأحاطھما بالاستیفاء ثم ذالک ردّ علی عبدة المخلوقین والأوثان فإنھم یحمدون طواغیتھم وینسبون إلیھا صفات الرحمٰن وفی الحمد إشارة أخری وھی أن اللّٰہ تبارک وتعالیٰ یقول أیّھا العباد اعرفونی بصفاتی وآمنوا بی لکمالاتی وانظروا إلی السماوات والأرضین ھل تجدون کمثلی ربّ العالمین وأرحم الراحمین ومالک یوم الدین ومع ذالک إشارة إلی أنّ إلٰھکم إلٰہٌ جمع

आठवाँ अध्याय

सूरह फ़ातिहा की व्याख्या के संबंध में व्यापक कथन

जान ले कि अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक का आरम्भ हम्द (स्तुति) से किया है शुक्र से नहीं किया और न प्रशंसा से। क्योंकि हम्द (स्तुति) का शब्द अन्य दो शब्दों से अधिक पूर्ण है और उन पर पूर्ण रूप से छाया हुआ है। फिर यह सृष्टि के उपासकों और मूर्तियों के पुजारियों का खंडन है। क्योंकि वे अपने झूठे (निर्मित) ख़ुदाओं की स्तुति करते हैं और उनकी ओर रहमान (दयालु) ख़ुदा की विशेषताओं को सम्बद्ध करते हैं। हम्द (स्तुति) में एक और इशारा भी है और वह यह कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: हे बन्दो! मुझे मेरी विशेषताओं से पहचानो और मेरी श्रेष्ठताओं के आधार पर मुझ पर ईमान लाओ और आसमानों और ज़मीनों पर निगाह डालो क्या तुम मेरे जैसा रब्बुल आलमीन (समस्त संसार का रब्ब) और अर्हमुर्राहिमीन (सबसे अधिक दयावान) और मालिके योमिद्दीन (और कर्म फल दिवस का मालिक) पाते हो। इसके अतिरिक्त इस ओर भी इशारा है कि तुम्हारा उपास्य वह उपास्य है जिसने अपने अस्तित्व में समस्त प्रकार की हम्द (स्तुतियों)

جميع أنواع الحمد فى ذاته وتفرّد فى سائر محاسنه وصفاته وإشارة إلى أنه تعالىٰ منزّه شانه عن كل نقص وحؤول حالة ولحوق وصمة كالمخلوقين بل هو الكامل المحمود ولا تحيطه الحدود وله الحمد فى الاولى والآخرة ومن الازل إلى أبد الآبدين ولذالك سمّى الله نبيّه أحمد وكذالك سَمّى به المسيح الموعود ليشير إلى ما تعمّد وإن الله كتب الحمد على رأس الفاتحة ثم أشار إلى الحمد فى آخر هذه السورة فإن آخرها لفظ الضَّآلِّينَ وهم النصارى الذين أعرضوا عن حمد الله وأعطوا حقه لاحدٍ من المخلوقين فإن حقيقة الضلالة هى ترك المحمود الذى يستحق الحمد والثناء كما فعل النصارى

को एकत्रित किया हुआ है और वह अपनी समस्त गुणों एवं विशेषताओं में अद्वितीय है। साथ ही इस ओर भी इशारा है कि अल्लाह तआला की शान प्रत्येक त्रुटी, प्रत्येक बदलाव और हर दोष के सन्निहित होने से पवित्र है जो सृष्टि में पाए जाते हैं। बल्कि वह पूर्ण महमूद (प्रशंसनीय) है और हदबन्दी से स्वतंत्र है। और प्रथम एवं अंतिम और प्रारम्भ से लेकर सदैव तक हम्द (स्तुति) उसी के लिए शोभनीय है। इसी कारण अल्लाह तआला ने अपने नबी (स.) का नाम अहमद रखा और इसी प्रकार मसीह मौऊद को भी इसी नाम (अहमद) से पुकारा ताकि वह अपने उद्देश्यों की ओर संकेत करे। अल्लाह ने अलफ़ातिहा के आरम्भ पर हम्द (स्तुति) को निर्धारित किया। फिर इस सूरह के अंत में हम्द (स्तुति) की ओर इशारा किया क्योंकि इसके अंत में शब्द الضَّآلِّيْنَ है और वे ईसाई हैं जिन्होंने अल्लाह की हम्द (स्तुति) से मुंह फेरा और उसका अधिकार सृष्टि के एक मनुष्य को दे दिया। अत: अंधकार की मूल वास्तविकता उस महमूद (प्रशंसनीय) ख़ुदा को त्यागना है जो प्रत्येक स्तुति एवं प्रशंसा के योग्य है जैसा कि ईसाइयों ने किया और अपने पास से एक अन्य महमूद (प्रशंसनीय) बना लिया और उसकी उपासना

ونحتوا من عندهم محمودًا آخر وبالغوا فی الاطراء واتبعوا
الاهواء وبعدوا من عین الحیاة وهلکوا کما یهلك الضال
فی الموماة وإن الیهود هلکوا فی أوّل أمرهم وباءوا بغضبٍ
مّن اللّٰہ القهّار والنصاریٰ سلکوا قلیلا ثم ضلّوا وفقدوا
الماء فماتوا فی فلاة من الاضطرار فحاصل هذا البیان أن
اللّٰہ خلق أحمدین فی صدر الإسلام وفی آخر الزمان وأشار
إلیهما بتکرار لفظ الحمد فی أوّل الفاتحة وفی آخرها لاهل
العرفان وفعل کذالك لیردّ علی النصرانیین وأنزل أحمدین
من السماء لیکونا کالجدارین لحمایة الاوّلین والآخرین
وهذا آخر ما أردنا فی هذا الباب بتوفیق اللّٰہ الراحم الوهاب

में अत्यधिक अतिशयोक्ति की और भौतिक इच्छाओं का अनुसरण किया और जीवन के चश्मे से दूर जा पड़े। और वे इस प्रकार नष्ट हो गए जिस प्रकार एक भटका हुआ व्यक्ति जंगल में नष्ट हो जाता है और यहूदी तो अपने मामले के प्रारम्भ में ही नष्ट हो गए और अत्यंत शक्तिशाली ख़ुदा के प्रकोप के पात्र बन गए। ईसाई कुछ क़दम चले फिर पथभ्रष्ट हो गए। उन्होंने अध्यात्मिक पानी खो दिया और दरिद्रगी की अवस्था में बयाबान में मर गए। निष्कर्ष यह कि अल्लाह ने दो अहमद पैदा किए एक इस्लाम के आरम्भ में और एक अंतिम युग में। और अल्लाह तआला ने सत्याभिलाषियों के लिए सूरह फ़ातिहा के प्रारम्भ में और इसके अंत में अल्हम्द का शाब्दिक एवं आर्थिक पुनरावृत्ति करके इन दोनों की ओर इशारा किया है और ख़ुदा ने ऐसा ईसाइयों के खण्डन के लिए किया है और उसने दो अहमद आसमान से अवतरित किए ताकि वे दोनों प्रथम एवं अंतिम के समर्थन के लिए दो दीवारों के समान हो जाएँ। यह अंतिम बात है जिसका हमने उदार और कृपालु ख़ुदा के सामर्थ्य से इस अध्याय में इरादा किया था। इस तौफ़ीक़ एवं ख़ुदा की दयालुता पर अल्लाह का शुक्र है और यह उसकी कृपा है कि हमारा वादा पूरा हुआ। यदि ख़ुदा तआला की सहायता साथ न होती तो हम

فالحمد لله على هذا التوفيق والرفاء و كان من فضله أنّ عَهْدنَا قُرِنَ بالوفاء وما كان لنا أن نكتب حرفًا لولا عون حضرة الكبرياء هو الذى أَرَى الآيات وأنزل البيّنات وعصم قلمى و كلمى من الخطاء وحفظ عرضى من الاعداء وإنه تبوّء منزلى وتجلّى علىّ وحضر مَحْفلى واجتبانى لخلافته وأبقى مرعاى على صرافته وزكّانى فاحسن تزكيتى وربّانى فبالغ فى تربيتى وأنبتنى نباتا حسنًا وتجلّى علىّ وشغفنى حُبًّا حتى أنى فرغتُ من عداوة الناس ومحبتهم ومدح الخلق ومذمتهم والآن سواء لى من عاد إلىّ أو عادا و راد من ضياعى أو رادا وصارت الدنيا فى عينى كجارية بُدءت واسودّ وجهها

एक शब्द भी न लिख पाते। वही हस्ती (ख़ुदा) है जिसने निशानात दिखाए और खुले खुले तर्क अवतरित किए। और मेरे क़लम और मेरे वर्णन को त्रुटी से सुरक्षित रखा। और शत्रुओं से मेरे सम्मान की सुरक्षा की। उसने मेरे घर में निवास किया और मुझ पर प्रकट हुआ और मेरी महफ़िल में आया और मुझे अपनी ख़िलाफ़त के लिए निर्वाचित किया। मेरी चरागाह को अपने लिए विशिष्ट किया। मेरा शुद्धिकरण किया और ख़ूब किया। मेरे प्रशिक्षण को चरम तक पहुँचा दिया और मेरा उत्तम रूप से पालन पोषण किया। वह मुझ पर प्रकट हुआ और उसने मोहब्बत की दृष्टि से मेरे दिल में घर कर लिया। यहां तक कि मैं लोगों की दुश्मनी और उनकी मोहब्बत से और लोगों द्वारा दिए गए कष्टों एवं तिरस्कार से निःस्पृह हो गया। अब मेरे लिए समान है कि कोई मेरी ओर रुख करे या मुझसे शत्रुता करे। मेरी जागीर मांगे या मुझ पर पत्थर फेंके। और मेरी निगाहों में यह दुनिया ऐसी हो गई है जैसे एक चेचक ग्रस्त लौंडी जिसका चेहरा काला हो और उसके हुस्न की मुखाकृति नष्ट हो गई हो सीधी नाक चपटी हो गयी हो। और उसके लाल गालों पर काले धब्बे पड़ गए हों। अल्लाह की ताक़त से मैंने इस संसार की मोह-

وصفوف الحسن تقوّضت وشَمَمُ الانف بالفطس تبدّل ولهب الخدود إلى النمش انتقل فنجوتُ بحول الله من سطوتها وسلطانها وعُصِمتُ من صولة غولها وشيطانها وخرجتُ من قومٍ يتركون الاصل ويطلبون الفرع ويُضِيعون الورع لهذه الدنيا ويجبئون الزرع ويريدون أن يحتكأ قولهم فى قلوب الناس مع أنهم ما خلصوا من الادناس وكيف يُترقّب الماء المعين من قربةٍ قُضِئت والخلوص والدينُ من قريحةٍ فسدت وكيف يُعَدُّ الاسير كمُطلَقٍ من الإسار وكيف يدخل المُقرف فى الاحرار وكيف يتدا كأ الناس عليه وهو خبيث وخبيث ما يخرج من شفتيه وإن قلمى

माया से मुक्ति प्राप्त की। और उसके देव और शैतान के हमले से बचाया गया। और उस क़ौम से बाहर निकल गया जो मूल को छोड़ती और शाख की तलाश करती है। वे इस संसार के लिए सयंमता को नष्ट करते और अनिर्मित खेती को बेच देते हैं। वे चाहते हैं कि उनकी बातें लोगों के दिलों में दृढ़ हो जाएं बावजूद इसके कि वे गंदगी से पवित्र नहीं होते। एक बदबूदार मटके से स्वच्छ जल की, और गंदी तबीयत वाले से धार्मिकता एवं नैतिकता की आशा कैसे की जा सकती है। एक क़ैदी को क़ैद से आज़ाद व्यक्ति के समान कैसे समझा जा सकता है। एक गन्दी प्रकृति वाले को पवित्र (लोगों) में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है और लोग उसके इर्द-गिर्द किस प्रकार इकट्ठे हो सकते हैं। वह खुद भी अपवित्र है और जो उसके मुंह से निकलता है वह भी अपवित्र है। मेरे क़लम को भौतिक इच्छाओं की अपवित्रताओं से दोषमुक्त कर दिया गया है और मौला (ख़ुदा) की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए तराशा गया है और मेरे क़लम में पवित्र एवं सदैव रहने वाला वह नक्श है जो उच्च घोड़ों के खुरों के नक्श में भी नहीं। हम कमाल के घुड़सवार हैं घोड़ों की पीठों से गिरने वाले नहीं। हम

بُـرّءِ مـن أدنـاس الهـوى وبُـرِىَ لإرضـاء المـولىٰ وإن لِيراعـى أثـرُ
مـن الباقيـات الصالحـات ولا كأثـر سـنابك المسـوّمات ونحـن
كُمـاةٌ لا نـزلّ عـن صهـوات المطايـا وإنّـا مـع ربنـا إلىٰ حلـول
المنايـا وإن خيلنـا تجـول عـلى العـدا كالبـازى عـلى العصفـور أو
كالاجـدل عـلى الفـار المـذء ور رويـد أعدائـى بعـض الدعـاوى
ولا تدّعـوا الشـبع مـع البطـن الخـاوى اتقومـون للحـرب
برمـاح أشـرعت ولا تـرون إلى حُجُبكـم وإلى سلاسـل ثُقّلـت
تـرون غمـرات النـدم ثـم تقتحمونهـا وتجـدون غمّـاء الذلّ ثـم
تزورونهـا وإنّمـا مثلكـم كمثـل عنـزٍ تـأكل تـارة مـن حشـيشٍ
وتـارة مـن كلا ولا يطيـع الراعـى مـن غـير خـلا وكل مـا هـو

मृत्यु के आने तक अपने रब्ब के साथ हैं। हमारे घोड़े दुश्मनों पर इस प्रकार झपटते हैं जैसे बाज़ चिड़िया पर या शिकरा भयभीत चूहे पर। हे मेरे शत्रुओ! अपने कुछ दावों से रुक जाओ और खाली पेट होकर पेट भरे होने का दावा न करो। क्या तुम भालों को ताने हुए लड़ाई के लिए खड़े हो रहे हो और अपने पर्दों और पहनाई गई भारी ज़ंज़ीरों को नहीं देखते। बार-बार अपमान देखते हो फिर भी उनमें घुसते चले जाते हो, अपमान और तिरस्कार में ग्रस्त हो फिर भी तुम उसकी ओर जाते हो। तुम्हारा उदाहरण उस बकरी के समान है जो कभी सूखी हुई और कभी ताज़ा घास खाती है और बग़ावत के बिना चरवाहे का आज्ञापालन नहीं करती। और वह ज्ञान जो तुम्हारे पास है इकट्ठा किए हुए उस ढेर के समान है जिसे उड़ा कर साफ़ न किया गया हो और जिसमें बैलों का गोबर और अन्य हानिकारक वस्तुएं मिली हुई हों। फिर भी तुम कहते हो कि हमें आसमान से किसी **निर्णायक** की आवश्यकता नहीं। यह तो निपट दुर्भाग्य है। इसलिए हे बुद्धिमानो! विचार विमर्श करो। अनुभूति विज्ञान तथा अवलोकन के समान मुझे यह निश्चित ज्ञान है कि मैं अपने रब्ब की ओर से पूर्ण हिदायत एवं निशानात देकर भेजा गया हूं और हज़रत

عند كم من العلم فليس هو إلّا كالكدوس المدوس الذى لم يُذرّ وخالطه روث الفدادين وغيرها مما ضرّ ثم تقولون إنّا لا نحتاج إلى حَكَمٍ من السماء وما هى إلّا شقوة ففكروا يا أهل الآراء وإنى أعلم كعلم المحسوسات والبديهيات أنى أُرسلتُ من ربى بالهدايات والآيات وقد أُوحى إلىّ إلىٰ مُدّة هى مدّة وحى خاتم النبيين و كُلّمتُ قبل أن أزنأ من الاربعين إلى أن زنأتُ للستين وهل يجوز تكذيب رجل ضاهت مدته مدة نبيّنا المصطفٰى وإن الله قد جعل تلك المدة دليلا على صدق رسوله المجتبٰى وسمعتُ إنكاره من بعض الناس وما قبلوا هذا الدليل بلمّة من الوسواس الخنّاس فاكتلات عينى

ख़ातमुन्नबिय्यीन की वह्यी की अवधि के समान अवधि अर्थात् (23) वर्ष तक मुझ पर वह्यी अवतरित हुई और 40 वर्ष की आयु से कुछ पूर्व से लेकर लगभग 60 वर्ष तक मुझे इलहाम से सुशोभित किया गया। तो क्या वह व्यक्ति जिसकी वह्यी की अवधि हमारे नबी मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अवधि जितनी हो उसका इन्कार करना उचित है? अल्लाह तआला ने इतनी (23 वर्षीय) अवधि को अपने रसूल-ए-मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई का प्रमाण बनाया है। मैंने कुछ लोगों से इस तर्क का इन्कार सुना है। उन्होंने शैतानी विचारों के अंतर्गत इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। (उन के इस इंकार के दु:साहस के कारण) तो मैं रात भर सो न सका और मेरी आंखों से आंसू के झरने बह निकले तो मेरा परवरदिगार (ख़ुदा) अपनी असीम कृपा के साथ मुझसे सम्बोधित हुआ और फ़रमाया कि (इन लोगों से) "कह दो कि अल्लाह की हिदायत ही वास्तविक हिदायत है"। अत: हम्द (स्तुति) उसी के लिए शोभनीय है और वही मेरा मौला और वही मेरा रब्ब है इस संसार में भी और उस दिन भी, जब प्रत्येक जान को प्रतिफ़ल के लिए इकट्ठा किया जाएगा। हे मेरे रब्ब! मेरे

طول لیلی وجرت من عینی عین سیلی۔ فکلّمنی ربی برحمته العظمٰی وقال" قل انّ ھدی اللّٰہ ھو الھدیٰ" فله الحمد وھو المولٰی وھو ربّی فی ھذہ وفی یومٍ تُحشرُ کُلّ نفسٍ لتُجزَی۔ ربّ انزل علی قلبی واظھر من جیبی بعد سلبی واملا بنور العرفان فؤادی رب أنت مُرادی فاتنی مرادی ولا تُمتنی موت الکلاب بوجھك یا ربّ الارباب رب إنی اخترتك فاخترنی وانظر إلی قلبی واحضرنی فإنك علیم الاسرار۔ وخبیر بما یُکتَم من الاغیار۔ ربّ إن کنتَ تعلمُ أن أعدائی ھم الصادقون المخلصون فأھلکنی کما تُھْلَكُ الکذّابون وإن کنتَ تعلم أنی منك ومن حضرتك۔ فقم لنُصرتی فإنی أحتاج إلی نصرتك۔ ولا

दिल पर उतर और मेरी फ़ना के पश्चात मेरी आन्तरिकता से प्रकट हो। मेरे दिल को नूर-ए-इरफ़ान से भर दे। हे मेरे रब्ब! तू ही मेरी मुराद (अभिलाषा) है बस तू मुझे मेरी मुराद प्रदान कर! हे समस्त उपास्यों के रब्ब! तेरे मुंह की सौगंध मुझे कुत्तों की मौत न मारना। हे मेरे रब्ब! मैंने तुझे चुन लिया तू मुझे चुन ले, मेरे दिल की ओर प्रेम पूर्वक दृष्टि कर और मेरे पास आ। अत: तू ही रहस्यों को जानने वाला है और उन समस्त विषयों से ख़ूब परिचित है जो दूसरों से गुप्त रखे जाते हैं। हे मेरे रब्ब! यदि तू जानता है कि मेरे शत्रु ही सच्चे और पवित्र हैं तो मुझे उसी प्रकार तबाह कर जिस प्रकार झूठे तबाह किए जाते हैं। और यदि तू जानता है कि मैं तेरी तरफ़ से और तेरी ओर से हूं, तो मेरी सहायता के लिए उठ खड़ा हो क्योंकि मैं तेरी सहायता का मोहताज हूं। और मेरा मामला उन शत्रुओं के सुपुर्द न कर जो मुझ पर उपहास करते हुए गुज़रते हैं। तू शत्रुओं एवं कपटियों से मेरी सुरक्षा कर। तू ही मेरा मार्ग एवं राहत है। मेरी जन्नत और मेरी ढाल है। अत: मेरे विषय में मेरी सहायता कर। और मेरी प्रार्थना एवं विलाप को सुन। और खैरुल मुरसलीन और इमामुल मुत्तक़ीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

تُفوّض أمری إلی أعداء یمرّون علیّ مستهزئین واحفظنی من المعادین والماکرین إنک أنت راحی وراحتی وجَنّتی وجُنّتی فانصرنی فی أمری واسمع بکائی ورُنّتی وصلّ علی محمدٍ خیر المرسلین و إمام المتّقین وھب لہ مراتب ما وھبتَ لغیرہ من النبیین ربّ اعطہ ما أردتَّ أن تُعطینی من النعماء۔ ثم اغفر لی بوجھک وأنت أرحم الرحماء والحمد لک علی أن ھذا الکتاب قد طُبع بفضلک فی مدۃ عدۃ العین فی یوم الجمعۃ وفی شھرٍ مبارکٍ بین العیدین رب اجعلہ مُبارکًا ونافعًا للطُلّاب۔ وھادیًا إلی طریق الصواب بفضلک یا مُجیبَ الداعین۔ آمین ثم آمین۔ وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین۔

पर दुरूद भेज और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह पद प्रदान कर जो तूने नबियों में से किसी अन्य को प्रदान नहीं किए। हे मेरे रब्ब! जिन नेअमतों के मुझे प्रदान करने का तूने इरादा किया है वे समस्त नेअमतें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान कर दे। फिर अपनी कृपा से मेरा उद्धार कर क्योंकि तू अत्यंत कृपालु है। समस्त प्रशंसाएँ तेरे लिए हैं कि तेरी कृपा से ही यह पुस्तक शब्द "एन" की गणना (अर्थात 70 दिनों) की अवधि में दो ईदों के मध्य, पवित्र महीने में जुम्मे के दिन प्रकाशित हुई। हे मेरे रब्ब! तू इसे अपनी कृपा से सतयाभिलाषियों के लिए शुभ, लाभदायक एवं सीधे मार्ग का अनुसरण करने वाला बना दे। हे दुआ स्वीकार करने वालों की दुआ स्वीकार करने वाले! आमीन सुम्मा आमीन। हमारी अंतिम दुआ यही है कि समस्त हम्द उस अल्लाह के लिए है जो समस्त ब्रह्माण्ड का रब्ब है।

ख़ुदा की कृपा से बड़ा चमत्कार प्रकट हुआ

हज़ार हज़ार शुक्र उस सामर्थ्यवान अद्वितीय ख़ुदा का है जिसने इस महान कार्य में मुझको विजय प्रदान की और बावजूद इसके कि इन 70 दिनों में कई प्रकार की रोकें सामने आईं। कई बार मैं अत्यंत बीमार हुआ और कुछ संबंधी बीमार रहे परन्तु फिर भी यह तफ़सीर अपनी पूर्णता को पहुंच गई। जो व्यक्ति इस बात को सोचेगा कि यह वह तफ़सीर है जो हज़ारों विरोधियों को इसी विषय के लिए आमंत्रित करके मुक़ाबले पर लिखी गई है वह अवश्य इसको एक बड़ा चमत्कार स्वीकार करेगा। भला मैं पूछता हूँ कि यदि यह चमत्कार नहीं तो फिर किसने ऐसे युद्ध के समय कि जब विरोधी विद्वानों को ग़ैरत वाले शब्दों के साथ बुलाया गया था, तफ़सीर लिखने से उनको रोक दिया और किसने ऐसे व्यक्ति अर्थात इस विनीत को जो विरोधी विद्वानों के ख्याल में एक मूर्ख है जो उनके विचार में अरबी भाषा का एक सीग: (विभक्ति) भी सही से नहीं जानता ऐसी लाजवाब और उत्कृष्ट एवं विस्तृत तफ़सीर लिखने पर बावजूद रोगों और शारीरिक कष्टों के सामर्थ्यवान कर दिया गया कि यदि विरोधी विद्वान प्रयास करते-करते किसी मानसिक बीमारी का भी निशाना हो जाते तब भी उसके समान तफ़सीर न लिख सकते और यदि हमारे विरोधी विद्वानों के सामर्थ्य में होता या ख़ुदा उनकी सहायता करता तो कम से कम इस समय हज़ारों तफ़सीरें उनकी ओर से प्रकाशित होनी चाहिए थीं किन्तु अब उनके पास इस बात का क्या उत्तर है कि हमने इस 'एक दूसरे के मुक़ाबले पर तफ़्सीर लिखने को' निर्णय का आधार ठहरा कर विरोधी विद्वानों को निमंत्रण दिया था और सत्तर दिन की अवधि थी जो कुछ कम न थी और मैं अकेला और वे हज़ारों अरबी ज्ञाता और विद्वान कहलाने वाले थे तब भी वे तफ़सीर लिखने से वंचित रहे और यदि वे तफ़सीर लिखते और सूरह फ़ातिहा से मेरे विरोध में प्रमाण प्रस्तुत

करते तो एक दुनिया उनकी ओर उलट पड़ती। अत: वह कौन सी अदृश्य शक्ति है जिसने हज़ारों के हाथों को बांध दिया और बुद्धियों को मंद कर दिया और ज्ञान एवं विवेक को छीन लिया और सूरह फ़ातिहा की गवाही से मेरी सच्चाई पर मुहर लगा दी और उनके दिलों को एक और मोहर से अज्ञानी एवं मूर्ख कर दिया। हज़ारों के समक्ष उनके गंदगी से लिप्त वस्त्र प्रकट किए और मुझ ऐसा सफ़ेद अमुल्य वस्त्र पहना दिया जो बर्फ के समान चमकता था। और फिर मुझे एक सम्माननीय कुर्सी पर बिठा दिया और सूरह फ़ातिहा द्वारा **एक सम्मान की उपाधि** मुझे प्रदान हुई। वह क्या है اَنعَمْتَ عَلَيْهِم और ख़ुदा की कृपा एवं दया को देखो कि तफ़सीर के लिखने में दोनों समूह के लिए चार अध्याय की शर्त थी अर्थात यह कि 70 दिन की अवधि तक चार अध्याय लिखें किंतु वे लोग बावजूद हज़ारों होने के 1 अध्याय भी न लिख सके और मुझ से दयालु ख़ुदा ने बजाए 4 अध्याय लिखवाने के साढ़े बारह अध्याय लिखवा दिए। अब मैं विरोधी विद्वानों से पूछना चाहता हूं कि क्या यह चमत्कार नहीं है और इसका क्या कारण है कि चमत्कार न हो। कोई इंसान अपनी शक्ति अनुसार अपने लिए अपमान स्वीकार नहीं करता फिर यदि तफ़सीर लिखना विरोधी मौलवियों के सामर्थ्य में था तो वे क्यों न लिख सके। क्या ये शब्द जो मेरी ओर से इश्तिहार में प्रकाशित हुए थे कि जो समूह अब एक-दूसरे के मुक़ाबले पर 70 दिनों में तफ़सीर नहीं लिखेगा वह झूठा समझा जाएगा, ये ऐसे शब्द नहीं हैं जो सम्माननीय व्यक्ति को इस ओर प्रेरित करते हैं कि सब कर्म अपने पर हराम करके मुक़ाबले पर इस कार्य को पूर्ण करे ताकि झूठा न कहलाए। लेकिन क्योंकर मुक़ाबला कर सकते? ख़ुदा का आदेश कैसे टल सकता कि☆ كَتَبَ اللهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ख़ुदा ने हमेशा के लिए जब तक कि दुनिया का अंत हो यह हुज्जत उन पर पूर्ण करनी थी बावजूद यह कि ज्ञान एवं योग्यता की यह परिस्तिथि है कि एक व्यक्ति के समक्ष

☆ अनुवाद - अल्लाह ने लिख छोड़ा है कि अवश्य मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे-
(सूर: अल मुजादला- 58/22)

हज़ारों उनके विद्वान एवं ज्ञानी कहलाने वाले दम नहीं मार सकते फिर भी काफ़िर कहने पर दिलेर हैं क्या अनिवार्य न था कि पहले ज्ञान में परिपक्व होते फिर काफ़िर कहते। जिन लोगों के ज्ञान की यह हालत है कि हज़ारों मिल कर भी एक व्यक्ति का मुक़ाबला न कर सके, चार अध्याय की तफ़सीर न लिख सके उनके भरोसे पर एक मामूर मिनल्लाह ऐसे (ख़ुदा की ओर से आने वाले) का विरोध करना जो निशान पर निशान दिखला रहा है बड़े अभागों का कार्य है। अंतत: एक ओर हज़ार शुक्र का स्थान है कि इस अवसर पर एक **भविष्यवाणी** आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी पूरी हुई और वह यह है कि इस 70 दिन की अवधि में कुछ रोगों में ग्रस्त होने के कारण और कुछ अन्य रोगों के कारण बहुत से दिन तफ़सीर लिखने से अत्यंत असमर्थता रही, उन नमाज़ों को जमा हो सकती थीं, जमा करनी पड़ीं और इस से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह भविष्यवाणी पूर्ण हुई जो दुर्रे मंसूर और फ़तह-ए-बारी एवं तफ़सीर इब्ने कसीर इत्यादि पुस्तकों में है कि تُجْمَعُ لَهُ الصَّلٰوةُ अर्थात् मसीह मौऊद के लिए नमाज़ जमा की जाएगी। अब हमारे विरोधी विद्वान इस बात को बताएं कि क्या वे इस बात को मानते हैं या नहीं कि यह भविष्यवाणी पूर्ण होकर **मसीह मौऊद** के वह निशान भी प्रकटन में आ गए और यदि नहीं मानते तो कोई उदाहरण प्रस्तुत करें कि किसी ने मसीह मौऊद का दावा कर के दो महीने तक नमाज़ जमा की हों या बिना दावा ही उदाहरण प्रस्तुत करो।

وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى

विज्ञापनकर्ता- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

20 फ़रवरी 1901 ई०

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक और भविष्यवाणी का पूर्ण होना

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن الله يبعث لهذه الأمة على رأس كل مائة سنة من يجدد لها دينها

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निश्चित रूप से ख़ुदा तआला इस उम्मत के लिए तमाम सदियों के आरम्भ में एक व्यक्ति (अर्थात मसीह मौऊद) को अवतरित करेगा जो इस उम्मत के लिए धर्म का नवीकरण करेगा। यह पवित्र हदीस लगभग निरन्तरता की श्रेणी एवं सर्वसम्मिति के स्तर को पहुंची हुई है। यद्यपि व्याख्याकार, मुहद्दिस एवं सूफ़ी इसके कुछ ही अर्थ करें किंतु इसका अर्थ जो ख़ुदा ने मुझे समझाया है वह यह है कि यह हदीस वास्तव में मसीह मौऊद के विषय में है क्योंकि जितने मुजद्दिद (नवीकरणकर्ता) पहले गुज़रे या भविष्य में हों वे सब ज़न्नी (सन्देहयुक्त) हैं और संक्षिप्त रूप से हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि प्रत्येक सदी के आरम्भ में कोई न कोई मुजद्दिद हुआ हो किंतु विस्तृत एवं निश्चित रूप से हम नहीं कह सकते कि इतनी सदियाँ जो बीत गईं, कौन-कौन मुजद्दिद हुए? ऐसा क्यों, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुजद्दिदों की कोई सूची नहीं दी किंतु हम मसीह मौऊद के विषय में विश्वसनीय एवं नितांत प्रमाण और सही राय से कह सकते हैं कि वह मुजद्दिद, जिसका आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुक़ाबले पर वर्णन किया है कि वह उम्मत कैसे विनष्ट हो सकती है जिसके प्रारम्भ में मैं हूँ और अंत में मसीह मौऊद है और मध्य युग गुमराही का युग है, वास्तव में मसीह मौऊद है जिसके अवतरण का यह निशान बताया है कि वह उस युग में अवतरित होगा जिस युग में समस्त प्रकार की शताब्दियों के सिर (आरम्भ) एकत्रित हो जाएंगे। अत: हम जो विचार की दृष्टि से देखते

हैं तो वह युग यही युग है जिसमें मुज्द्दिद-ए-आज़म (महान नवीकरणकर्ता) अवतरित हुआ और समस्त शताब्दियों के सिर उसने लिए अर्थात 1318 हिजरी और 1901 ई. और 1307 फ़सली और 1957 विक्रमी तथा समस्त शताब्दियों की माँ जो सातवां हज़ार है, प्रकट हुआ। अत: इन शताब्दियों के संकलन से على رأس كل مائة سنة (अर्थात प्रत्येक प्रकार की शताब्दी के आरम्भ पर) की भविष्यवाणी पूर्ण हुई और सूरज-चाँद ग्रहण की हदीस एवं पवित्र क़ुर्आन की आयत وَآخَرِينَ مِنْهُمْ इसी की सत्यापनकर्ता हैं। अत: वह मसीह मौऊद, मुजद्दिद मौहूद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी हैं। इस पर अल्लाह की भूरि-भूरि प्रशंसा

लेखक

मुहम्मद सिराजुल हक़्क़ नौमानी